इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

इतिहास पुरुष अमर विभूति : ठाकुर रामसिंह स्मृति श्रद्धाञ्जलि विशेषांक

इतिहासः कुशाभासः सूकरास्यो महोदरः।
अक्षसूत्रं घटं विभ्रत्पंकजाभरणान्वितः ॥

मार्गदर्शक	:	डॉ० शिवाजी सिंह, चेतराम, इरविन खन्ना
सम्पादक	:	डॉ० विद्या चन्द ठाकुर
सह सम्पादक	:	चेतराम गर्ग
सम्पादक मण्डल	:	डॉ० रमेश शर्मा, डॉ०ओम प्रकाश शर्मा प्रो० सतीश चन्द्र
आवरण पृष्ठ सज्जा	:	अश्विनी शर्मा (अश्वा आर्ट)
टंकण	:	अश्वनी कालिया
सम्पादकीय कार्यालय	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान, नेरी, गांव-नेरी, डाकघर-खगल जिला-हमीरपुर-१७७००१(हि०प्र०) दूरभाष : ०१९७२-२०३०४४
मूल्य	:	प्रति अंक -१५.०० रुपये, वार्षिक - ६०.०० रुपये विशेषांक-५०.०० रूपये ***E-mail : itihasdivakar@yahoo.com***

सम्पादकीय

लक्ष्य संधान का ही ध्यान

संसार *में बहुत लोग होते हैं जो इतिहास पढ़ते हैं। कुछ लोग होते हैं जो इतिहास लिखते हैं, लेकिन ऐसे लोग बहुत विरले होते हैं जो इतिहास बनाते हैं। इन विरले लोगों में ठाकुर राम सिंह जी एक हैं। भारतवर्ष का इतिहास सत्य तथ्यों के साथ प्रकाश में लाना, ठाकुर राम सिंह जी का परम लक्ष्य रहा। इसके लिए देश भर में निरन्तर प्रवास करते रहे। लक्ष्य पूर्ति के ध्येय से जीवन पर्यन्त पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कभी यहां तो कभी वहां चलते रहे, चलते रहे! कभी थके नहीं और असंख्य कार्यकर्ताओं एवं विद्वानों को लक्ष्य पूर्ति की अदम्य प्रेरणा देकर अपने यशस्वी संकल्प का विस्तार कर के कलियुगाब्द 5112, विक्रमी संवत् 2067, भाद्रपद सौर मास प्रविष्टे 22 एवं भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी तदनुसार 6 सितम्बर, 2010 को पंचतत्त्व में विलीन हो कर ब्रह्मलीन हो गये।*

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में 46 वर्षों तक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अनूठी भूमिका निभाने के उपरान्त सन् 1988 में ठाकुर जी को भारतीय इतिहास संकलन की महत्त्वाकांक्षी योजना को समुचित दिशा प्रदान करने की जिम्मेवारी मिली। सन् 1992 में वे अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए और सन् 2002 तक वे इस पद पर रहे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व निभाते हुए ठाकुर राम सिंह जी ने विदेशी आक्रान्ताओं के निर्देशन में लिखे भारतीय इतिहास की भ्रांतियों को दूर कर के राष्ट्रीय इतिहास की वैभवशाली समृद्ध परम्परा को प्रकाश में लाने के लिए सुव्यवस्थित कार्य योजनाएं बनाईं, जिसके परिणामस्वरूप सारे देश के जनमानस का ध्यान राष्ट्र की समृद्ध ऐतिहासिक परम्पराओं की ओर आकृष्ट हुआ। देश के सभी प्रान्तों में इतिहास संकलन समितियां गठित हुईं। इन समितियों के माध्यम से आर्य भारत के मूल निवासी हैं, महाकल्प–कल्प–मन्वन्तर एवं चतुर्युगी व्यवस्था आदि काल आधारित भारतीय वैज्ञानिक कालगणना, वर्ष प्रतिपदा, कलियुगाब्द की 52वीं शताब्दी इत्यादि राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों से अवगत करवाने के देशव्यापी कार्य आपकी सुदृढ़ निष्ठा और गहन अनुभव से ही सफल हो पाए हैं। इतिहास संकलन योजना पर प्रकाश डालते हुए ठाकुर जी कहते थे कि अपनी मातृभूमि, पुण्य भूमि भारत की प्राचीनता और गौरवमय अतीत को प्रकाश में ला कर विदेशियों तथा उनके संकेत एवं अनुसरण पर कुछ भारतीय इतिहासकारों द्वारा विकृत किए गए भारत के इतिहास को भारतीय ऐतिहासिक स्रोतों, लोकश्रुतियों, नवीन पुरातात्त्विक खोजों और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लिखी गई शोध सामग्री का संकलन कर के पुनः लिखने की आवश्यकता है। केवल

पराजय की ही कहानियां न कहे, अपितु उसमें गौरवशाली तथ्यों का उल्लेख प्रमुखता से हो तथा जिससे इतिहास राष्ट्रमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके और जिसे पढ़ कर हम गौरव से अपना सर ऊँचा कर के कह सकें कि भारत विश्व का गुरु रहा है एवं आज भी इसमें विश्व गुरु बनने का पूर्ण सामर्थ्य है।

ठाकुर राम सिंह जी के कटिबद्ध संकल्प के फलस्वरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रान्त कार्यवाह एवं भारतीय इतिहास संकलन समिति, हिमाचल प्रदेश के मार्गदर्शक श्री चेतराम जी के सुनियोजित प्रयासों से हमीरपुर जिला के नेरी गांव में ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान की स्थापना हुई है। इस शोध संस्थान के माध्यम से ठाकुर जी द्वारा वर्तमान श्वेत वाराह कल्प के 197 करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन की योजना तैयार की गई है। इसी निमित्त ठाकुर जी के मार्ग निर्देशन में त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका इतिहास दिवाकर का प्रकाशन आरम्भ हुआ है।

लक्ष्य संधान के प्रति पूरा ध्यान देना ठाकुर जी के विलक्षण व्यक्तित्व की विशेषता थी। ठाकुर जी से सान्निध्य प्राप्त कृतज्ञ जनों के संस्मरण और अनुभूतियां प्रस्तुत श्रद्धांजलि स्मृति विशेषांक में सम्मिलित हैं। इनमें ठाकुर जी के लक्ष्य संधान के प्रति एकाग्र ध्यान के प्रसंग अनेक संदर्भों में व्यक्त हुए हैं। इस सम्बन्ध में यहां भी कुछ प्रसंग उल्लेखनीय हैं। कलियुगाब्द 5104, वैशाख मास (मई, 2002) में वैवस्वत मन्वन्तर में मानव सृष्टि और देवत्व पर आधारित समाज व्यवस्था विषय पर कुल्लू में राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन हुआ था। राष्ट्रीय परिसंवाद के दो दिन पूर्व ठाकुर जी एकाएक गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गए जिससे वे कभी-कभी अर्धचेतना अवस्था में चले जाते थे। देश भर के विद्वान परिसंवाद में भाग लेने कुल्लू आ पहुंचे थे। सभी चिन्तित थे। प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम जी उनकी सेवा, चिकित्सा की सतर्कता से देखरेख कर रहे थे। श्री चेतराम जी बीच-बीच में जब ठाकुर जी से दवाई आदि के बारे में पूछते तो वे पूछी गई बात का जवाब न देकर अस्पष्ट सी वाणी में परिसंवाद के बारे में कह देते थे। यही उनका लक्ष्य संधान था। राष्ट्रीय परिसंवाद के उद्घाटन समारोह में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो0 प्रेम कुमार धूमल मुख्य अतिथि थे, लेकिन परिसंवाद पर शंका के बादल छा गए थे। ईश्वरीय कृपा से ऐसा चमत्कार हुआ कि परिसंवाद आरम्भ होने की पूर्व रात्रि में ठाकुर जी के स्वास्थ्य में अप्रत्याशित सुधार हुआ और वे परिसंवाद के उद्घाटन के समय मंच पर विराजमान होने में समर्थ हुए। इस अवसर पर वे बोल नहीं पाए, परन्तु उनकी उपस्थिति से सभी गौरवान्वित थे। तीसरे दिन परिसंवाद के समारोप में ठाकुर जी पर्याप्त स्वस्थ हो गए थे और उन्होंने उस अवसर पर अपने प्रभावशाली बौद्धिक से विद्वानों का मार्गदर्शन किया।

जुलाई, 2010 में गम्भीर रूप से अस्वस्थ होने के उपरान्त ठाकुर जी अगस्त, 2010 में कुल्लू में कुल्लू नगर परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री राम सिंह जी के घर पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। मैं 13 अगस्त को वहां उनसे मिला।

श्री राम सिंह जी का परिवार उनकी सेवा में श्रद्धापूर्वक लीन था। हमीरपुर से भी शेर सिंह जी उनके साथ थे। वे पर्याप्त स्वस्थ लग रहे थे। बातचीत में पूरी प्रखरता थी और बातचीत का मुख्य लक्ष्य मनाली में मनुधाम की स्थापना पर केन्द्रित रहा।

24 अगस्त को रक्षा बन्धन था। रक्षा बन्धन के दिन समस्त भारतवर्ष में संस्कृत दिवस मनाया जाता है। भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रतिवर्ष प्रदेश के भिन्न–भिन्न स्थानों पर इस दिवस का आयोजन होता है। 24 अगस्त को विभाग का राज्य स्तरीय संस्कृत दिवस समारोह कुल्लू में था और इस आयोजन का दायित्व विभाग की ओर से मुझे दिया गया था। मैंने कुल्लू के जिला भाषा अधिकारी डॉ0 सीता राम ठाकुर से बात की कि हम ठाकुर जी से कुछ समय के लिए संस्कृत दिवस समारोह में संस्कृत विद्वानों के बीच उनके उद्‌बोधन से लाभान्वित होंगे। हम दोनों 23 अगस्त को ठाकुर जी से मिले। उस दिन उनके स्वास्थ्य में बहुत गिरावट लगी। हम ऐसी स्थिति में उनसे संस्कृत दिवस में सम्मिलित होने का अनुरोध नहीं कर पाए। मैं कुछ घबराया भी, मुझे अनुभूति हुई कि हम ठाकुर जी की छत्रछाया से वंचित हो जायेंगे। इस अस्वस्थ स्थिति में भी उन्होंने मनुधाम के निर्माण की रूपरेखा स्पष्ट की। उन्होंने ऊना के श्री विश्वास शर्मा को पहले ही यह रूपरेखा लिखा रखी थी जो उस दिन उनके पास थे। ठाकुर जी से अन्तिम भेंट 25 अगस्त को हुई। उस दिन हमीरपुर से श्री नरेन्द्र नन्दा जी उनके पास थे। आज भी ठाकुर जी का स्वास्थ्य चिंताजनक था। तब भी उन्होंने मनुधाम की पूरी परिकल्पना समझाई। मनु महाराज की प्रतिमा स्थापना, अनुसंधान केन्द्र आदि के अतिरिक्त देश भर के महापुरुषों के प्रेरक वृत्त के साथ उनकी प्रतिमाएं स्थापित करने की योजना थी। उन्होंने मुझे कहा कि इस परिकल्पना पर एक पुस्तिका तैयार करें। जब मैं स्वस्थ हो जाऊंगा, तब इस पुस्तिका को देश भर में भेज कर सम्बन्धित क्षेत्रों के महापुरुषों के चारित्रिक वृत्त प्राप्त करेंगे। मैंने देखा कि गम्भीर अस्वस्था में भी ठाकुर जी को अपने स्वास्थ्य की तनिक भी चिंता नहीं, मृत्यु के बारे में कोई सोच नहीं, कोई ध्यान नहीं। ध्यान में केवल राष्ट्र के परम वैभव के लक्ष्य संधान का ध्यान। इसी में त्रषि परम्परा का यह सनातन संदेश आलोकित है –

उतिष्ठत्! जाग्रत्! प्राप्यवरान्निबोधत्।।

–उठो, जागो और अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए निरन्तर आगे बढ़ो।

लक्ष्य संधान के ध्यान का जो मार्ग ठाकुर जी ने हमें सिखलाया और दिखाया, हम प्रतिबद्ध भाव से इस मार्ग का अनुगमन करें, यही इतिहास पुरुष अमर विभूति श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विनीत

डॉ0 विद्या चन्द ठाकुर

राष्ट्र समर्पित इतिहास पुरुष : ठाकुर राम सिंह

चेतराम गर्ग
सह सम्पादक
इतिहास दिवाकर

आदिकाल से भारतीय सभ्यता में समाज के उत्थान और सुखद भविष्य के निर्माण में हमारे ऋषि, मुनियों एवं सेवा की भावना लिए महापुरुषों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुनिवृत्ति धारण करने वाले कुशल संगठक और युगपुरुष स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह जी भी उनमें से एक हैं।

स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी का जन्म एक साधारण किसान परिवार में कलियुगाब्द ५०१६, विक्रमी संवत् १९७१ सौर मास फाल्गुन प्रविष्ठे ४, तदनुसार १६ फरवरी, १९१५ को हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के झण्डवीं गांव में हुआ था। उनके पिता श्री भाग सिंह व माता श्रीमती नियातु देवी थी। मूलत: ये चांगरा राणा थे। कांगड़ा जिले के पालमपुर क्षेत्र को चंगर कहा जाता है। कई पीढ़ी पूर्व ठाकुर जी के पूर्वज वहां से झण्डवीं गांव में आकर बस गए थे। इनके दादा मेहर धन्ना सिंह समाज के एक प्रतिष्ठित व प्रभावशाली व्यक्ति थे। जिन के दो पुत्र व तीन पुत्रियाँ थीं। स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी के दो भाई व एक बहन थी। ठाकुर राम सिंह की तरह उनके एक भाई सुख दास भी अविवाहित ही थे। भाई ज्ञान सिंह ने ही परिवार बसाया जो अब दिल्ली में रहते हैं। इनकी बहन स्वर्गीय गीता देवी सब में छोटी थी।

स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जीवन के प्रारम्भिक काल से ही दृढ़ इच्छा शक्ति, साहस, शौर्य व प्रतिभा के धनी थे। किसी भी चुनौती से उन्हें हार मानना स्वीकार नहीं था। आप की प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय पाठशाला भोरंज में हुई। भोरंज झण्डवीं से ५ किलोमीटर की दूरी पर है। बालक राम सिंह को प्रतिदिन १० किलोमीटर का रास्ता तय करने की आदत पड़ गई थी। प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के उपरान्त माध्यमिक स्तर की पढ़ाई हमीरपुर के सरकारी विद्यालय में हुई। हमीरपुर की पाठशाला उस समय मात्र माध्यमिक स्तर की थी। उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने इन्हें तत्कालीन पंजाब प्रान्त के जिला होशियारपुर के ढोलवां जनाड़ी हाई स्कूल में जाना पड़ा। अब यह स्थान हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला में है। ऊना जिला के पंडोगा गांव में इनकी बुआ रहती थी। ढोलवां जनाड़ी हाई स्कूल पंडोगा से ५ कि.मी. की दूरी पर था। वहीं से उन्होंने दसवीं की परीक्षा पास की थी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ठाकुर जी लाहौर चले गये। लाहौर के प्रसिद्ध एफ.सी. कालेज में ठाकुर जी ने प्रवेश लिया। इनकी एम.ए. इतिहास तक की पढ़ाई इसी

कालेज में हुई। १९४२ में आप ने प्रथम श्रेणी में एम.ए. पास कर सब को आश्चर्यचकित कर दिया। आश्चर्य का मुख्य कारण था ठाकुर जी की हाकी खेलने की दिवानगी। वे एक सधे हुए हाकी के खिलाड़ी थे। उनका पढ़ाई से अधिक समय खेलने में निकल जाता था और साथ ही १९४१ में आप का संघ की शाखा में भी जाना प्रारम्भ हो गया था। इस कारण पढ़ाई के लिए थोड़ा ही समय बचता था। थोड़े समय में भी अधिक समझ लेना ठाकुर जी की अतुल प्रतिभा थी। वे कई बार बताते थे कि पढ़ने की एक पद्धति होती है। यह पद्धति उन्हें १०वीं कक्षा में पढ़ाने वाले एक अध्यापक ने सिखाई थी। उस अध्यापक का कहना था कि विषय वस्तु को पढ़ने के बाद उस विषय का मनन कर लो। रात को सोने से पूर्व पुन: एक बार स्मरण कर लो। यदि भूल गए हो तो एक बार पुन: विषय को देख लो तो कभी भी स्मरण किया हुआ विषय भूलता नहीं है। यह पद्धति ठाकुर जी के साथ अंतिम समय तक रही। इतिहास विषय में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद वहां के प्राचार्य ने ठाकुर जी को इसी कालेज में इतिहास के प्राध्यापक के तौर पर नौकरी करने का आग्रह किया। ठाकुर जी ने यह आग्रह स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की तथा अपना जीवन ध्येय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य के रूप में निश्चित कर लिया।

१९४१-४२ का समय भारत के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समय देश के अन्दर स्वाधीनता आन्दोलन बड़ा आकार ले रहा था। देश में पूर्ण स्वतन्त्रता का नारा गूंज रहा था। कोई भी शिक्षा संस्थान इन आन्दोलनों से अछूता नहीं था। देश में विघटन की भी अनेक साजिशें चल रही थीं। ऐसे समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश के युवाओं में जिस राष्ट्र भक्ति का बीजारोपण कर रहा था, उससे श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह अछूते न रहे और इन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र यज्ञ में आहूत कर दिया।

सन् १९४२ को खांड़वा मध्य प्रदेश में होने वाले संघ शिक्षा वर्ग में अपने साथियों के साथ ठाकुर जी संघ के प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण लेने खांड़वा गए। इस संघ शिक्षा वर्ग में ४०० शिक्षार्थी प्रशिक्षण लेने आए हुए थे। खांड़वा का यह संघ शिक्षा वर्ग अपने में ऐतिहासिक हो गया था। एक ही समय में पंजाब से आए हुए स्वयंसेवकों में से ५८ प्रचारकों का पहला जत्था इस संघ शिक्षा वर्ग से ही निकला था। २० जून १९४२ को लाहौर में रावी नदी के पार पश्चिम दिशा में सर गंगाराम की समाधि के सम्मुख समय दे चुके प्रचारकों का विदाई समारोह हुआ। तत्कालीन प्रांत प्रचारक स्वर्गीय माधव राव मूले उस कार्यक्रम में उपस्थित थे। माधव राव मूले ने ही प्रचारकों के कार्यक्षेत्र की घोषणा की। ठाकुर जी को तत्कालीन पंजाब एवं वर्तमान हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में जिला प्रचारक के रूप में दायित्व दिया गया।

कांगड़ा आने से पूर्व लाहौर माडल टाऊन की शाखा में ठाकुर जी का विदाई समारोह हुआ। यह वही शाखा है जहां ठाकुर जी ने सर्वप्रथम शाखा में प्रवेश किया था। शाखा कार्यवाह ब्रह्मदेव बहल ठाकुर जी के घनिष्ठ मित्र थे। ठाकुर जी को शाखा में लाने

का श्रेय इन्हीं को जाता है। ठाकुर जी के शब्दों में, "मेरे स्वयंसेवकत्व का विकास उन्होंने ऐसी आत्मीयता के साथ किया था कि मैं उनकी प्रेरणा से एक ही वर्ष की अल्पावधि में संघ का प्रचारक बन गया। वह संघ कार्यपद्धति कला के विशेषज्ञ थे और संगठन की कला मैंने उन्हीं से सीखी थी।"

प्रचारक जीवन आरम्भ

जून १९४२ को ठाकुर जी अपने कार्य क्षेत्र कांगड़ा पहुंचे। इसी जिला के रहने वाले ठाकुर जी का कांगड़ा शहर में कोई परिचय नहीं था। न रिश्तेदारी न कोई परिचित। अभी तक आज के हिमाचल प्रदेश के भू-भाग में संघ का कार्य प्रारम्भ भी नहीं हुआ था। अमृतसर के विभाग प्रचारक का दिया हुआ एक परिचय पत्र था। लुधियाना के एक स्वयंसेवक विद्याधर, जिन का मित्र कांगड़ा का जज श्री लुम्बा राम था, इन्हीं के नाम यह पत्र था। श्री लुम्बा राम कोई स्वयंसेवक नहीं था केवल एक परिचित व्यक्ति था। पत्र पढ़कर जज लुम्बा राम ने अपने यहां भोजन की व्यवस्था तो कर दी परन्तु वह भी ज्यादा दिन नहीं चली। क्योंकि लुम्बा राम की पत्नी इस कार्य में सहायक नहीं थी।

डी.ए.वी. स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रतन चन्द मिश्र का नाम भी परिचित सूची में था। उन्होंने एक मास तक अपने स्कूल के चपड़ासी के कमरे में रहने की व्यवस्था मात्र कर दी, क्योंकि उनका चपड़ासी एक मास की छुट्टी पर था। पैसा था नहीं। पास में था राष्ट्र के लिए समर्पित होने वाले युवाओं को तैयार करने का जज़्बा। उसका एकमेव मार्ग था संघ की शाखा। जब इच्छा प्रबल हो तो कठिनाईयाँ भी देखती रह जाती हैं। निकलने वाला अपना रास्ता बना ही लेता है। एक मास में ही ठाकुर जी ने तीन हजार की आबादी वाले शहर कांगड़ा में दो सांय व एक प्रभात शाखा खड़ी कर ली। शहर के वकील, व्यवसायी व तरुण सभी शाखा में आने लगे। शाखा का प्रभाव दिखने लगा। अंग्रेजी सरकार के दरोगा व शुभ चिन्तकों को परेशानी खड़ी हो गई। लगातार ठाकुर जी की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी जाती थी। ठाकुर जी इन समस्याओं से किंचित भी विचलित नहीं हुए, पूरा ध्यान अपने काम पर रखा।

खुशी देने वाला अवसर

कांगड़ा का प्रथम श्री गुरु दक्षिणा का उत्सव हुआ। यह उत्साहित करने वाला था। संघ के पास कोई धन नहीं था। गुरु दक्षिणा में होने वाली राशि की भी अपेक्षा कोई अधिक नहीं थी। कार्यक्रम हुआ और यह समर्पण राशि १३० रुपये थी। यह अपेक्षा से कहीं अधिक थी। उसी वर्ष २ रुपये मासिक किराये पर कांगड़ा बाजार में कमरा ले लिया। इसके बाद तो कांगड़ा में कार्य का विस्तार होने लगा। दो वर्ष बाद ही ठाकुर राम सिंह को अमृतसर बुला लिया गया और उन्हें अमृतसर विभाग प्रचारक का दायित्व सौंपा गया। यह ठाकुर जी की श्रमशीलता का ही परिणाम था। रात को १२ बजे सोना और प्रात: ४

बजे उठकर तैयार होना, यह ठाकुर जी का नियम था। प्रात: ४ बजे के निकले हुए ठाकुर जी १२ बजे ही कार्यालय पहुंचते थे। ठाकुर जी का ध्येय वाक्य था – "पहले अपने केन्द्र को मजबूत करो, उसके बाद बाहरी क्षेत्र में कार्य विस्तार करो। जब तक हमारा केन्द्र मजबूत नहीं है, तब तक बाहर कार्य फैलाव का कोई लाभ नहीं है।" अमृतसर ठाकुर जी के कार्य का केन्द्र बना। चारों ओर शाखाओं का जाल बिछ गया। कालेज, शिक्षण संस्थान, व्यवसायी, व्यापारी, कर्मचारी, छोटे-बड़े किसी प्रकार का कार्य करने वाले सभी संघ शक्ति के साथ जुड़ते गए। योग्य प्रचारकों की टोलियाँ निकलने लगीं। कार्य का विस्तार चारों ओर दिखाई देने लगा। प्रत्येक खण्ड स्तर पर कार्य दिखाई देने लगा। आज का उत्तर क्षेत्र ही उस समय का विभाग था जिसे ठाकुर जी देख रहे थे।

देश विभाजन की विभीषिका का सामना करने वाली टोली का निर्माण

देश के नेता धीरे-धीरे विभाजन की दिशा में बढ़ रहे थे। सारा पंजाब व लाहौर इस वातावरण से भयभीत था। कुछ भी संभव था। संघ उन सारी परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार था। प्रत्येक स्वयंसेवक को अपनी भूमिका का पता था। जान हथेली पर थी। अपने समाज की रक्षा करना सर्वोपरि धर्म है और उस धर्म का पालन सभी को करना और इसी ध्येय वाक्य पर सभी स्वयंसेवक अडिग थे। किसी को कानों कान भी खबर नहीं थी कि संघ की कितनी बड़ी तैयारी है। राहत शिविर, सुरक्षित स्थानों पर स्वयंसेवकों को पहुंचाना, षड्यन्त्रकारियों की योजनाओं को ध्वस्त कर हिन्दुओं की रक्षा में लगी मिलिट्री का सहयोग करना यह सब कार्य साथ-साथ चल रहा था। अमृतसर का प्रत्येक परिवार सुरक्षित रहे, इसके लिए सब योजना रचना के अनुरूप कार्य हो रहा था। इस के सूत्रधार हमारे श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी और उनकी टोली काम कर रही थी। मिलिट्री के अधिकारियों की उंगलियाँ दांतों तले थीं। मिलिट्री के अधिकारी कह रहे थे कि जो कार्य व शौर्य हम नहीं कर सके वह सब संघ वालों ने कर दिखाया।

संघ पर प्रतिबन्ध का सामना

३० जनवरी, १९४८ को गान्धी जी की हत्या हो गई। इस हत्या के लिए संघ को दोषी ठहराया गया। संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। धड़ा-धड़ सरकारी अत्याचार का ताण्डव होने लगा। स्वयंसेवक, प्रचारक, स्वंयसेवक परिवार व सम्बन्धी सभी को लक्ष्य बनाया गया। कांग्रेस संघ की शक्ति से भयभीत थी। वह संघ को अपना प्रतिद्वन्द्वी मान कर चल रही थी। कांग्रेस इस हत्या का अवसर अपने हाथ से गंवाना नहीं चाहती थी। वह संघ की शक्ति को सम्पूर्ण नष्ट कर देना चाहती थी, परन्तु यह सब सम्भव नहीं हो सका। संघ की शक्ति भूमिगत रहकर काम करती रही। ऐसे समय में ठाकुर राम सिंह की कार्य करने की शैली ने मजबूत आधार दिया। परिवारों को सम्भाला। टूटने नहीं दिया, यशस्वी होकर खड़ा किया। यह काली छाया सन् १९४९ में खत्म हुई। प्रतिबन्ध हटा और पुन:

कार्य ने जोर पकड़ा।

ठाकुर जी की एक नई परीक्षा

१९४९ में पूर्वांचल नया क्षेत्र बना। एकनाथ रानाडे इसके क्षेत्र प्रचारक बने। इसी वर्ष ठाकुर जी को असम प्रान्त प्रचारक का दायित्व दिया गया। यह ठाकुर जी की एक नई परीक्षा थी। उत्तर और पूर्व दोनों क्षेत्रों के रहन-सहन, खान-पान, भाषा-बोली, सब भिन्न। यहां कार्य करना कितना चुनौतीपूर्ण रहा होगा, इसकी आज कल्पना मात्र की जा सकती है। ठाकुर जी ने तो वहां संघ कार्य का आधार खड़ा किया था। सन् १९४९ से १९७१ तक पूरे २२ वर्ष असम प्रांत में रहे। स्थानीय समुदायों की भाषा-बोली सीखी। उस समाज के रीति-रिवाजों से अपना तादात्मय बिठाया और हिन्दू संगठन की महत्ता और आवश्कता के तथ्यों को पूर्वांचल के दूरस्थ क्षेत्र तक पहुंचाया। ठाकुर जी कहते थे, "संघ का कार्य हिन्दू संगठन का है। किसी जाति, सम्प्रदाय, भाषा-भाषी, जाति-बिरादरी का नहीं। संघ शाखा में खड़ा होने वाला स्वयंसेवक संघ का है, उसकी जाति हिन्दू है। हमारा काम हिन्दू संगठन का है।" ठाकुर जी ने पूरे क्षेत्र में हिन्दू संगठन की लहर खड़ी कर दी थी। समाचार पत्रों में छपता, "पंजाब से कोई राम सिंह नाम का हिन्दू नेता आया है; उसने असम क्षेत्र में दूर-दूर तक संघ कार्य की एक सुदृढ़ आधारशिला खड़ी कर दी है।" असम में यह स्थिति थी कि संघ यनि राम सिंह। २२ वर्ष की तपस्या की छाप असम के संघ कार्य पर गहरी पड़ी है। इस का जीता जागता प्रमाण हमारे पास असम से आने वाले फोन, पत्र व ठाकुर जी का परिचय है। तीन वर्ष पूर्व हिमाचल के प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम व भाजपा के पूर्व अध्यक्ष श्री जय कृष्ण शर्मा ठाकुर जी के साथ असम के भ्रमण पर गये हुए थे। उस समय ठाकुर जी के साथ वहां के लोगों का स्नेह, अद्‌भुत रूप में देखने को मिला था। वह उसका जीता जागता उदाहरण था।

पुन: पंजाब प्रांत में वापसी

सन् १९७२ में ठाकुर जी पुन: पंजाब प्रान्त में सह प्रांत प्रचारक के दायित्व पर आए। १९७२ से लेकर १९८८ तक पंजाब प्रांत के प्रचारक, सह क्षेत्रीय प्रचारक, क्षेत्र प्रचारक, अखिल भारतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी मण्डल के सदस्य के रूप में संगठन कार्य को ऊर्जा देते रहे।

इतिहास कार्य के लिए ठाकुर जी का चयन

इतिहास ठाकुर जी का विषय रहा है। ठाकुर जी यह भी बताते रहते थे कि एम.ए. में निर्धारित पाठ्यक्रम में जो इतिहास लगा था, वह तो पढ़ाया ही जाता था परन्तु वहां ऐसे योग्य प्राध्यापक भी थे जो भारत के वास्तविक इतिहास की जानकारी प्रदान करते थे। वस्तुत: वे भारत के वैभवशाली इतिहास का ज्ञान करवाते रहते थे।

मा. मोरोपन्त पिंगले जी ने इतिहास पुनर्लेखन जैसे कठिन कार्य का गुरुतर भार मा. ठाकुर राम सिंह जी जैसे कुशल कार्यकर्ता के हाथ में सौंपा। ठाकुर जी कार्य की बारीकियों को जानते थे। कार्य किस ने करना है और कार्य किस से करवाना है, इन बातों की गहन दृष्टि से कार्यकर्ता आश्चर्यचकित रह जाते थे। पंजाब के बाबा साहिब आपटे स्मारक समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री बलवन्त सिंह जी को ठाकुर जी ने पंजाब का काम दिया। श्री बलवन्त सिंह जी बोले, "ठाकुर जी! मैं तो भौतिकी विज्ञान पढ़ाता हूँ। मैं कैसे इतिहास का काम करूं।" ठाकुर जी ने कहा, "आप को संगठन का काम करना तो आता है न। आप को इतिहास नहीं लिखना है। आपको इतिहास लिखने वालों का संगठन करना है, बाकी काम आगे का वे करेंगे।" यह बात बलवन्त जी को जंच गई। वह कहने लगे कि यह तो सम्भव है। यह हो सकता है और इसे निश्चय ही करेंगे। कितने ही ऐसे कार्यकर्ता ठाकुर जी ने काम में लगाए जो अपने को उस काम के अनुरूप नहीं पा रहे थे।

ठाकुर जी ने इतिहास न केवल पढ़ा था अपितु उसका मनन भी किया हुआ था। इतिहास के प्रत्येक पक्ष को व्यावहारिक धरातल पर उतारने की कला उन्हें आती थी। यह मुझे तब महसूस हुआ जब डा. ओम प्रकाश शर्मा 'युग पुरुष परशुराम' पर पुस्तक लिख रहे थे। कैसे परशुराम का जन्म खोज निकाला। गाईड लाईन ठाकुर जी की और कार्य ओम प्रकाश जी कर रहे थे।

सन् १९८८ में इतिहास का काम आने पर ठाकुर जी ने सर्वप्रथम इतिहास लेखन पर जोर न देकर इतिहास लेखन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने पर दिया। जिला, खण्ड स्तर तक समितियां बनाई गईं। देश के हर कोने तक ठाकुर जी पहुँचे और कार्य को नई ऊँचाईयाँ दीं।

धीरे-धीरे इस कार्य ने अखिल भारतीय स्वरूप ले लिया। संगठन के साथ ही समिति के कार्य एवं उद्देश्य निश्चित हुए। उन्होंने विभिन्न प्रकार के प्रकल्प भी हाथ में लिये। दिल्ली में योजना के निमित बाबा साहिब आपटे भवन बनाया। यह कार्य संचालन का केन्द्र बना।

योजना का प्रथम अधिवेशन :

कलियुगाब्द ५०८१ (सन् १९८०) से इतिहास संकलन योजना का कार्य विधिवत शुरू हो गया था। दस वर्ष की मेहनत के बाद कलियुगाब्द ५०९२ (दिसम्बर १९९१) में राष्ट्रीय अधिवेशन उज्जैन में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में ७० इतिहासकारों ने भाग लिया था। विधिवत 'योजना' का संविधान बना। कार्य संचालन की एक समिति बनी। उस समिति के अध्यक्ष श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी थे। सन् १९९२ में आन्ध्र प्रदेश के वारांगल नगर में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन में श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी को सर्वसम्मति से योजना का राष्ट्रीय

अध्यक्ष चुना गया और केन्द्र दिल्ली निश्चित हुआ।

सब कठिनाईयों का सामना करते हुए ठाकुर जी ने इस कार्य को एक नई ऊँचाई दी। विदेशियों द्वारा फैलाए भ्रम एवं भारतीय इतिहासकार जो विदेशियों के स्वरों में स्वर मिलाने वाले थे, उन पर ठाकुर जी सीधा प्रहार करते थे। अपने ग्रन्थों में मौजूद संन्दर्भों का प्रयोग न करके विदेशी गीत गाने वालों को ठाकुर साहब ने कभी नहीं बख्शा। उनका मत था, "हमें अपने शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए। उनमें उपलब्ध साक्ष्यों को समाज के सामने लाना चाहिए। यह विद्वानों की सोच रहनी चाहिए।" इस सन्दर्भ में कार्तिक कृष्ण ६,७,८ युगाब्द ५०९८ (दिनांक १,२,३ नवम्बर १९९६) को चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर उनके द्वारा दिया गया भाषण महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में इतिहास पुनर्लेखन के कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डाला था। ये बिन्दु इस प्रकार हैं :

१. भारत के वास्तविक इतिहास को समक्ष रखना।

२. भारत के इतिहास को भारतीय कालगणना के कालक्रम से लिखना।

३. प्रकृति के इतिहास को समक्ष रखना।

४. प्रथम मानवोत्पत्ति से लेकर अद्यवत सटीक घटनाक्रम से इतिहास का लेखन।

भारतीय इतिहास दृष्टि

ठाकुर रामसिंह जी भारत के गौरवमयी इतिहास के प्रति एक व्यापक और सूक्ष्म दृष्टिकोण रखते थे। उन्होंने अपने जीवन काल में भारत के इतिहास पुनर्लेखन की पृष्ठभूमि तैयार कर विकृतिकरण के छद्‌म दृष्टिकोणों के निराकरण के सुझाव प्रदान किए। वे स्वयं इतिहास के श्रेष्ठ छात्र थे और स्वाधीनता आन्दोलन की प्रत्येक घटना के साक्षी थे। इसी कारण उन्होंने पराधीन भारत के इतिहासकारों द्वारा लिखे गए भारत के इतिहास के दृष्टिकोणों को तथ्यों सहित समाज के समक्ष रखा। यहां उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए विकृतिकरण के तथ्यों और भारत के गौरवमयी इतिहास के पक्षों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

ठाकुर जी की मान्यता थी कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण एवं उज्ज्वल भविष्य के उदय के लिए उस राष्ट्र के इतिहास का विशेष योगदान रहता है। विदेशी आक्रान्ता ग्रीक, मुसलमान रहे हों या अंग्रेज, वे इन तथ्यों को भली-भान्ति जानते थे कि यदि किसी राष्ट्र पर शासन करना हो तो उसके इतिहास को सर्वप्रथम नष्ट कर दो। इस प्रकार उस राष्ट्र को दास या गुलाम बनाने का आधा कार्य पूर्ण हो जाएगा। आक्रान्ताओं ने भारत के इतिहास के साथ यही किया। इन्हीं कारणों से ठाकुर रामसिंह जी ने इतिहास पुनर्लेखन को प्रमाणिक बनाने के लिए इतिहास के साक्ष्य समाज के समक्ष रखे। उनका मानना था कि इतिहासकारों में एक सोची समझी रणनीति के तहत इतिहास के विकृत पक्षों को इतिहास में अधिमान दिया गया और भारत के गौरवमयी इतिहास के तथ्यों को जानबूझकर

नजरन्दाज किया।

ठाकुर रामसिंह जी ने विकृत इतिहास के जो प्रमाण इतिहासकारों, चिन्तकों एवं समाज के समक्ष रखे उनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं :

- ग्रीक आक्रान्ता सिकन्दर को विश्वविजेता और महान बताने वाले इतिहासकार सिकन्दर के द्विगर्त क्षेत्र से आगे न बढ़ने और डोगरा वीरों द्वारा मारे जाने पर मौन हैं।
- इस्लाम के गाजी सुल्तान मुहम्मद गजनवी के साथ आए इतिहासकार अल्बेरूनी भारत का इतिहास जानने के लिए पर्याप्त सामग्री साथ ले गया। वही इतिहासकार जाते-जाते यह कहता है कि भारत के लोगों को इतिहास लिखने की कला नहीं आती। इतिहासकार अल्बेरूनी की मंशा पर आज भी मौन हैं।
- नालन्दा और विक्रमशिला हिन्दू विश्वविद्यालयों को जलाने वाले मुहम्मद बख्त्यार खिलजी को इतिहासकार गाजी और योद्धा चित्रित करते हैं, परन्तु उसका अन्त करने वाले भारतीय योद्धाओं पर इतिहासकार मौन हैं।
- राजस्थान का इतिहास बताता है कि मेवाड़ के सिसोदियों और जोधपुर के राठौड़ों ने मिलकर जहांगीर को युद्ध में १७ बार हराया था। इतिहासकार इस पर या तो मौन साधे हुए हैं या फिर इन घटनाओं को अधिमान देना ही नहीं चाहते।
- मेवाड़ के शूरवीर राणा राजसिंह ने औरंगजेब को उदयपुर नगर की सुरक्षा दीवार के बाहर पराजित किया था। औरंगजेब का गुणगान तो इतिहासकार करते हैं, परन्तु मेवाड़ के शूरवीरों को इतिहास के पन्नों में कोई स्थान नहीं दिया गया।
- मुस्लिम शासकों के अत्याचारों और कत्लेआम को युद्ध कौशल और भारत के योद्धाओं को द्रोही कहना कहां तक तर्कसंगत है। इतिहासकार इन पक्षों पर आज भी चुप्पी साधे हुए हैं।
- मुस्लिम आक्रान्ता एक हाथ में तलवार और एक हाथ में कुरान लेकर भारत की धरती पर आए थे। इतिहासकार इस दृष्टिकोण को नज़रन्दाज करते हुए दिखाई देते हैं और महाराणा को क्रूर यातना देने वाले अकबर को 'दि ग्रेट' घोषित करने से भी नहीं चूकते।
- एक हजार वर्षीय हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष में हिन्दू प्रतिरोध के शौर्य की उपरोक्त और अन्य कई घटनाओं का इतिहासकारों ने इतिहास में स्थान न देकर उनको छुपाने का कुप्रयास किया है। इतिहास का यह अक्षम्य विकृतिकरण है।
- हिन्दू शौर्य की सत्य घटनाओं और प्रतिरोधों को इतिहासकारों ने अपनी लेखनी में स्थान नहीं दिया जबकि इस्लाम के मौलवियों, मौलानाओं, और कवियों ने सत्य को स्वीकार किया है कि उनकी इस्लामीकरण की वैश्विक योजना

हिन्दुओं के प्रबल प्रतिरोध के कारण असफल हुई। उर्दू का कवि हाली लिखता है कि :

वह दीने हिज़ाजी का बेबाक बेड़ा।
निशान जिसका अक्से में पहुंचा।।
किया पै सफर जिसने सातों समन्दर।
डूबा वह गंगा के दहाने में आकर।।

❖ इतिहासकारों ने इतने बड़े सत्य को विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों तक पहुंचने नहीं दिया।

❖ भक्ति आन्दोलन के उदय से हिन्दू समाज जाग उठा था और मुगलों के साम्राज्य का अन्त हुआ। इसी बीच दूसरी विदेशी शक्ति अंग्रेजों का भारत भूमि पर पदार्पण होता है। अंग्रेज शत्रु से ४ महत्त्वपूर्ण युद्ध हुए पांचवां युद्ध १८५७ की क्रान्ति के रूप में समक्ष आया। अंग्रेज वायसराय लार्ड हार्डिंग तब भारत से भागने के लिए अपना घोड़ा तैयार कर चुका था, परन्तु अपने ही देश के कुछ देशद्रोहियों ने अंग्रेजों के साम्राज्य को बचा लिया और लड़ने वाले भारतीय क्रान्तिवीरों को देशद्रोही बना डाला। ये तथ्य इतिहास की पुस्तकों में तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किए गए हैं।

❖ भारत के इतिहास लेखन के लिए लन्दन में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई। १८ अप्रैल, १८६५ को सोसायटी के अध्यक्ष स्ट्रांगफील्ड की अध्यक्षता में एक सोची समझी रणनीति के तहत आर्यों के मूल स्थान के विषय में मध्य एशिया का सिद्धान्त प्रतिपादित करने का प्रस्ताव पारित हुआ। इतिहास के विकृतीकरण के इस प्रस्ताव ने सारे विश्व में यह भ्रम फैला दिया कि हिन्दुओं के पूर्वज 'आर्य' मध्य एशिया से आक्रान्ता के रूप में भारत में आए अत: उनका यह देश नहीं। उसके पश्चात् मुस्लिम भारत में आए, उनका भी यह देश नहीं। तत्पश्चात् अंग्रेज़ भारत में आए उनका भी यह देश नहीं। ये तीनों विदेशी हैं। अंग्रेजों ने आर्य सभ्यता के प्रमाणिक ग्रन्थ ऋग्वेद तक को ईस्वी सन् के काल के साथ जोड़ने का प्रयास किया। आज वैज्ञानिक शोधों से उपर्युक्त सिद्धान्त निरस्त हो चुके हैं, परन्तु इतिहासकार इन पर आज भी मौन हैं।

❖ इतिहास के विकृतीकरण की नींव पड़ चुकी थी। इस विकृतीकरण को कार्यान्वित करने के लिए १८८५ में इण्डियन नेशलन कांग्रेस ने 'हिन्दू मुस्लिम इसाई तीनों भाई-भाई' के सिद्धान्त को आविष्कृत किया। परिणाम स्वरूप आर्यों को भारत में बाहर से आया हुआ प्रमाणित कर डाला। स्वतन्त्र भारत में आज भी यही सिद्धान्त सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

- ❖ अंग्रेजों ने एक रणनीति के तहत देश की अखण्डता को नष्ट करने के लिए यह प्रचार किया कि भारत कभी भी एक देश नहीं रहा। यह तो एक उपमहाद्वीप है। इसी कारण इस देश में अनेक जातियां और अनेक राष्ट्र हैं। इतिहासकार इन सब बातों पर भी मौन हैं।
- ❖ अंग्रेजों ने वेदों को गडरियों के गीत घोषित कर भारतीय इतिहास के अकाट्य प्रमाणों को काल्पनिक होने का प्रचार आरम्भ किया। अंग्रेजों ने हिन्दू को सम्प्रदाय और यहां के साहित्य एवं इतिहास को साम्प्रदायिक बना डाला।
- ❖ वर्तमान में विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह विलियम जोन्स द्वारा आविष्कृत कालक्रम के आधार पर लिखा गया है। यह कालक्रम है ईसा के जन्म से सम्बन्धित ईसाई अवैज्ञानिक कालगणना के अनुसार निर्धारित कालक्रम। विलियम जोन्स ने इसी कालक्रम को भारतीय कालगणना को निरस्त करने के लिए धारदार हथियार के रूप में प्रयोग में लाया। भारतीय कालगणना को अस्वीकार करते हुए उसने यह घोषणा कर डाली कि सिकन्दर के भारत के आक्रमण की तिथि ई०पू० ३२७ ही एक मात्र सत्य तिथि है। यहीं से उसने भारत के इतिहास लेखन का मसौदा तैयार किया। इससे पूर्व का कालखण्ड काल्पनिक अथवा मिथकों में धकेल कर एक नई परम्परा की नींव पड़ी। इतिहासकार इन तथ्यों पर भी मौन हैं।

ठाकुर रामसिंह जी भारतीय इतिहास और कालक्रम के प्रमाणों को भली-भान्ति समझते थे। उन्होंने आजीवन पाश्चात्य ईसाईयों, मुस्लिम दरबारियों, भारतीय साम्यवादी इतिहासकारों, धर्मनिरपेक्ष इतिहासकारों द्वारा खड़े किए गए कुदृष्ट सिद्धान्तों का सदैव निराकरण किया। उन्होंने प्रमाण प्रस्तुत कर भावी पीढ़ी को सोचने के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण तथ्य संजोए थे। उदाहरण स्वरूप उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

- ❖ देवताओं के आध्यात्मिक और शैक्षिक साम्राज्य के विश्व के प्रथम सम्राट ब्रह्मा जी ने विश्व समाज में सर्वप्रथम इतिहासशास्त्र की स्थापना कर इतिहास के दो ग्रन्थ 'ब्रह्मसंहिता' और 'महापुराण' लिखे और इतिहास के प्रचार-प्रसार और लेखन का उत्तरदायित्व अपने उत्तराधिकारियों को सौंपा। यह घटना भारतीय कालखण्ड के देव युग की है। इस समय पृथ्वी एक द्वीपा थी। अत: इतिहास शास्त्र की स्थापना जब सर्वप्रथम भारत में हुई तो यह कहना कि भारत का अपना कोई इतिहास नहीं है तथा हिन्दुओं को इतिहास लिखना नहीं आता था, पूर्णत: तर्कसंगत नहीं है।
- ❖ ऋषियों ने सम्पूर्ण वेदों की ऋचाओं का साक्षात्कार कर इन्हें श्रौत परम्परा पर जीवित रखा। इतिहासकार इन परम्पराओं को मिथक कहकर मौन हैं।

- वर्तमान श्वेतवराह कल्प के प्रथम मनु स्वायंभुव मनु ने ज्ञान-विज्ञान और इतिहास को जीवित रखने के लिए भारत में गुरुकुलों की स्थापना की। ब्रह्मा द्वारा प्रतिपादित इतिहास के प्रचार-प्रसार का जिम्मा स्वयं उठाया और गुरुकुलों को इसका उत्तरदायित्व सौंपा।
- कालक्रम से परवर्ती युग में विश्व के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट महाराजा पृथु ने ज्ञान-विज्ञान और इतिहास के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी राजधानी माहिष्मती में विद्वानों की सभा बुलाई। भारतीय इतिहास में इस सभा का विशेष महत्त्व है। यहीं से इतिहास के प्रचार-प्रसार की स्थायी व्यवस्था का निर्माण हुआ। इसका जिम्मा 'मागध' और 'सूत' दो जातियों को सौंपा गया। ये आठ मास घर-घर जाकर इतिहास के प्रचार-प्रसार का कार्य देखते थे और चार मास अपने परिवार के साथ रहते थे। महाराजा पृथु ने जीवन निर्वाह के लिए मागध को मगध और सूतो को तेलंगाना जागीर में दे दिया। आदिकाल से आज तक इतिहास के प्रचार-प्रसार की ये परम्पराएं चली आ रही हैं। इतिहासकार पाश्चात्यों के सुर में सुर मिलाकर इतिहास के इन स्रोतों को काल्पनिक कहने में गर्व महसूस करते हैं।
- महाराजा इक्ष्वाकु से महाभारत तक विश्वविख्यात इतिहासकार हुए उनमें वेद व्यास, गर्ग और जैमिनी आदि प्रसिद्ध हैं।
- परवर्ती युगों में इतिहास के प्रचार-प्रसार की स्थायी योजना में कथावाचक वृत्तलेखक, भाट, चारण, ढाडी और मिरासी हुए। जो आज भी विद्यमान हैं। इतिहासकार इन्हें भी प्रामाणिक नहीं मानते।
- महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने इतिहास को पंचमवेद कहा है — 'इतिहासपुराणं पंचमो वेद:।'
- सम्पूर्ण भागवत को सुनाने के पश्चात् श्री शुकदेव मुनि ने परीक्षित को कहा था कि हे परीक्षित! स्वायंभुव मनु से लेकर अद्यवत जो १९५ करोड़ वर्षों का इतिहास मैंने आपको सुनाया, इसको तुम वाणी का विलास और वैभव मत समझना। इस पृथ्वी पर बड़े-बड़े प्रतापी पुरुष अपने तेज और यश की गाथाएं छोड़ गए। इनमें जीवन का परम रहस्य, विज्ञान और वैराग्य निहित है।
- प्राचीन भारत में प्रत्येक राजा के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक था।
- धार्मिक अनुष्ठानों, विवाहों, अश्वमेध एवं राजसूय यज्ञों में इतिहास का वाचन आवश्यक था।
- इतिहास लिखने के लिए प्रत्येक हिन्दू राजा के दरबार में वृत लेखक, चारण और भाट नियुक्त होते थे।

- ❖ प्रत्येक राजवंश के कुल पुरोहित का दायित्व था कि वह उस राजवंश का इतिहास लिखे। बृहस्पति देवताओं के, शुक्राचार्य असुरों के और गर्ग यादवों के कुल पुरोहित थे। इनके द्वारा लिखे गए इतिहास के विषय में इतिहासकार मौन हैं।
- ❖ भारत के इतिहास में ४० चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं। चक्रवर्ती सम्राट का जब राज्याभिषेक होता था तो वह सप्तद्वीपेश्वर की शपथ लेता था। रामचन्द्र जी भी चक्रवर्ती सम्राट थे। अंतिम चक्रवर्ती सम्राट युधिष्ठर थे। इन पर भी इतिहासकार मौन हैं।
- ❖ मराठा योद्धा शिवाजी महाराज ने मुगल साम्राज्य के विस्तार को रोकने के लिए २५५ युद्ध लड़े। वह न तो किसी युद्ध में हारे और न ही जख्मी हुए। इतिहासकार ऐसे योद्धा को इतिहास में चित्रित करने से कतराते हैं।
- ❖ गुरु गोविन्दसिंह, राणाप्रताप, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर और असम के लाचित बड़फुकन जैसे योद्धाओं की शौर्य गाथाओं को इतिहास में स्थान न देकर इतिहासकार मुस्लमानों और अंग्रेजों के शौर्य का गुणगान करते क्यों दिखाई देते हैं?
- ❖ पुरातात्विक खोजों, डी.एन.ए. साक्ष्यों, वैदिक साक्ष्यों, ऐतिहासिक प्रमाणों एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो गया है कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। मानव की प्रथम उत्पत्ति सुमेरूपर्वत पर हुई। सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी शास्त्रों, सब राष्ट्रों और ज्ञान-विज्ञान का उदय भारत में हुआ। इस सन्दर्भ में समस्त साक्ष्य भारत में विद्यमान हैं। इतिहासकार उन पर आज भी मौन हैं।

इसलिए यह धारणा निराधार है कि भारत का अपना कोई प्राचीन इतिहास नहीं और न ही भारत के लोगों को इतिहास लिखना आता है। ठाकुर जी ने भारतीय सभ्यता में इतिहास लेखन के वे प्रमाण समक्ष रख दिए हैं जो समय आने पर अवश्य सर्व-स्वीकार्य होंगे, क्योंकि सत्य को दबाया नहीं जा सकता।

काल की अवधारणा में इतिहास

ठाकुर राम सिंह जी इस बात पर बल देते थे कि काल, इतिहास की आत्मा है। भारत में काल की प्राचीन अवधारणा ही काल की वैज्ञानिक अवधारणा है।

पाश्चात्य जगत में काल तत्त्व की अवधारणा स्पष्ट नहीं है। काल की अवधारणा स्पष्ट न होने के कारण पश्चिम के इतिहासकार बाईबल की अवधारणा पर पृथ्वी की उत्पत्ति ४००० हजार वर्ष पहले हुई मानते हैं। १९वीं शताब्दी तक वहां के वैज्ञानिक भी बाईबल की इसी अवधारणा के मानने वाले थे। जैसे-जैसे कुछ पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने जीवाश्मों की वैज्ञानिक खोजें प्रारम्भ की तो कालक्रम की अवधारणाएं

बदलनी प्रारम्भ हुईं। अब तो पाश्चात्य जगत के वैज्ञानिक पृथ्वी की उत्पत्ति का काल अरबों वर्ष पूर्व तक मानने लगे हैं।

ठाकुर रामसिंह जी कहते थे कि भारतीय त्रिकालद्रष्टा ऋषियों ने काल को अपने सूक्ष्म अध्ययन का विषय बनाया। उन्होंने काल का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, सर्वव्यापकता, महिमा आदि सर्वपक्षों की गहन खोजकर उसका इतिहास लिख डाला। ठाकुर जी का कथन था कि वैदिक कालज्ञ ऋषियों ने सर्वप्रथम काल की १० सूक्ष्म इकाइयों का अविष्कार किया तथा काल का परिगणन सूक्ष्मातिसूक्ष्म इकाई परमाणु से प्रारम्भ कर ब्रह्माण्ड को व्याप्क करने वाली महानतम इकाई महाकल्प का निर्माण कर डाला। विश्व में ७० से अधिक कालगणनाएं प्रचलित हैं। इनमें वैज्ञानिक और प्राचीनतम कालगणना भारतीय है। इसी कालगणना के आधार पर काल के दिनमान पक्षमान, सप्ताहमान, मासमान, वर्षमान, युगमान, मन्वन्तरमान तथा कल्पमान आदि कालखण्डों की उत्पत्ति भारतीय ऋषियों की प्रज्ञा ने कर डाली। इसी काल गणना की अवधारणा के आधार पर भारत का १९७ करोड़ वर्ष का गौरवमयी इतिहास समक्ष आता है।

ठाकुर रामसिंह जी काल की प्राचीन अवधारणा के अनुसार इतिहास लेखन के पक्ष में थे। उनका कहना था कि भारत ही ऐसा राष्ट्र है जहां प्रकृति का इतिहास और मानव का इतिहास काल के खण्डों में विद्यमान है। उनका कहना था कि इतिहासकारों को इस पर बहुत सावधानी से तथ्य पूर्ण सामग्री संकलित कर इन दोनों पक्षों पर इतिहास लेखन करना चाहिए। इसी दृष्टिकोण से ठाकुर जी ने १९७ करोड़ वर्षों के इतिहास लेखन का बीड़ा उठाया था।

ठाकुर जी ने इतिहास लेखन के लिए उन बिन्दुओं को आधार रूप से स्वीकार किया जिनमें भारत का गौरवमयी इतिहास युगों की वैज्ञानिक भारतीय कालगणना के अनुसार चार युगों में विभक्त है। वे चार युग देवयुग, ब्रह्मयुग, क्षात्र युग और वर्तमान कलियुग कालगणना क्रम में व्यवस्थित है। वस्तुत: भारत के इतिहास का विषय हिरण्यगर्भ के संरचना काल के बिन्दु से प्रारम्भ होकर इस पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति से अद्यवत् १९७ करोड़ वर्ष का है। तथ्यों के उद्घाटन के साथ-साथ धीरे-धीरे यह बात प्रमाणित हो रही है कि मनुष्य जाति की आदि जननी भारत है क्योंकि विश्व के आदि मानव का प्रादुर्भाव भारत के सुमेरुपर्वत पर हुआ है। विश्व के सम्पूर्ण प्राचीन इतिहास की सामग्री भी भारत के पास है। ठाकुर जी उपर्युक्त इन बातों को प्रमाणों सहित कहते थे यही वे प्रमाण थे जिनके आधार पर ठाकुर जी ने इतिहास लेखन के व्यापक दृष्टिकोण स्थापित किए। इन्हीं दृष्टिकोणों ने एक जीवन्त संकल्प लेने के लिए ठाकुर जी को बाध्य किया और ठाकुर जगदेव चन्द स्मृतिशोध संस्थान की नींव पड़ी। इसी क्रम में अब उनकी परिकल्पना कुल्लू में मनु धाम स्थापित करने की थी।

जीवन का अन्तिम पड़ाव — ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी

श्रद्धेय ठाकुर जी थकना नहीं जानते थे, काम जानते थे। काम भी कैसा जिसमें सब की राय बनी हुई हो या बनाई गई हो। सब की सहभागिता। यह एक शिक्षण और प्रशिक्षण का भी तरीका होता है। ठाकुर जी यही रहते थे। दो वर्ष पूर्व ठाकुर जी प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम जी के साथ लेह-लद्दाख की यात्रा करके आए। आयु ९४ वर्ष। रास्ते में कई स्थानों पर सड़क अवरोध, पैदल चलना, अनेक प्रकार के झंझावत पर ठाकुर जी पीछे नहीं देखते थे। आगे बढ़ते थे। २० वर्ष के तरुण सा दिल व सोच। भविष्य का एक ऐसा स्टीक चिन्तन व शब्द चयन कि सुनने वाले दीवाने हो जाते थे। स्मरण शक्ति तो ठाकुर जी की ऐसी कि ८० वर्ष पूर्व भी कोई मिला उसकी भी पहचान। परिवार के छोटे से बड़े तक सब का एक-एक कर हाल पूछना। सब की चिन्ता, सब को काम देना।

सन् २००२ में ठाकुर जी इतिहास संकलन योजना से मुक्त हो गए। मा. मोरोपंत पिंगले जी ने ठाकुर जी को कहा था कि इतिहास के इस वृहद् कार्य को स्थाई अंजाम देने के लिए देश भर के चार हिस्सों में चार शोध-संस्थानों की आवश्यकता है। इस पर भी काम किया जाना चाहिए। वे संगठन के अन्य कार्य से मुक्त होकर अब इस दिशा में कार्य करने लगे। ठाकुर जी का कहना था कि चार शोध संस्थान तो मैं खड़े नहीं कर पाऊंगा, परन्तु उत्तर क्षेत्र में इस कार्य को मैं प्रारम्भ कर दूंगा।

शोध संस्थान के लिए स्थान का चयन तो चल ही रहा था। दो-तीन स्थानों पर भूमि भी उपलब्ध हो रही थी, परन्तु ठाकुर जी को अपने जीवन की यात्रा अपने गृह जिले में ही पूरी करनी थी। देवात्मा हिमालय की गोद में इतिहास के पुनर्लेखन व शोधन के लिए आना था। वही हुआ और सन् २००३ में हिमाचल प्रदेश सरकार से हमीरपुर जिला के नेरी गांव, जो शहर से ९ कि.मी. पश्चिम दिशा में है, ९९ वर्ष के पट्टे पर ५१ कनाल भूमि इस कार्य के लिए प्राप्त हो गई। ऊबड़-खाबड़, गहरी खाई का टुकड़ा आकार लेने लगा। भूमि पूजन, निवासीय भवन (श्रीमती उत्तम देवी भवन), माधव भवन, जिसमें पुस्तकालय, संग्रहालय, सभागार, हमीर राष्ट्रीय संग्रहालय, संगणक कक्ष तथा धरातल पर भोजनालय का निर्माण हुआ।

ठाकुर जी की उत्कट आकांक्षा रही नेरी शोध संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने की। आततायियों ने भारत के वैभव को लूटा है। भारत के इतिहास को बदरंग किया है। इतना कहने मात्र से समस्या का समाधान नहीं हो जाता। उसके लिए उन समस्याओं के समाधान की दिशा में पग बढ़ाने पड़ते हैं। वह सब कर दिखाया ठाकुर जी ने। सर्वप्रथम इसी दिशा में ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान में शोध कार्य का शुभारंभ हुआ। कार्तिक शुक्ल ५, कलियुगाब्द ५१०८ (२७ अक्तूबर, २००७) को त्रिदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "तथाकथित

विश्व विजेता सिकन्दर महान का भारत पर आक्रमण तथा उसका द्विगर्त जम्मू के चन्द्र भागा क्षेत्र में डोगरा वीरों के हाथों मारा जाना"। इस अवसर पर तत्कालीन पू. सरसंघचालक मा. कु.सी. सुदर्शन जी पधारे थे। यह क्रम निरन्तर गतिमान हो गया। अगली कड़ी में वैशाख शुक्ल ५, कलियुगाब्द ५११० (१० मई, २००८) को "लोक परम्परा में सृष्टि रचना विचार" राष्ट्रीय परिसंवाद हुआ। कार्य अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप की ओर बढ़ा तो कार्तिक शुक्ल कलियुगाब्द ५१११ (३१ अक्तूबर, नवम्बर १,२, २००९) को "अलंकार मार्तण्ड महाराज संसार चन्द और उनका युग" विषय पर परिसंवाद हुआ। इस अवसर पर मंगोलिया के राजदूत बोरोशिलोव एंखबोल्ड भी पधारे थे। भारत और मंगोलिया के सम्बन्ध पूर्वकाल में कितने सुदृढ़ थे इस विषय को ठाकुर जी ने समाज के सामने रखा।

ठाकुर जी द्वारा अपने जीवन के अंतिम दिनों में ब्रह्माण्ड की संरचना, पृथ्वी की उत्पत्ति, ऋषियों की परम्परा एवं भारतीय ज्ञान शास्त्र जो कहते हैं, उसे दृश्य रूप में व्यक्त करने के लिए संस्थान में राष्ट्रीय हमीर संग्रहालय का कार्य चलाया गया। ठाकुर राम सिंह जी के उपर्युक्त ऐसे संकल्प हैं जो धीरे-धीरे मूर्त रूप ले रहे हैं। लुधियाना में उपचार करवा कर लौटे ठाकुर राम सिंह जी ने अपने जीवन काल में ही ५ अगस्त, २०१० को हवन करवा कर "इस पृथ्वी पर प्रथम मानवोत्पत्ति से अद्यवत् भारत के १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन की रूपरेखा का राष्ट्रीय हमीर संग्रहालय" कार्य का शुभारम्भ करवाया। इस पर सक्रियता से कार्य हो रहा है। स्थान-स्थान पर ठाकुर जी ने जो विभिन्न विद्वानों को कार्य दिये हैं वे सब सकारात्मक दिशा में बढ़ रहे हैं।

आज ठाकुर जी दैहिक रूप से हमारे मध्य नहीं हैं। ठाकुर जी का आदर्श जीवन सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। इस में किंचित भी संशय नहीं है। ठाकुर जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उन के कार्य को मूर्त रूप देते हुए आगे बढ़ाते रहें। उपनिषद् का ध्येय सूत्र है — 'चरैवेति' अर्थात् चलते रहो। स्व. ठाकुर राम सिंह जी ने जीवन में इस ध्येय को अपनाया और भावी पीढ़ी को भी यही सन्देश दिया कि "चलते रहो"।

युग पुरुष श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह ने कलियुगाब्द ५११२ विक्रमी संवत् २०६७ सौर मास प्रविष्ठे २२, कृष्ण त्रयोदशी तदानुसार ६ सितम्बर, २०१० सांय ५.२५ मिनट पर लुधियाना डी.एम.सी. हीरो हार्ट में अन्तिम सांस ली और पंच तत्वों से बने शरीर को पंच तत्वों में विलीन कर गए।

झण्डवीं से अमृतसर तक की जीवन यात्रा

कृष्णानन्द सागर
एफ–109, सै. 27, नौएडा

मेरी ठाकुर रामसिंह जी से कई बार लम्बी–लम्बी वार्ताएं हुई। वार्ताओं के विषय भिन्न–भिन्न रहे। ऐसी ही एक वार्ता सोमवार दिनांक २२ जुलाई, २००५ को संघ कार्यालय दिल्ली में सायंकाल ५:०० बजे ढाई घण्टे की हुई, जिसे मैंने बाद में लिपिबद्ध कर लिया था। इसमें मैंने उनके आरम्भिक जीवन के विषय में अनेक प्रश्न किए और उन्होंने उनके उत्तर दिए। प्रस्तुत हैं उन प्रश्नों के उत्तर अर्थात् ठाकुर जी के आत्म कथ्य :

झण्डवी में हमारी खेती थी। खेती से ही हमारी आजीविका चलती थी। मैंने आठवीं तक की पढ़ाई हिमाचल प्रदेश के वर्तमान ऊना जिला के ढोलवा के मिडल स्कूल से की थी। एक राजा हुआ था ढोला नाम का। उसी के नाम से ढोलवा नाम पड़ा था। हमारे गांव से वह बहुत दूर था, इसलिए मैं ढोलवा में ही होस्टल में रहता था। वह विद्यालय राजा द्वारा ही चलाया गया था, इसलिए व्यवस्था अच्छी थी।

आस–पास के भी सब स्कूल मिडल तक ही थे। गरली–परागपुर में सूदों ने हाई स्कूल शुरू किया था। सूद लोग सम्पन्न थे। वे गर्मियों में शिमला और सर्दियों में गरली प्रागपुर आ जाते थे, इसलिए उन्होंने यहां हाई स्कूल शुरू किया। यह स्कूल बहुत अच्छा था। इससे पहले एक हाईस्कूल राजा ने शुरू किया था, किन्तु वह चल नहीं पाया। उसके भी सभी विद्यार्थी इसी स्कूल में आ गए।

उन दिनों वहां के मिडल स्कूलों में हिन्दी व उर्दू पढ़ाई जाती थी। अंग्रेजी नहीं। नवीं कक्षा में प्रवेश के लिए पहले दो परीक्षाएं अंग्रेजी की देनी पड़ती थीं। पहली परीक्षा पांचवीं–छठी की अंग्रेजी की और दूसरी परीक्षा सातवीं–आठवीं की अंग्रेजी की। दोनों के प्रमाण पत्र उपस्थित करने पर ही नवीं कक्षा में प्रवेश मिलता था।

ढोलवा में पढ़ते हुए मैंने अंग्रेजी भी पढ़नी शुरू कर दी थी। हमारे एक अध्यापक थे, उन्होंने एक बार मुझे कहा, ''मैं तुम्हें अच्छी पढ़ाई करने का तरीका बताता हूँ। अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक लो। उसके एक पाठ को पढ़ो। उसके एक पैरे का अनुवाद हिन्दी में करो, फिर एक हिन्दी पैरे का अनुवाद अंग्रेजी में करो। यह रोज करो और मुझे दिखा दो, मैं उसमें सुधार कर दूंगा। कक्षा में जो पढ़ाया जाए, उसे साथ–साथ रफ़ कापी पर लिखते जाओ। इससे तुम्हारी विषय पर पकड़ और लिखने की गति बढ़ेगी। जब सारी पुस्तक समाप्त हो जाये तो प्रत्येक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखो। गाइड व कुंजी

बिल्कुल मत देखो। इससे तुम्हारी अंग्रेजी अच्छी हो जायेगी। परीक्षा से पहले आधे घण्टे में उस सारांश को पढ़ जाओ। तुम कभी मार नहीं खाओगे।"

मैंने उनके अनुसार ही करना शुरू कर दिया। इससे मेरी अंग्रेजी अच्छी हो गई। अन्य विषयों की पढ़ाई भी इसी ढंग से की। अत: आठवीं में अपने स्कूल में प्रथम आया। अंग्रेजी की भी दोनों परीक्षाएं मैंने वहीं (ढोलवा में) उत्तीर्ण कर लीं थीं, अत: मुझे नवीं में प्रेवश गरली-प्रागपुर में मिल गया। वहाँ मैं नवीं तथा दसवीं में प्रथम रहा और हाकी का भी अच्छा खिलाड़ी बन गया।

होशियारपुर

मैट्रिक के बाद घर वाले आगे पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। वे चाहते थे कि अब मैं कहीं नौकरी कर लूं और पैसा कमाऊं। उन दिनों एक सरकारी विभाग में इंस्पैक्टरों की नियुक्तियां होनी थीं। मेरे पिताजी के एक मित्र के छोटे भाई कांगड़ा में उस विभाग के कमिश्नर थे। पिताजी के उस मित्र ने कमिश्नर के नाम एक पत्र लिखकर मुझे दे दिया। मैं वह पत्र लेकर कांगड़ा गया और उन कमिश्नर महोदय को मिला। उन्होंने मेरे सारे प्रमाण-पत्र देखकर कहा, "हमारे पास नौकरियाँ काफी हैं और तुम्हें नौकरी जरूर मिल जाएगी, लेकिन तुम्हारे प्रमाण-पत्र देख कर मुझे लगता है कि तुम्हें और आगे पढ़ना चाहिए।" मैंने कहा कि मैं भी पढ़ना चाहता हूँ, लेकिन घरवाले नौकरी पर जोर दे रहे हैं। अगर आप लिख दें कि नौकरियां समाप्त हो गई हैं या नहीं मिल सकती, तो आगे पढ़ने का अवसर मुझे मिल सकता है। उन्होंने लिख दिया कि नौकरी प्राप्य नहीं है। मैं वापस आ गया।

तब तक कालेज में प्रवेश बंद हो चुका था। अत: सात-आठ महीने घूमता रहा। एक साल बर्बाद हो गया। अगले साल होशियारपुर में एफ.ए. में प्रवेश लिया। वहां मैं यूथ कांग्रेस के सम्पर्क में आया और उसमें सक्रिय हो गया। यूथ कांग्रेस को मैंने १००/— रूपए भी इकट्ठे कर के दिए। लेकिन मैंने देखा कि उसमें पैसे खाने वाले ही सब लोग थे, इसलिए मैंने यूथ कांग्रेस छोड़ दी।

मुझे पैसे की समस्या थी। किसी ने बताया कि अमुक एक जज हैं, वे राजपूत स्टूडैंट्स वैल्फेयर सोसाइटी के माध्यम से राजपूत विद्यार्थियों को वजीफ़ा देते हैं। मैं उनके पास चला गया। उन्होंने मुझे ५/— रूपये मासिक वजीफ़ा लगा दिया। मैं एफ.ए. में प्रथम आया।

एस०डी० कालेज लाहौर

होशियारपुर से एफ.ए. करके मैं बी.ए. के लिए लाहौर आया। वहाँ डी.ए.वी. कालेज गया। प्रवेश तो वे तुरन्त देने को तैयार थे, किन्तु उन्होंने मुझे कोई सुविधा नहीं दी।

फिर मैं एस.डी. कालेज गया, उन्होंने मेरी फीस माफ कर दी। मैंने वहां प्रवेश ले लिया। राजपूत स्टूडैंट्स वैल्फेयर सोसाइटी का वजीफ़ा मिलता रहा और मेरा काम चलता रहा। हाकी का खिलाड़ी यहाँ भी बना रहा।

एस.डी. कालेज में पढ़ते हुए मेरा सम्पर्क कम्युनिस्टों से हुआ। कुछ दिन उनके साथ काम किया। लेकिन वहाँ भी काम कम और लिफाज़ेबाजी ज्यादा देखने को मिली। साथ ही वे मुझे प्रामाणिक भी नहीं लगे। अत: मैंने उनका साथ भी छोड़ दिया।

कालेज में विद्यार्थियों की ओर से ही एक कार्यक्रम हुआ 'अधिनायकवादी व्यक्तित्व का प्रस्तुतीकरण' (Presentation of Dictator's Personality)। इसमें हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन को प्रस्तुत करना था। मैं इसमें हिटलर बना — उसी की वेशभूषा पहनकर उसी की नकल। इसमें मुझे प्रथम घोषित किया गया।

हमारा पांच-छ: लड़कों का ग्रुप बन गया था। एक तरह से हम पांच-छ: कालेज के दादा थे। इसलिए कोई भी नया छात्र हम लोगों से पूछे बिना कालेज नहीं आ सकता था। सब आकर पहले हमसे मिलते थे। लेकिन दादागिरी के साथ-साथ हम सब पढ़ने में भी होशियार थे। एक लड़की थी, जो हमेशा परीक्षा में प्रथम आती थी। वह प्रिंसीपल की भी चहेती थी। परीक्षा से एक महीना पहले ही मैंने कह दिया, इस बार प्रथम मैं आऊंगा। मेरे साथियों ने कहा — यह संभव नहीं है, प्रथम वह लड़की ही आएगी। मैंने कहा — नहीं, इस बार मैं आऊंगा। मैंने डट कर पढ़ाई की और प्रथम मैं ही आया।

एम०ए० में प्रवेश

एम.ए. के लिए मैंने एफ.सी. कालेज में प्रवेश लिया। मैंने इतिहास विषय लिया। इतिहास के दो पर्चों की कक्षा विश्वविद्यालय में लगती थी। शेष पर्चों की कक्षा एफ.सी., दयालसिंह व एस.डी. कालेजों में लगती थीं। इसलिए अलग-अलग पर्चों की कक्षा के लिए इन सभी कालेजों में जाना होता था।

मेरा एक मित्र एक सरदारजी के बेटे को ट्यूशन पढ़ाता था — ४००/- रूपये में। एक बार उसने मुझे कहा कि मैंने एम.ए. की तैयारी करनी है, इसलिए यह ट्यूशन तुम ले लो। मैंने कहा कि मुझे भी तो तैयारी करनी है, मैं नहीं लूंगा। वह बोला — नहीं, नहीं, यह तुम्हारे लिए लाभकारी रहेगी, तुम ले लो, क्योंकि अब मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ। वह मुझे सरदार जी के पास ले गया। वे बहुत सम्पन्न थे। उनकी बहुत बड़ी कोठी थी। ४००/— रूपये उनके लिए कुछ भी नहीं थे। वे लाहौर के आनरेरी मेजिस्ट्रेट भी थे। सरदार जी ने मुझे कहा कि तुम हमारे बेटे को पढ़ाओ, इसके तुम्हें ४००/— रूपए प्रतिमास देंगे। मैंने कहा कि मुझे ४००/— रूपये नहीं चाहिएं। मेरी जरूरत केवल १००/— रूपये की है, इसलिए मैं केवल १००/— रूपये ही लूंगा। लेकिन मेरी एक शर्त है कि मैं इसे क्या पढ़ाता हूँ, कैसे पढ़ाता हूं, इसके बारे में आप मुझे कभी कुछ नहीं

कहेंगे, मैं इसे अपने ढंग से ही पढ़ाऊँगा। सरदार जी ने कहा, "मंजूर"।

मैंने उसे पढ़ाना शुरू कर दिया। वह सिनेमा बहुत देखता था। पहले तो मैंने उसका सिनेमा बन्द करा दिया। उसकी और भी कुछ खराब आदतें थीं, वे ठीक कर दीं। सरदार जी यह देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने यहाँ ही एक कमरा मुझे रहने को दे दिया। उस वर्ष परीक्षा में वह लड़का प्रथम आया।

संघ प्रवेश

एक बार मैं कालेज पुस्तकालय में अखबार पढ़ रहा था। अखबार में गान्धी जी का एक वक्तव्य था, "मुसलमान स्वभाव से ही गुण्डा है और हिन्दू कायर।" 'हिन्दू कायर है' यह पढ़कर ही मुझे गुस्सा आ गया और मैं गुस्से में ही बड़बड़ाया, "गांधी जी का दिमाग खराब हो गया है, हिन्दू को कायर कहता है।" पास ही एक और लड़का भी अखबार पढ़ रहा था। मैं जब अखबार पढ़ कर जाने लगा तो वह बोला, "आपका नाम क्या है ?" मैंने कहा, "रामसिंह"। वह बोला, "हम दोनों के विचार मिलते हैं।" मैंने कहा, "कौन से विचार ? मैं तो आपको जानता भी नहीं।" वह बोला, "वही, जो आपने अखबार पढ़ते हुए बोले थे, मेरे भी वही विचार हैं।"

ये सज्जन थे बलराज मधोक। वे डी.ए.वी. कालेज के छात्र थे और इतिहास में एम.ए. कर रहे थे। यह हमारा प्रथम परिचय था। इस बातचीत में बलराज मधोक ने मुझे कहा कि अमुक मन्दिर के पास कुछ लोग रोज इकट्ठे होते हैं, खेलते हैं; वे अच्छे लोग हैं, तुम वहां जाया करो। मैंने कहा, "मैंने ऐसे बहुत देखे हैं, यूथ कांग्रेस देखी है, कम्युनिस्ट देखे हैं, और भी कई देखे हैं, सब छोड़ दिए हैं। सब खाने-पीने के धन्धे हैं, अब मैं नहीं जाता कहीं।" बलराज ने कहा, "नहीं, वहाँ ऐसा नहीं है, कभी जाकर देखना।" लेकिन मेरा शाम का तो सारा समय हाकी ग्राउंड में ही निकल जाता था, इसलिए और कहीं जाने का प्रश्न ही खड़ा नहीं हुआ।

मैं अपनी कालेज टीम का राईट फारवर्ड था। हमारी टीम में जो फुलबैक था, वह बहुत जोर की हिट लगाता था। इतनी जोर से हिट लगरतर कि हमारी डी से गेंद सीधे प्रतिपक्षी डी में चली जाती थी। एक बार उसने जोर की हिट लगाई, लेकिन हिट लगाते समय उसके हाथ पता नहीं कैसे मुड़े कि हाकी का ऊपर का किनारा उसके हृदय स्थल के मध्य में जाकर लगा और उसकी वहीं मृत्यु हो गई। उसके कुछ दिन बाद एक और खिलाड़ी ने हिट लगाने के लिए हाकी ऊपर उठाई (जोकि नियमानुसार गलत था) और पूरी ताकत से हिट लगाई तो हाकी के बीच का जोड़ टूट गया और उसका ब्लेड, जो अंग्रेजी के 'वी' आकार का होता है, वह जाकर एक और खिलाड़ी के पेट में घुस गया।

ये दो घटनाएं होने से मेरा मन हाकी से उचट गया। अत: सोचा कि बलराज मधोक ने जहाँ के लिए कहा था, वहाँ जाकर देखता हूँ। मैं वहाँ के लिए चला तो, लेकिन

आदत के अनुसार मेरे पैर हाकी ग्राउण्ड को चल पड़े। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ और मैं हाकी ग्राउण्ड ही पहुंचा। तीसरे दिन मैं दृढ़ निश्चय से चला और ठीक उसी मन्दिर के पास पहुंच गया। वहाँ कुछ लोग खेल रहे थे और पास ही एक भगवा झण्डा लगा हुआ था। मुझे वहाँ खो-खो का खेल ज्यादा पसन्द आया। बलराज मधोक ने कभी संघ का नाम नहीं लिया था, यद्यपि पिछले छः महीने में कई बार उससे भेंट हो चुकी थी।

इस प्रकार मैं सितम्बर १९४१ में संघ शाखा में जाने लगा। शाखा में एम.ए. का विद्यार्थी केवल मैं ही था। शेष सब बी.ए. एवं बी.एस.सी. के विद्यार्थी थे (बलराज मधोक की शाखा दूसरी थी)। मैं कालेज में कक्षा के बाद पुस्कालय में बैठकर पुस्तकें पढ़ता रहता था, इसलिए शाखा में आधा घण्टा देर से आता था। एक दिन शाखा कार्यवाह ने सब को सूचना दी कि सबको समय से दस मिनट पूर्व संघ स्थान पर पहुंच जाना चाहिए। जो देर से पहुंचेगा, उसे दण्डित किया जाएगा। मैंने बाद में कहा कि मैं कल से नहीं आऊंगा, क्योंकि मुझे कालेज के बाद पुस्ताकलय में जाना होता है, अतः उससे पूर्व मैं नहीं आ सकता। कार्यवाह बोले यह सूचना तुम्हारे लिए नहीं है, बी.ए. वालों के लिए है। इस प्रकार मेरा शाखा में आधा घण्टा देर से पहुंचना जारी रहा।

एक बार कुछ शाखाओं का सामूहिक कार्यक्रम था। उस कार्यक्रम के बाद बलराज मधोक कुछ लोगों को अपने घर जलपान हेतु ले गए। मुझे भी ले गए। वहाँ प्रो. धर्मवीर जी से उन्होंने मेरा परिचय कराया, लेकिन दो और भी वहाँ बैठे थे, उनसे नहीं कराया। वास्तव में वे थे माधवराव मुले और राजाभाऊ पातुरकर।

संदेह के घेरे में

अक्तूबर मास में विजयादशमी का कार्यक्रम सार्वजनिक रूप से होना था। सूचना दी गई कि जनसाधारण को भी प्रयत्न पूर्वक उसमें लाया जाए। मैंने सरदार जी को कहा। वे आ गए। आनरेरी मैजिस्ट्रेट के नाते उन्हें दो-तीन पुलिस वाले भी सुरक्षा गार्ड के रूप में मिले हुए थे; जोकि उनके साथ ही चलते थे। विजयदशमी उत्सव में मैं व पुलिस वाले उनके साथ आए थे। इससे कुछ लोगों को मेरे ऊपर शक हो गया कि कहीं मैं सी. आई.डी. का आदमी तो नहीं।

गणवेष की बात आई। उन दिनों गणवेष की चीजें नागपुर से आती थीं। निक्कर व कमीज भी वहीं से सिल कर आती थीं — दस रूपये में। मैंने दस रूपए देकर गणवेष ले ली। शाखा में अपने और मित्रों को लाने की बात हुई तो मैं अपने १४-१५ साथियों को ले गया। इस पर कार्यवाह ने कहा — तुम सबको इकट्ठा लाए हो, यह ठीक नहीं है।

इस प्रकार मैं जितना अधिक सक्रिय होने की कोशिश करता था, उतना ही मेरे प्रति संदेह बढ़ता जा रहा था (इसका पता मुझे बाद में लगा)। किसी छात्र ने यह भी बता दिया था कि मैं एस.डी. कालेज के एक कार्यक्रम में हिटलर बना था। अतः मेरी उपेक्षा की

जाने लगी। मुझे किसी कार्यक्रम या बैठक में भी बुलाया जाना बन्द कर दिया।

बात विभाग कार्यवाह डा. हरबंस लाल तक पहुंची। वे पशु-चिकित्सक थे। सब लोग उन्हें डंगर डाक्टर कहते थे। एक बार वे मेरे कमरे में आए और कहा कि आज रात मैं तुम्हारे पास ही रहूंगा। मैंने कहा — बहुत अच्छी बात है। उन्होंने मेरे से सारी जानकारी ली। सरदारजी के बारे में भी और कार्यक्रम में पुलिस के आने के बारे में भी। मैंने उन्हें बताया कि वे आनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं, वे जहां भी जाते हैं, पुलिस वाले उनके साथ ही चलते हैं। जब वे कार्यक्रम में आए तो उनके साथ के पुलिस वालों ने भी उनके साथ ही आना था। यह तो स्वाभाविक है, इसमें कोई अन्य बात नहीं। इस तरह मेरे बारे में सन्देह के प्रति मुझे डा. हरबंस लाल से ही पता लगा। फिर उन्होंने उन १५ विद्यार्थियों के विषय में जानकारी ली, जिन्हें मैं शाखा में लाया था। एक-एक के बारे में पूरी जानकारी मैंने उन्हें दी। फिर वे बोले — इनमें से पाँच ऐसे नाम बताओ, जिन पर तुम्हें पूरा विश्वास हो। मैंने बता दिए। उन्होंने उनमें से भी दो छांटे और कहा कि पहले इनको शाखा में लाओ।

क्षमता की परीक्षा

इसके बाद अन्य कार्यकर्ताओं को भी मेरे बारे सन्देह दूर हुआ। मुझे शाखा में सह गटनायक बना दिया गया। कुछ दिन बाद गटनायक। हमारी शाखा की संख्या एक सौ रहती थी। मेरे गट की दस थी। कुछ दिन बाद मेरा गट तोड़ दिया गया और उसके दो गट बना दिए। उन दो में से एक गट मेरे जिम्मे दिया गया। मैंने उस गट की संख्या कुछ दिन में ही दस कर दी। फिर इस गट को तोड़ दिया गया और उसका एक भाग नए गट के रूप में मुझे दिया गया। मैंने उसकी संख्या भी दस कर दी। अपने ट्यूशन वाले लड़के को भी मैंने स्वयंसेवक बना दिया।

कुछ दिन बाद मुझे एक शाखा दे दी गई। मैंने कहा कि मुझे तो अनुभव नहीं हैं, मैं शाखा कैसे चला सकूंगा। तब मुझे बताया गया कि तुम्हारे गट को दो बार तोड़ा गया और तुमने दोनों बार नए गट की संख्या दस कर दी। वास्तव में गट तोड़कर तुम्हारी परीक्षा ली गई थी कि तुम्हारे में कितनी क्षमता है। इसलिए हमें विश्वास है कि तुम यह शाखा भी चला लोगे।

एम०ए० की परीक्षा

१९४१ में विश्वयुद्ध चल रहा था। जर्मन जीत रहे थे, इंग्लैंड हार रहा था। सुभाष चन्द्र बोस भारत से बाहर निकल चुके थे। भारत में यह आम वातावरण था कि अब अंग्रेज जाने वाले हैं। ऐसी स्थिति में मेरे मन में विचार आया कि अंग्रेज को बस एक धक्का देने की जरूरत है, अत: क्या करना एम.ए. करके। यह सोच कर मैंने परीक्षा देने का विचार छोड़ दिया और पढ़ाई से विमुख हो गया। परीक्षा से एक महीना पूर्व डा. हरबंस लाल को पता चला। वे मेरे पास आए और कहा कि परीक्षा जरूर देनी है। मैंने

कहा — ठीक है, आप कहते हैं तो दे दूंगा। लेकिन मैं बस पास भर हो पाऊँगा। वे बोले — नहीं, पास भी अच्छे अंको से होना है। मैंने कहा — अच्छी बात है। केवल एक महीना बाकी था। मैं रात-रात भर जाग कर पढ़ता था। सभी विषयों के नोट्स बनाए और परीक्षा दी। मेरी विश्वविद्यालय में चतुर्थ पोजीशन आई। बलराज मधोक की तृतीय पोजीशन थी। यह वर्ष १९४२ था।

संघ प्रचारक

एम.ए. की परीक्षा के बाद मुझे संघ शिक्षा वर्ग में चलने के लिए कहा गया। मैंने मना कर दिया। मेरे एक स्वयंसेवक मित्र ने मना करने का कारण पूछा तो मैंने कह दिया कि वहाँ जाने के लिए मेरे पास ६० रूपये नहीं हैं। वह बोला — पैसे मैं दे दूंगा, तुम चलो जरूर। मैं वास्तव में वकील बनना चाहता था। इसके लिए मैं एल.एल.बी. में प्रवेश लेना चाहता था। एल.एल.बी. के फार्म उन्हीं दिनों भरे जाने थे। अगर मैं शिक्षावर्ग में जाऊँगा तो फार्म नहीं भर पाऊँगा, मेरे मन में वास्तव में यह बात थी। इसलिए मैंने पैसे न होने का बहाना बना दिया था। 'पैसे मैं दूंगा' कहकर उसने मेरे बहाने को खत्म कर दिया। अब मेरे पास कोई चारा नहीं था। मैंने उसे सच-सच बता दिया कि मैंने तुमसे झूठ बोला कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, असल में 'लॉ' का फार्म भरना चाहता हूं, इसलिए यह झूठ बोला। लेकिन अब मैं संघ शिक्षा वर्ग में चलूंगा।

संघ शिक्षा वर्ग में ही मैंने दो वर्ष के लिए प्रचारक निकलने का निश्चय कर लिया। उस वर्ष लाहौर से ५८ प्रचारक निकले। यह लाहौर का प्रथम बैच था। इनमें से बलराज मधोक को श्रीनगर, भाई महावीर को जालन्धर विभाग, कैलाशचन्द्र को अमृतसर विभाग, गंगाविष्णु को लायलपुर विभाग, डा. हरबंस लाल को रावलपिण्डी विभाग, चमन लाल को मण्डी रियासत, दुर्गादास को होशियारपुर जिला, डा. ब्रह्मदत्त बाली को गुजरात जिला तथा मुझे कांगड़ा जिला का दायित्व सौंपा गया। शहीद महाशय राजपाल के पुत्र दीनानाथ मल्होत्रा (राजपाल एण्ड संस वाले) तथा बद्रीदास भी इसी बैच में थे। हम सब एम.ए. करके प्रचारक निकले थे। इनके अतिरिक्त देवेन्द्र शास्त्री (जम्मू वाले), देवेन्द्र शास्त्री (देहरादून वाले), सीताराम कविराज, जनार्दन प्रतिहस्त आदि १४ प्रचारक शास्त्री करके निकले थे।

कांगड़ा में

मैं कांगड़ा पहुंचा। वहां मेरा कोई परिचय नहीं था। एक सज्जन के नाम मुझे लाहौर से चलते समय परिचय-पत्र दिया गया था। मैं उनके पास गया, वह परिचय—पत्र उन्हें दिया। उन्होंने कहा कि भोजन तो तुम हमारे यहां कर लिया करो, लेकिन रहने की व्यवस्था हमारे यहां नहीं हो सकेगी। मैं आर्य समाज मन्दिर में जाकर ठहर गया और

भोजन उन्हीं के घर करने लगा। बाद में डी.ए.वी. स्कूल के प्रधानाचार्य से मिला। उन्होंने कहा कि स्कूल का चपरासी कुछ दिन के लिए बाहर गया हुआ है। उसका कमरा खाली है। जब तक वह नहीं आता, तब तक तुम वहां रह लो। मैंने आर्य समाज मन्दिर से अपनी चटाई उठाई और उस कमरे में चला गया। गुप्तगंगा पर जहां आज संघ कार्यालय है, तब वहां मैदान सा ही था, कोठी नहीं थी। उसी मैदान में शाखा शुरू कर दी।

सनतकुमार पुरी वकील थे। वे कांगड़ा में होमगार्ड के कमाण्डर थे। मैंने उन्हें पकड़ा और कहा, "तुम तो केवल लाठी लिए ही रहते हो, हम तुम्हें भाला और तलवार चलाना भी सिखाएंगे।" वे शाखा में आने लगे। उनके साथ पांच-सात वकील और आने लगे। अच्छी शाखा हो गई। बंसीलाल को कार्यवाह बनाया।

मण्डी से लाला कन्हैया लाल भी १९३८ से संघ शिक्षा वर्ग में गए थे, किन्तु मण्डी में अभी तक शाखा नहीं थी। वहां शाखा शुरू करवाई। भवारना में शाखा सत्यप्रकाश से शुरू करवाई। फिर धर्मशाला में भी शाखा शुरू हो गई। कुछ दिन बाद माधवराव जी ने तीन-चार प्रचारक और दे दिए। परिणामस्वरूप साल भर में जिला में १५-१६ शाखाएं हो गईं।

संघ की आर्थिक स्थिति

जिनके यहां मैं भोजन करता था, उन्होंने एक दिन कहा कि मेरी पत्नी अब कहीं जाने वाली है, अत: अब भोजन यहां नहीं हो सकेगा। लाहौर से चलते समय मुझे दस रूपये दिए गए थे, वे अब तक मेरे पास थे। मैंने चार रूपए एक महीने के लिए होटल वाले के पास जमा करवाए और वहां भोजन करने लगा।

कुछ दिन बाद मैंने अमृतसर में शास्त्री बलजीत सिंह जी, जो कि अमृतसर के कार्यवाह थे, को पत्र लिखा कि मेरे पैसे खत्म हो गए हैं, पैसे भेजो। पत्र का कोई जवाब नहीं आया। दूसरा लिखा, तीसरा लिखा, कोई जवाब नहीं आया। मैं बहुत परेशान था। आखिर एक दिन शास्त्री जी स्वयं आ गए। उन्होंने बताया कि आपके तीनों पत्र मिले। "फिर आपने जवाब क्यों नहीं दिया?" मैंने पूछा। वे बोले — "जवाब क्या देते ? हमारे पास भी पैसे नहीं थे। हमने लाहौर को लिखा, उनके पास भी पैसे नहीं थे। उन्होंने नागपुर को लिखा। वहां से अब कुछ पैसे आए हैं और मैं आपको देने आया हूँ।" उन दिनों यह स्थिति थी।

उधर स्कूल के चपरासी के आने का भी समय हो रहा था। मैं मन ही मन भगवान से यही प्रार्थना कर रहा था कि वह अभी न आए, क्योंकि मेरे पास पैसा न होने के कारण मैं दूसरा ठिकाना बना नहीं सकता। अब शास्त्रीजी कुछ पैसे दे गए तो बंसीलाल की दुकान के ऊपर का कमरा दो रूपए महीने के किराए पर ले लिया। वहीं गुरूदक्षिणा कार्यक्रम हुआ। कांगड़ा की पहली गुरुदक्षिणा १३० रुपये हुई थी।

कम्युनिस्टों द्वारा चरित्र–हनन की कोशिश

१९४३ में थुरल, डरोह आदि में शाखा हो गई थी। १९४३ के जून मास में लाहौर में जिला प्रचारकों की बैठक थी। उसी दौरान जोरदार वर्षा हुई और पठानकोट तथा कांगड़ा के बीच के कई लकड़ी के पुल बह गए। बसों का आना जाना भी बंद हो गया। परिणामस्वरूप मैं लगभग डेढ़–दो महीने तक कांगड़ा वापिस न आ सका।

बस, कम्युनिस्टों ने इसका फायदा उठाया और मेरे बारे में अप्रचार कर दिया कि रामसिंह एक लड़की को भगा कर ले गया है। चमनलाल जी तब तक कांगड़ा पहुंच चुके थे। उन्होंने बताया कि लकड़ी का पुल टूटने के कारण रामसिंह नहीं आ पाया। लेकिन कम्युनिस्टों को तो मौका चाहिए था, उनका अप्रचार कार्यक्रम जारी रहा।

घुड़कड़ी में एक सुनार था जगदीश नाम का। उसकी दुकान पर कांग्रेस–कम्युनिस्टों का अड्डा प्राय: जमता था। एक दिन कांगड़ा की प्रभात शाखा के कार्यवाह सोहन सिंह, जो कि कांगड़ा कचहरी का कर्मचारी था, जगदीश की दुकान पर पहुंच गया। उस समय वहां तीन–चार और भी कम्युनिस्ट बैठे थे। सोहन सिंह को देखकर वे बोले – "देखो, वो तुम्हारा राम सिंह लड़की को भगा कर ले गया है।" सोहनसिंह बोला, "हाँ, मैं इसीलिए यहां आया हूं। मैंने कांगड़ा के एक–एक घर में जाकर पूछा है कि आपके घर से कोई लड़की तो नहीं गई ? सब ने कहा कि नहीं। अब मैं तुम्हारे पास आया हूं। जब और कहीं से लड़की नहीं भागी तो जरूर तुम्हारे ही घर से कोई लड़की भागी होगी। बताओ, रामसिंह तुम्हारी कौन सी बहन को भगा कर ले गया है ?" इस पर जगदीश बिफर पड़ा। वह और उसके साथी सोहनसिंह की ओर लपके। सोहन सिंह इस स्थिति के लिए पहले से ही तैयार होकर आया था। इसलिए वह एक लाठी लेकर भी आया था। उस लाठी से सोहन सिंह ने उन सबकी अच्छी तरह धुनाई कर दी। वे सब हाथ जोड़कर उससे माफी मांगने लगे। सोहन सिंह ने कहा, "माफी मैं तब दूंगा, जब तुम असली बात बताओगे।" इस पर जगदीश ने बताया कि राम सिंह के कहने पर हमारे नेता कामरेड परसराम की पत्नी सरला को भवारना के सत्य प्रकाश ने अपने घर से निकाल दिया था। हम रामसिंह से इसका बदला लेना चाहते थे, इसलिए उसके बारे में हमने लड़की भगाने की अफ़वाह फैलाई।

सत्यप्रकाश गोयल भवारना के कार्यकर्ता थे। वहां पर शाखा उन्होंने ही शुरू की थी। कामरेड परसराम की पत्नी सरला कम्युनिस्ट पार्टी की महिला कार्यकर्त्री थी। उसने अनेक महिलाओं से अच्छे सम्बन्ध बना लिए थे। इनमें सत्यप्रकाश की पत्नी भी थी। उसके पिता कांग्रेस नेता थे, वह भी कांग्रेसी थी। कांग्रेस पर उन दिनों प्रतिबन्ध सा था। कम्युनिस्टों ने कांग्रेस पर कब्जा कर रखा था, इसलिए वह सरला के प्रभाव में थी।

एक दिन मैं जब भवारना गया तो सत्यप्रकाश ने मुझे बताया कि लाहौर में

कम्युनिस्टों का कोई ट्रेनिंग कैम्प लगने वाला है। सरला मेरी पत्नी को भी उसमें चलने के लिए कह रही है और वह चलने के लिए तैयार भी हो गई है। आज सरला हमारे यहां ही सोएगी और कल सुबह ये दोनों यहां से चली जाएंगी। आपका क्या विचार है — उसे भेजूं या नहीं ? मैंने उससे कहा, "पिछली बार कांशीराम पहाड़ी गान्धी (डाडासीबा, तहसील देहरा) की पत्नी को ये लोग ले गए थे, वह अब तक नहीं लौटी। अब निर्णय तुम्हें करना है।"

सत्यप्रकाश ने इस पर काफी सोचा। सोचते-सोचते वह रात को एकाएक उठा और अपनी पत्नी के कमरे का दरवाजा खटखटाया, जहां सरला भी सो रही थी। दरवाजा खुलने पर उसने पत्नी को कहा कि सरला को अभी यहां से निकाल दो। सरला को मजबूरन वहां से जाना पड़ा। कम्युनिस्टों ने सरला के निष्कासन का कारण मुझे माना, क्योंकि मैं उस दिन भवारना में ही था। इसलिए मेरे विरुद्ध वह अपप्रचार किया। किन्तु सोहनसिंह से पिट जाने के बाद अपप्रचार भी बन्द हो गया।

माधवराव जी ने जिन प्रचारकों को मेरे पास भेजा था, उनमें से एक को भवारना में रहना था। वह सत्यप्रकाश के घर पर ही रहता था। एक दिन उसका पत्र आया कि सत्यप्रकाश की पत्नी मेरे से बहुत अनाप-शनाप प्रश्न करती रहती है, मैं यहां नहीं रहूंगा। मैं तुरन्त भवारना पहुंचा। उसकी पत्नी से मिला। मेरे से उसने कोई अनुचित प्रश्न नहीं किया। लेकिन जो भी उसके प्रश्न थे, मैंने उनके उत्तर उसको दे दिए। उसके बाद उस प्रचारक के रहने की व्यवस्था वहीं एक धर्मशाला में कर दी।

अमृतसर विभाग प्रचारक

मैं दो वर्ष के लिए प्रचारक निकला था। उसके बाद मेरी योजना कानून की पढ़ाई करने की थी। जब दो वर्ष होने को आए तो मैंने माधवराव जी को कहा। वे चुप रहे, कुछ बोले नहीं। पश्चात् मैंने स्वयं ही चिन्तन किया। मन ने कहा कि अपनी कथनी और करनी में अन्तर नहीं चाहिए। यह सोच कर मैंने प्रचारक से वापिस न जाने का निश्चय किया। लाहौर जाकर माधवराव जी को अपने इस निश्चय से अवगत कराया। इस बातचीत के एक घण्टा बाद ही माधवराव जी ने मुझे अमृतसर विभाग का दायित्व सौंप दिया। यह बात सन् १९४४ के अन्त की है।

माधवराव जी ने मुझे कहा कि तुम अपना केन्द्र अमृतसर की बजाए गुरदासपुर को बनाओ। इसका कारण यह था कि अमृतसर में दो पार्टियां बन गईं थीं — एक सरदार वतन सिंह की और दूसरी हरबंस लाल भल्ला की। भल्ला अपने आप को कुछ ज्यादा ही समझने लग पड़े थे। इसी पार्टीबाजी से तंग आकर मेरे से पूर्व विभाग प्रचारक कैलाशचन्द्र छः-सात महीने में ही वापिस चले गए थे।

मैंने छः महीने तक अमृतसर में कोई बैठक नहीं ली, कोई चर्चा नहीं, कोई

बौद्धिक नहीं। केवल शाखा में जाता रहा और स्वयंसेवकों से परिचय करता रहा। हरबन्स लाल भल्ला से मैं मिला ही नहीं। एक बार एक स्वयंसेवक ने मुझे आकर कहा कि भल्ला जी कह रहे थे कि रामसिंह मेरे से मिले ही नहीं। मैंने उसे कहा कि उन्हें कहो कि मुझे कार्यालय आकर मिलें। भल्ला को यह अहंकार हो गया था कि उसके बिना अमृतसर में संघ का काम हो ही नहीं सकता, इसलिए कोई भी संघ का प्रचारक आएगा तो सबसे पहले उसे मिलेगा। मैं जब कई दिनों तक उससे नहीं मिला तो उसने वह संदेश भिजवाया था कि मैं उससे आकर मिलूं। इसलिए उसी स्वयंसेवक के द्वारा मैंने उसे यह सन्देश भिजवाया कि जिसको मिलना हो वह मुझसे कार्यालय में आकर मिले। उन दिनों लारेन्स रोड पर एक कमरा किराए पर लिया हुआ था, वही कार्यालय था। भल्ला वहां आया। मैं उससे बड़े प्रेम से मिला। उसके बाद भी मैंने उससे सम्बन्ध बनाए रखा। कभी उसके बारे में किसी से टिप्पणी नहीं की।

१९४४ में अमृतसर की आबादी पौने तीन लाख थी। लारेंस रोड, पुतलीघर व छरहट्टा भी आबादी वाले क्षेत्र थे, लेकिन उन के बीच के क्षेत्रों में आबादी नहीं थी। वे खाली थे। शाखाएं प्रभात की छ: थीं। बलजीत सिंह नगर कार्यवाह थे। वे डी.ए.वी. स्कूल में अध्यापक थे। सरदार वतनसिंह प्रभात कार्यवाह थे। उनकी नमक की भट्टियां थीं।

शाखाएं राम भरोसे चल रही थीं। उनमें कोई दम-खम नहीं था। माधवराव जी वहां के बारे में बहुत चिन्तित थे। छ: महीने के बाद मैंने माधवराव जी से बात की, "मैं अमृतसर में बोल्ड स्टैप लेने वाला हूँ। कोई अगर मेरी शिकायत करने आपके पास आए तो आप उसे यही कहें कि रामसिंह से ही बात करो।" माधवराव जी ने पूछा कि तुम्हारी क्या योजना है ? मैंने बताया – "मैं वहां के सब अधिकारियों को हटा देने वाला हूँ। सब शाखाएं बन्द करके केवल तीन शाखाएं ही चलाऊंगा। आप इसकी अनुमति दीजिए।" माधवराव जी ने अनुमति दे दी।

मैंने अमृतसर नगर की बैठक बुलाई और कहा कि आज से यहाँ कोई अधिकारी नहीं है। मैं ही संघचालक हूँ, मैं ही कार्यवाह हूँ और मैं ही प्रचारक हूँ। अत: यहां का कोई भी काम मेरे से पूछ कर ही होगा। अब यहां केवल तीन ही शाखाएं चलेंगी – हिन्दू सभा स्कूल की, डी.ए.वी. स्कूल की और रामानन्द बाग की। बाकी सब शाखाएं बन्द। ये तीन शाखाएं अच्छी और व्यवस्थित चलें। इनकी चालीस-चालीस की औसत संख्या चाहिए। हिन्दू सभा स्कूल शाखा वतन सिंह जी के जिम्मे, डी.ए.वी. स्कूल शाखा बलजीत सिंह शास्त्री के जिम्मे और रामानन्द शाखा हरबंस लाल भल्ला के जिम्मे। इन्हीं से आगे अन्य शाखाएं बढ़ाएंगे।

भल्ला के घमण्ड को तोड़ना था। कुछ दिन बाद उसे मैंने कहा कि आप लारेन्स रोड़ में अलग से शाखा शुरू करो और एक महीने के अन्दर उसकी संख्या चालीस हो

जानी चाहिए। तब तक आपकी रामानन्द शाखा का मैं भी ध्यान रखूंगा। उसने लारेंस रोड पर शाखा शुरू कर दी। कुछ दिन बाद बोला कि यहां ४० संख्या नहीं हो सकती। यहां के कार्यकर्ता अच्छे नहीं हैं। मैंने उसे कहा, "कोई और यदि ४० कर दे तो ?" वह बोला, "यह सम्भव ही नहीं है रामसिंह जी। यह रामानन्द बाग नहीं है जहां खूब संख्या हो जाएगी, यह लारेंस रोड़ है।" मैंने कहा, "कोई दूसरा यदि एक महीने में ४० कर दे तो ?" वह बोला, "मैं अपनी मूंछ कटा लूंगा।" मैंने कहा — "मूंछ-वूंछ कटाने की जरूरत नहीं है, दूसरा कार्यकर्ता तो आपकी सहायता ही करेगा, इसमें मान या अपमान का प्रश्न ही नहीं है।" वह फिर बोला, "शर्त लगा लीजिए, यह नहीं हो सकता।"

मैंने एक अन्य कार्यकर्ता से बात की। उसने कहा कि एक महीना तो क्या, मैं १५ दिन में ही संख्या ४० कर दूंगा। उसने २०-२५ दिन में ४० संख्या कर दी। भल्ला मेरे पास आया और बोला, "रामसिंह जी, आप जीते और मैं हारा।" मैंने उसे कहा, "इसमें जीत हार का सवाल ही नहीं हैं, अब आप शाखा को और आगे बढ़ाईए।" वह बोला, "नहीं, नहीं, अब आप यह शाखा उसी के पास रहने दीजिए। मैं हार गया।" इसी बीच उसके ग्रुप के लोगों से मैंने अच्छे सम्बन्ध बना लिए थे और वे भी धीरे-धीरे शाखाओं में आने लगे। वह अकेला ही रह गया।

सायंकाल शाखाएं भी बहुत अच्छी हो गईं। लारेंस रोड़ पर मैडिकल कॉलेज की शाखा थी। डा. इन्द्रपाल वर्मा, डा० बलदेव प्रकाश और डा० दुर्गादत्त ज्योति मैडिकल कॉलेज के होस्टल में रहते थे। १९४५ के अन्त तक इस शाखा की संख्या ७० तक पहुंच गई।

डा० बलदेव प्रकाश मेडिकल कॉलेज शाखा के कार्यवाह थे। डा० दुर्गादत्त ज्योति हिन्दू सभा कॉलेज की शाखा के कार्यवाह थे। शाखा की संख्या १२० औसत रहती थी। इसी से अमृतसर की अन्य सांयकालीन शाखाएं निकलीं। डा० इन्द्रपाल नगर सायं प्रमुख थे। अमृतसर में उन दिनों लगभग १०० अखाड़े थे। बहुत से स्वयंसेवक इन अखाड़ों में से ही संघ में आए थे। दारा सिंह भी वहीं स्वयंसेवकों के साथ कुश्ती करता रहा है। बाद में इसी दारासिंह ने चीनी पहलवान किंग कांग को पछाड़ा था।

कुश्ती, दण्ड संचालन और अनुशासन — इन तीनों पायों पर अमृतसर का संघ-कार्य खड़ा हुआ। जिसके जिम्मे जो काम दिया, वह बहुत ही जिम्मेदारी से उसे निभाता था। भय नाम की चीज़ स्वयंसेवकों के पास फटक नहीं पाती थी। परिणामस्वरूप कुछ ही समय में अमृतसर में शाखाओं का जाल सा फैल गया और दैनिक उपस्थिति तीन हजार रहने लगी। इन्हीं सामान्य स्वयंसेवकों ने विभाजन—काल में ऐसे असामान्य कार्य कर दिखाए कि सैन्य अधिकारी भी दांतों तले उंगली दबा लेते थे।

कार्य के प्रति अटूट श्रद्धा

मोहन राव भागवत
सरसंघचालक,
हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर

ठाकुर जी के जीवन में जो तपस्या रही है उससे हमें सीख मिलती है। अनुशासित जीवन और कर्म साधना के तपस्या बल से ही ठाकुर जी को न तो किसी की सहायता की आवश्यकता थी और न ही वह किसी की सहायता लेना पसन्द करते थे। हम सब लोग जानते हैं कि हिमाचल में चढ़ना-उतरना पड़ता है। ४ अप्रैल, २००९ को मैं नेरी (हमीरपुर) गया हुआ था। हम सब लोग वहां सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। ठाकुर साहब भी साथ थे। एक कार्यकर्त्ता ने ठाकुर साहब को सहारा देने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। ठाकुर साहब ने उस कार्यकर्त्ता के हाथ को इतने जोर से झटका दिया कि वह कार्यकर्त्ता घबरा गया। फिर ऐसी दृष्टि से उस कार्यकर्त्ता को देखा कि वह सकुचा गया। बाद में मैंने उस कार्यकर्त्ता को कहा भाई जब हम इस उमर में होंगे तो यह सहायता की जरूरत मुझे और आपको हो सकती है, मगर ठाकुर जी को नहीं है। हमें और आप सब को उनके जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत है।

ठाकुर जी के जीवन में दूसरी बात यह रही कि किसी भी परिस्थिति में ध्येय को नहीं छोड़ना और अपने ध्येय की दिशा में सतत् प्रयास करते रहना। अपने शरीर को साधते हुए, जीवन के उच्च आदर्श का आचरण करते हुए, वीरतापूर्वक ध्येय के प्रति निष्ठापूर्वक लगे रहना ठाकुर जी के जीवन का वैशिष्ठ्य रहा है।

हमको भी ऐसा ही काम करना है। काम करना, मात्र ऐसा सोचना इससे बात नहीं बनती, प्रत्यक्ष काम करना पड़ता है। ठाकुर साहब ऐसा कैसे कर पाए? यह उनके जीवन में झांकने से पता चलता है। ठाकुर साहब कांगड़ा में प्रचारक थे। वहां एक महात्मा जी थे, उनके पास जमीन थी, उस जमीन को वे किसी अच्छे काम के लिए देना चाहते थे। महात्मा जी ने अपने कुछ घनिष्ठ लोगों से बात की। यह जमीन किसे दी जाए? महात्मा जी राष्ट्र प्रेमी थे। उन्हें भी संघ कार्य के बारे में जानकारी थी। सबकी राय हुई कि यह जमीन संघ के लिए ही दी जाए तथा इस बारे में ठाकुर साहब से बात की जाए। महात्मा

जी ने ठाकुर जी से इस जमीन को संघ के लिए देने की बात की। ठाकुर साहब बोले, ''हमें इतनी जमीन की आवश्यकता नहीं है। जिसे इतनी बड़ी जमीन की आवश्यकता है उसे आप यह जमीन दे दो।'' महात्मा जी आश्चर्यचकित हो गए। लोग किसी भी प्रकार से येन केन प्रकारेण जमीन को हथियाना चाहते हैं, पर ये ऐसे सज्जन हैं कि जमीन लेना ही नहीं चाहते? ऐसा व्यक्ति वह पहली बार देख रहे थे। ऐसा कैसे होता है? आवश्यकता से अधिक चाहिए ही नहीं जब, ऐसा विचार मन में हो तब व्यक्ति ऐसा बोल व कर पाता है। ध्येय के लिए जितनी आवश्यकता उतनी ही चाह।

जब उनको जमीन की आवश्यकता हुई, तो नेरी में इतना बड़ा संस्थान बना दिया कि पैसा उनके पीछे चल पड़ा। वे पैसा मांगने नहीं गए। पुराने परिचित कार्यकर्त्ता श्री कपूर जी उन्हें ढूंढ ही रहे थे। उन्हें कुछ देना चाहते थे। एक भव्य संस्थान खड़ा कर गए। यह सब उनकी तपस्या का फल है। ध्येयवादी जीवन था। सच्चा जीवन था। यह काम करना है, यही काम करना है। इसी को कहते हैं, श्रद्धा! कार्य के प्रति अटूट श्रद्धा। हर परिस्थिति में अपने विचार पर अडिग रहना। अपनी अन्तिम सांस तक कार्य करते रहे, जो काम दिया वहीं किया। ऐसे जीवनों की समाज में सदा आवश्यकता बनी रहती है। ऐसे जीवन कहीं पर उपलब्ध नहीं होते हैं। भगवान नहीं भेजता, अपने अन्दर के भगवान को जगाना पड़ता है, ऐसे बनना पड़ता है।

ठाकुर जी का जीवन ऐसा था उसमें से मेरे सीखने लायक क्या है? यह समझना आवश्यक है। अभी उस तुलना में हम कहां खड़े हैं। हम उनकी तुलना में खड़े नहीं भी हो सकते तो भी कोई बात नहीं, उस दिशा में बढ़ तो सकते हैं? कितना बढ़ सकते हैं – हजारों मील न सही, थोड़ा-थोड़ा बढ़कर ही तो हजारों मील बनता है। हम जीवन के उस आदर्श पथ पर बढ़ना शुरू कर दें। यही ठाकुर जी के प्रति सही श्रद्धांजलि होगी।

जिनका अपना कुछ नहीं होता - वह सबका हो जाता है

सुरेश सोनी
सह सरकार्यवाह,
केशव कुंज,झण्डेवालान,
नई दिल्ली - 55

ठाकुर जी का जीवन एक नदी के प्रवाह जैसा रहा है। ठाकुर जी के साथ स्वर्गीय शब्द लगाना पीड़ा देता है। मन में एक विचार आता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना सन् १९२५ में हुई। प्रचारक पद्धति का विकास १९२७-२८ में हुआ। प्रारम्भिक अवस्था के प्रचारक तो जीवन के ५० और ६० वर्ष के मध्य ही चले गए पर बाद के प्रचारकों की आयु बढ़ती गई। अभी तक ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ कि किसी की जन्म शताब्दी हम उनके जीवन काल में ही मना सके हों। ऐसा कुछ अब लग रहा था। तीन-चार ऐसे श्रेष्ठ प्रचारक रहे हैं जिनका जन्म १९१३, १९१४ और १९१५ रहा है। इन सब में ठाकुर जी का जन्म १६ फरवरी १९१५ को हुआ था। देशपाण्डे जी भी चले गए, दूसरे भी गत वर्ष चले गए। यह अपेक्षा केवल ठाकुर जी से थी कि शताब्दी पूरी हो जाए। ठाकुर जी का स्वास्थ्य भी ठीक था। वे किसी पर निर्भर नहीं रहते थे। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। उनके संख्यात्मक पहलू के बजाए भगवान को उनका सार्थक जीवन मंजूर रहा।

भगीरथ अपने तपोबल से गंगा को धरा पर लाये थे। ठाकुर जी के पास भी जो कुछ था वह उन्होंने सारा देश समाज को समर्पित कर दिया। वह ऐसे व्यक्ति थे जिन के बारे में बहुत सी बातें बताई जा सकती हैं। ठाकुर जी भारतीय सनातन परम्परा के विचार थे। इससे आगे बढ़कर वे इस परम्परा के व्यवहार थे। उनका हिन्दू चिन्तन उनके व्यवहार में उतरा था। ठाकुर जी के अन्दर जो उग्रता थी वह तोड़ती नहीं थी वह हम सबको उनसे जोड़ती थी। वह कार्य और व्यवहार के अनुरूप थी। आसाम का प्रसंग है कि ठाकुर जी को एक कार्यकर्त्ता ने कहा कि आप मेरा विषय बदल दो। ठाकुर जी का स्पष्ट उत्तर था, ''राम सिंह आसाम में विषय बदलने नहीं, व्यक्ति को बदलने के लिए आया हूँ।'' यह थी ठाकुर जी की कठोरता। हमें जिस दिशा की ओर बढ़ना है उसके अनुरूप हमें अपने शरीर और चिंतन को बदलना है। विषय नहीं बदलना है, हमें बदलना है।

आसाम के बारे में बात चली है तो एक बड़ी रोचक घटना है। ठाकुर जी आसाम जाकर अस्वस्थ हो गए। उनका हिमाचल व पंजाब के खाने के आधार पर शरीर रचा बसा था। आसाम का भोजन भिन्न है। इस कारण ठाकुर जी अस्वस्थ हो गए। डाक्टर ने

ठाकुर जी को देखा और बताया, ''ठाकुर जी आप के पेट में खुशकी हो गई है। अच्छा रहेगा कि आप खाने के साथ दो चम्मच घी के ले लिया करो।'' ठाकुर जी मजाकिया अंदाज में डाक्टर से बोले, ''डाक्टर जी घी तो मैं दो कटोरी खा जाऊँ, खिलाओ तो सही।'' सभी हंस पड़े। ऐसा जवाब रहता था ठाकुर जी का।

उनके अन्दर एक जीवन्तत्ता का भाव था। मैं भोपाल में था। ठाकुर जी भोपाल प्रवास पर आ रहे थे। प्रात: का समय था। ठाकुर जी को ट्रेन पर से लाया गया। नाश्ता तैयार था। मैंने ठाकुर जी को पूछा कि नाश्ता तैयार है। पहले आप नाश्ता करेंगे या स्नान। मैंने यह इसलिए पूछा कि ठाकुर जी पुराने प्रचारक हैं, शायद स्नान के बाद ही नाश्ता करते होंगे। ठाकुर जी ने पूछा, ''भाई यह बातओ, कि स्नान और नाश्ते का आपस में क्या सम्बन्ध है? नाश्ते का समय है तो पहले नाश्ता करेंगे फिर स्नान होता रहेगा।'' ऐसे थे ठाकुर जी।

हमने बहुत प्रचारक देखे। जिस प्रकार की कठोरता ठाकुर जी के अन्तिम समय तक कायम रही, ऐसा अन्य में दिखाई नहीं देता। झण्डेवाला कार्यालय में किसी कर्मचारी व कार्यकर्त्ता को स्मरण नहीं है कि किसी ने ठाकुर जी के कपड़े धोये हों। कभी किसी का सहारा नहीं लिया। सहारे के लिए बढ़े हुए हाथ को ठाकुर जी इस प्रकार झटक देते थे कि दूसरी बार किसी की हिम्मत ऐसे सहारा देने की नहीं होती थी। यह सब उनके तपस्वी जीवन के कारण था। बलराज जी कहते हैं कि वे मेरे बड़े भाई हैं। मुझे हाकी से प्रेम था, ठाकुर जी को हाकी से प्रेम था। मुझे इतिहास से प्रेम है, ठाकुर जी को भी इतिहास से प्रेम था। मैं स्वयंसेवक बना ठाकुर जी स्वयंसेवक बने। एक बार यह दोस्ती का हाथ बढ़ा जो जीवन पर्यन्त कायम रहा।

मेरा ठाकुर जी के साथ कोई बहुत पुराना सम्बन्ध नहीं था। ठाकुर जी के पास इतिहास का काम था। मैं केन्द्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बन गया। संघ की ओर से मोरोपन्त जी इतिहास का काम देखते थे। बाद में उन्होंने यह काम का दायित्व मुझे दिया तब ठाकुर जी के साथ मेरा सम्बन्ध आया। बाबा साहिब आपटे स्मारक समिति, इतिहास संकलन योजना समिति के कार्य से ठाकुर जी के साथ निकटता बढ़ी। इस निकटता में मैंने पाया कि जिस प्रकार से हमने डॉक्टर हेडगेवार जी के जीवन के बारे में सुना है कि बीमारी के अन्दर भी वे अचेत अवस्था में संघ का ही विचार व्यक्त करते थे ठीक उसी प्रकार ठाकुर जी के जीवन में भी दिखाई देता है। ठाकुर जी गहरी नींद व अस्वस्थता में जो कुछ भी कहते थे वह संगठन का ही विचार होता था, उसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

जिसका अपना कुछ नहीं होता, वह सबका हो जाता है।

नेरी के अन्दर जो सब कुछ हुआ है, वह जिस स्वयंसेवक के कारण हुआ है वह पंजाब का स्वयंसेवक उस समय स्वयंसेवक बना था, जब ठाकुर जी पंजाब में थे। ठाकुर जी आसाम चले गए और वह स्वयंसेवक स्वर्गीय श्री कपूर जी कारोबार के लिए मुम्बई आ गए। १९७१ में पुनः ठाकुर जी पंजाब आ गए। परन्तु उस स्वयंसेवक से मिलना नहीं हुआ। यह मिलना हुआ २००० में। कपूर जी ठाकुर जी से मिलना चाहते थे, परन्तु इससे पूर्व मिलना नहीं हो पाया। संयोग से मुम्बई में १५ देशों से आए हुए हिन्दुओं का विश्व शिविर होने जा रहा था। मैं भी उस शिविर में था।

उस विश्व शिविर के निमित मुम्बई के सम्पन्न स्वयंसेवकों की बैठक बुलाई गई। इस बैठक का उद्देश्य उस शिविर के लिए आर्थिक सहयोग करना था। इन्द्रजीत कपूर जी भी उस शिविर में थे। ठाकुर जी के वहां पधारने के उपलक्ष्य में कपूर जी ने एक भोज का आयोजन किया। ठाकुर जी का परिचय शिविर में आए अतिथियों से भी करवाया। कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद मेरे से मिलने तो कोई नहीं आया पर ठाकुर जी को असंख्य स्वयंसेवकों ने घेर लिया। ऐसा व्यक्तित्व था ठाकुर जी का। रात्रि को कपूर जी ठाकुर जी को अपने घर ले गए। दूसरे दिन ठाकुर जी ने वापिस दिल्ली आना था। ठाकुर जी को छोड़ने कपूर जी रेलवे स्टेशन आए, साथ में एक लिफाफा दिया। ठाकुर जी ने उसे जेब में रख लिया, देखा नहीं। उन्होंने सोचा क्या है, जो भी है दिल्ली देख लूंगा। रास्ते में श्री चमन लाल जी ने पूछा कि लिफाफे में क्या है? ठाकुर जी बोले, ''पता नहीं क्या है, देख लेंगे।'' ठाकुर जी ने दिल्ली में जब लिफाफा खोला तो उसमें पांच लाख का चैक ठाकुर जी के नाम था। ठाकुर जी ने कपूर जी को पत्र लिखा, ''मेरे नाम कोई खाता नहीं है और न ही मुझे पैसे की आवश्यकता है।'' यदि आप यह पैसा देना ही चाहते हैं तो मैं इतिहास संकलन समिति का कार्य देखता हूँ। उस नाम से यह चैक भेज देना। फिर ऐसा ही हुआ।

इतिहास का काम करती बार ठाकुर जी के ध्यान में यह बात आई कि इस कार्य के लिए ऐसा केन्द्र स्थापित किया जाए जो कार्य को लगातार आगे बढ़ाए। वहां पर स्थाई रूप से विद्वानों की टोली काम करे। नवीन शोध हो, इतिहास में आई विकृतियों के निराकरण का कार्य निरन्तर चलता रहे। उसके लिए अध्ययन केन्द्र की आवश्यकता है। इस देश में दौड़-दौड़ कर काम करने वाले लोग काफी हैं, पर स्थाई रूप से एक जगह रहकर काम करने वाली टोली भी चाहिए। ठाकुर जी कहते थे कि इस सृष्टि के आदि का

सम्बन्ध हिमाचल प्रदेश से है। इस प्रकार का वृतान्त महाभारत में भी आता है। पाण्डवों ने जब स्वर्गारोहण किया तो वह हिमाचल से ही किया। वहां से वह उत्तर दिशा की ओर गए। भूगोल के आधार पर हिमाचल का उत्तरी भाग स्वर्गलोक कहलाता है। अमेरिका को पाताल लोक कहते हैं। मानव सृष्टि के इस मूल केन्द्र को केन्द्र मानकर ही ठाकुर जी ने इस शोध संस्थान की स्थापना की।

इतिहास के प्राचीन अवशेषों का अध्ययन करना और हमारी संस्कृति, जीवन के अनसुलझे विषयों को सुलझाना ही इस शोध केन्द्र का उद्देश्य है। उसी में से मनु धाम की कल्पना प्रकट हुई है।

ठाकुर जी कहते थे कि मुझे इतिहास की दृष्टि पुस्तकों से प्राप्त नहीं हुई है। इतिहास की दृष्टि मुझे संघ से प्राप्त हुई है। इस नाते जीवन में जो भी काम मिला, चाहे वह आसाम का हो, चाहे वह पंजाब समस्या का हो या इतिहास संकलन योजना का प्रत्येक काम ठाकुर जी ने मन, कर्म, वचन से पूरा किया। देश भर में जहां-जहां ठाकुर जी की श्रद्धांजलि के कार्यक्रम हुए उसमें यह बात उभर कर आई कि ठाकुर जी की कथनी और करनी में एकता रही है। यह उनकी तपस्या का परिणाम था।

ठाकुर जी की जीवन यात्रा हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर जिले के एक छोटे से गांव झण्डवीं से प्रारम्भ हुई। पूरे देश का भ्रमण किया, अपनी सोच के आधार पर कार्य को दिशा दी तथा अन्तिम समय में हमीरपुर जिला में ही नेरी शोध संस्थान का निर्माण कर, यही अपनी अन्तिम यात्रा पूरी की।

ठाकुर जी द्वारा प्रारम्भ किये गए कार्य अधूरे नहीं रह सकते। यदि हम यह सोच भी लें कि चलो छुट्टी हुई, अब हमें कोई पूछने वाला नहीं है, ऐसा होना असंभव है। ठाकुर जी हम सबसे वे काम पूरे करवायेंगे ही। एक बार आसाम में एक कार्यकर्त्ता को ठाकुर जी ने कहा कि तुम यह काम छोड़कर कहीं जा नहीं सकते। यदि तुम मर भी गए तो भी तुम्हारा वह भूत तुम्हारी छाती पर बैठकर और गला दबाकर सारे काम करवा लेगा।

हम ठाकुर जी के सपनों को मिलकर साकार करेंगे। ये स्वप्न ठाकुर जी के व्यक्तिगत नहीं है। यह राष्ट्र के स्वप्न हैं। यह भारत के स्वप्न हैं। यह हमारी संस्कृति, धर्म के स्वप्न हैं। जिन्हें हमें पूरा करना है।

सत्ता की दौड़ में समाज का अहित

अशोक सिंघल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली

मेरा सम्पर्क माननीय ठाकुर जी से दिल्ली में उस समय हुआ जब मैं यहां पर प्रांत प्रचारक के दायित्व पर था। ठाकुर जी के साथ रहने से सर्वप्रथम यह बात समझ में आई कि प्रचारक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए और उन गुणों का विकास कैसे किया जाता है, वे इन गुणों के प्रतिमूर्ति थे। ठाकुर जी अपने विचारों के प्रति कठोर थे तथा जीवन के प्रति भी कठोर थे। ठाकुर जी जिस कार्यक्रम को बनाते थे उसे पूरा करने के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता होती थी तथा कार्यक्रम की असफलता की कोई गुंजाईश ही नहीं होती थी।

मुझे ध्यान है कि जब राम जन्म भूमि का आन्दोलन चला, उस आन्दोलन के प्रति ठाकुर जी का यह विचार था कि यह आन्दोलन हिन्दू समाज की सोच व जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन लाएगा। यह परिणाम कारक होगा। इस आन्दोलन के माध्यम से सारा देश अपने शौर्य को प्रकट करेगा। भारत का सोया हुआ स्वाभिमान जाग उठेगा।

ठाकुर जी ने अपने जीवन में बहुत कुछ देखा था। उन्होंने लाखों स्वयंसेवकों को अपने हाथ से गढ़ा था। उनके वैचारिक धरातल को खड़ा किया था। वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य को देखकर वे कभी-कभी कह उठते थे कि हमारे लोग भी सत्ता की दौड़ में खड़े दिखाई देते हैं। इस सत्ता की दौड़ में वे समाज को इतना बड़ा अहित कर बैठते हैं कि जिस की भरपाई करना कठिन कार्य है।

ठाकुर जी २००८ में मेरे पास कार्यालय में आए। उन्होंने कहा, ''अशोक जी, मैं आपको निमन्त्रण देने आया हूँ। नेरी में इतिहास के पुनर्लेखन एवं नवीन शोध के लिए शोध संस्थान बना है। वहां मुख्य द्वार का उद्घाटन होना है, तथा हमारे लोक गीतों में किस प्रकार हमारा प्राचीन इतिहास छिपा है उस पर शोध पत्र पढ़े जाने हैं। मैंने ठाकुर जी को कहा, ''आपने क्यों कष्ट किया, मुझे आप फोन करके बुला लेते तो मैं ही आप के पास झण्डेवाला कार्यालय में आ जाता।'' मैं ठाकुर जी के सामने नतमस्तक हो गया।

ठाकुर जी ने इतिहास संकलन का इतना बड़ा कार्य देश में खड़ा किया यह उनके सामर्थ्य का ही परिणाम है। उन्होंने देश के अन्दर एक बात सामने रख दी कि हमें अपने देश के इतिहास की समझ के लिए किसी विदेशी इतिहासकारों की संस्तुति की आवश्यकता नहीं है। हमारे पास अपने इतिहास का विपुल भण्डार है जो संस्कृत साहित्य में छिपा पड़ा है। उस इतिहास को समाज के सामने आज के सन्दर्भ में लाना, योजना का कार्य है। इसके लिए ठाकुर जी ने पूरे देश में कार्य खड़ा किया।

मैं नेरी में उस उद्घाटन व सेमिनार में गया जहां पर हिमाचल की लोक संस्कृति के अन्दर हमारा प्राचीन छिपा पड़ा है। उसकी एक झलक देखने को मिली। वहां कलाकार तथा लेखक दोनों आए थे। ठाकुर जी ने इस आयु के अन्दर ऐसा जीवन्त संस्थान खड़ा किया है जिसकी साधारण व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता है। ठाकुर जी का जीवन हम सब के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर हम चलते रहेंगे।

अनुकरणीय प्रेरणादायी जीवन

रामेश्वर
उत्तर क्षेत्र प्रचारक,
केशव कुंज, झण्डेवालान,
नई दिल्ली-55

पूजनीय ठाकुर जी के साथ स्वर्गीय शब्द लगाना पड़ रहा है। ऐसा विश्वास नहीं होता कि ठाकुर जी चले गए हैं। मेरा परिचय ठाकुर जी से उस समय हुआ था जब वे आसाम से पंजाब आए थे। ९ जुलाई को ठाकुर जी का स्वास्थ्य खराब हुआ यह जानकारी मुझे प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम जी से दूरभाष पर प्राप्त हुई। हम लोग जोधपुर अखिल भारतीय बैठक से ट्रेन द्वारा वापिस दिल्ली आ रहे थे। ठाकुर जी की चिकित्सा व्यवस्था अच्छी प्रकार से हो, इसके लिए सब जगह सम्पर्क किया गया। अखिल भारतीय अधिकारियों की भी राय ली गई। लुधियाना डीएमसी हीरो हार्ट अस्पताल में डॉक्टरों की अच्छी टीम होने के कारण यही राय बनी कि ठाकुर जी का इलाज डीएमसी में किया जाए। डीएमसी अस्पताल में डॉक्टरों से बात की गई। उन्होंने ठाकुर जी को लुधियाना लाना ही श्रेष्ठ बताया। इस बारे में प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम जी को बताया। वे रात्रि ११ बजे हमीरपुर से लुधियाना के लिए चल पड़े और प्रात: साढ़े चार बजे लुधियाना अस्पताल पहुंचे। चिकित्सों की टीम पहले से ही तैयार थी। उन्होंने सभी प्रकार के परीक्षण किए तथा ठाकुर जी का उपचार विधिवत प्रारम्भ हो गया। स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। हृदय गति में थोड़ा अवरोध होने के कारण पेसमेकर स्थापित कर दिया और ठाकुर जी दिनोंदिन ठीक होने लगे।

२२ दिनों तक अस्पताल में रहने के बाद पूर्ण स्वस्थ होकर ठाकुर जी को लुधियाना में ही एक कार्यकर्ता सुशील जी के घर अगले परीक्षण तक रखा गया। ठाकुर जी का परीक्षण वहां अच्छी प्रकार से हुआ। हमीरपुर आने से पूर्व १०-१२ डाक्टरों की टीम श्री सुशील जी के घर आई। वहां जलपान का कार्यक्रम हुआ तथा ठाकुर जी का उद्‌बोधन हुआ। ठाकुर जी ने कहा कि मैं हमीरपुर से यह सोचकर आया था कि अब वापिस नहीं जाऊँगा। परन्तु आप सब की मेहनत के कारण मैं ठीक होकर वापिस जा रहा हूं। मैं आप सबका बहुत आभारी हूँ, मैं भी उस बैठक में था। मैंने ठाकुर जी से कहा कि डाक्टरों की सलाह के अनुसार आपको ठण्डे क्षेत्र में रहना है, जिसके लिए कुल्लू सबसे उपयुक्त स्थान है। ठाकुर जी बोले वह तो ठीक है, पर पहले मुझे नेरी जाना है। वहां कई काम अधूरे पड़े हैं। उन्हें करना है। नवनिर्मित संग्रहालय में लेखन का कार्य शुरू होने वाला है। उससे पूर्व वहां कल ही हवन होना है। उसके उपरान्त मैं कुल्लू जाऊँगा। इस अवस्था के अन्दर भी ठाकुर जी का ध्यान नेरी में ही था। जो काम शुरू किया गया है, वह शीघ्र ही पूर्ण हो जाना चाहिए। हमने ठाकुर जी को लुधियाना से नेरी के लिए विदा किया।

पहले से ही कार्यकर्त्ता नेरी में ठाकुर जी की प्रतीक्षा कर रहे थे। विधिवत् रूप से दिनांक ४ अगस्त २०१० को नेरी में हवन हुआ तथा उसके बाद कुल्लू को दोपहर बाद रवाना हुए। प्रान्त कार्यवाह श्री चेतराम जी साथ थे। कुल्लू में सब प्रकार से ठाकुर जी की चिकित्सा और स्वास्थ्य का ध्यान रखा जा रहा था। अचानक ही ३१ अगस्त, २०१० को ठाकुर जी की तबीयत खराब हो गई। लुधियाना में डॉक्टरों से सम्पर्क किया गया तथा उन्हें तुरन्त लुधियाना लाने की सलाह दी गई। उनके रक्त में यूरिया की मात्रा बढ़कर १९२ हो गई थी।

मैं उनसे मिलने अस्पताल गया। उन्हें आक्सीजन लगी हुई थी। मुझे देखकर उन्होंने मुंह में लगे यंत्र को उतारने के लिए परिचारिका को कहा। मुंह में लगा यंत्र खोला गया तथा ठाकुर जी मुझसे बोले, ''कल ही देवेन्द्र जी मेरे से मिलकर गए हैं। मेरी उनसे बात हो गई है पर अभी एक काम शेष बचा है जो आपको करना है।'' नेरी शोध संस्थान में कार्यालय के लिए एक कार्यकर्त्ता की आवश्यकता है। यह काम आपको करना है। मैंने कहा ठाकुर जी यह काम हो जाएगा। आप स्वस्थ हो जाईए।

३ सितम्बर २०१० को उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। रक्त चाप बढ़ने लगा। कुछ और भी तकलीफ होने लगी। पर ऐसा नहीं लग रहा था कि ठाकुर जी ज्यादा ही अस्वस्थ हो जाएंगे। ५ तारीख को ठाकुर जी और ढीले होने लगे, और ६ तारीख को शाम ५:२५ बजे हम सबको छोड़ कर ठाकुर जी स्वर्गसिधार गए। यह सब विश्वास नहीं होता। उनका प्रेरणादायी जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है।

दुष्टों को सबक सिखाना है

घटना १९८६ अमृतसर की है। उस समय पंजाब में उग्रवाद जोरों पर था। पंजाब में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का गठन हो गया था। अमृतसर में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का कार्यालय खोला गया। उसी दिन रात्रि को शरारती गुण्डों ने कार्यालय का ताला तोड़कर कार्यालय से सुरक्षा समिति का सामान बाहर फैंक दिया। माननीय ठाकुर जी उस दिन अमृतसर में ही थे। जब उन्हें यह पता चला तो उन्होंने तुरन्त अमृतसर के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई। इस कुकृत्य के लिए उन्हें क्या सबक सिखाया जाए। कुछ ने कहा कि उनसे बात करनी चाहिए तथा कुछ ने और सुझाव दिया। ठाकुर जी ने कहा हमें ऐसा कार्य करना चाहिए जिससे कार्यकर्त्ताओं का मनोबल भी बढ़े और दुष्टों को सबक भी मिल जाए। उन्होंने चोरों की तरह रात को ताला तोड़ा और सामान बाहर फैंका। हम दिन में उनके द्वारा लगाया गया ताला तोड़ेंगे तथा उन्हें सबक सिखाएंगे। कल १० बजे ६०-७० स्वयंसेवक यहां सम्पत् करेंगे तथा कार्यवाही की जाएगी। सब ठाकुर जी के कहे अनुसार हुआ तथा ताला तोड़ा गया और दिन में गुण्डों की पिटाई कर उन्हें सबक सिखाया गया। ऐसा आत्मविश्वास ठाकुर जी कार्यकर्त्ताओं में भरते थे।

इतिहास बोध का दर्शन

महन्त सूर्यनाथ
मार्गदर्शक
विश्व हिन्दू परिषद
सप्त देवी मन्दिर किन्नू, ऊना

मेरा प्रथम परिचय माननीय ठाकुर राम सिंह जी से अपने सप्तदेवी आश्रम में ही हुआ था। वे मुझे त्रिगर्त पर होने जा रहे राष्ट्रीय परिसंवाद में आने के लिए स्वयं निमन्त्रण देने पधारे। उनके प्रथम दर्शन में ही मुझे लगा कि पूरी संस्था ही मुझे आमन्त्रित कर रही है। उसी परिसंवाद की व्यवस्था बैठक में मुझे ठाकुर जी में इतिहास बोध का दर्शन हुआ। उनकी एक-एक बात ऐसी लग रही थी जैसे उन्होंने उस घटना का दृश्य स्वयं देखा हो। हम उसके उपरान्त अनादि दास मन्दिर गए। वहां उन्होंने जैन इतिहास पर चर्चा शुरू कर दी। ठाकुर जी की चर्चा ऐसी थी कि जैन साहित्य का ज्ञाता वैसा विश्लेषण नहीं कर सकता। मुझे लगा कि ऐसी महान आत्मा से इतने दिनों तक क्यों दूर रहा। मुझे इतिहास के ऐसे ज्ञाता की खोज पहले से ही थी।

ठाकुर जी के साथ मंच पर बैठने का पहला अवसर ऊना में वर्ष प्रतिपदा के कार्यक्रम पर मिला। मैंने ठाकुर जी का उद्‌बोधन बड़े ध्यान से सुना। हम नव वर्ष क्यों मनाते हैं, इस पर विस्तार से चर्चा की। कालतत्व की चर्चा की, पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्णन किया तथा मुझे इस बात से ऐसा लगा कि यह महापुरुष भारत के सही इतिहास को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के लिए ही उत्पन्न हुए हैं। इस से पूर्व तो हम वर्ष प्रतिपदा नवरात्रे प्रारम्भ के महत्त्व के रूप में मनाते थे पर इस कार्यक्रम के बाद मेरे लिए वर्ष प्रतिपदा का त्यौहार प्रमुख हो गया।

विजया दशमी के पर्व पर मैंने ठाकुर जी को उस के उपरान्त हमीरपुर के एक कार्यक्रम में सुना। यह पर्व मात्र रावण दहन व पटाखे जलाने तथा मिठाईयां बांटने के लिए नहीं है। यह भारतीय जीवन दर्शन में विजय दिवस है। यह भारतीय रक्षा का त्यौहार है। शस्त्र पूजन तथा अपनी शक्ति प्रदर्शन का दिवस है। हमारे जीवन में इन संस्कारों का पालन अक्षरश: होना चाहिए। जिसकी हम अपेक्षा करते हैं। ठाकुर जी अपनी बात को बिना औपचारिकता से निर्भय होकर रखते थे। इन तीन घटनाओं ने मेरे जीवन में ठाकुर जी के प्रति असीम श्रद्धा पैदा कर दी। अब ठाकुर जी से एक या दो महीने के अन्तराल पर नियमित रूप से मिलना होता था। यदि मिलना न हो पाता तो ऐसा लगता कि मेरी पूजा अधूरी रह गई है। अथवा मेरा कुछ खो गया है।

मैंनें ठाकुर जी को बिना मतलब से कभी बात करते नहीं देखा। जब भी बात करनी तो किसी विषय पर बात करनी। एक दिन एक व्यक्ति संघ के बारे में नेरी में ठाकुर जी से बात कर रहा था। उसका आशय था कि वर्तमान परिदृश्य में समाज के सुधार के लिए यदि कोई कुछ कर सकता है तो वह संघ ही है, संघ से लोगों को बहुत अपेक्षा है। संघ को अपने में यह सुधार करना चाहिए। ठाकुर जी बोले, ''संघ में सब कुछ ठीक नहीं होता है, उसमें ठीक रखना होता है और संघ हमें ठीक रखता है।''

इस वाक्य को सुनकर ऐसा लगा कि वास्तव में ही संघ सब को ठीक रखता है। संघ स्वयंसेवकों को तो ठीक रखता ही है और संघ के विरोधी विचारधारा वाले लोगों को भी ठीक रखता है और संघ ठाकुर राम सिंह जैसे प्रचारकों का अनुसरण करके ठीक रहता है।

इतिहास शोध संस्थान नेरी बना तीर्थ स्थल

प्रो. प्रेम कुमार धूमल
मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश

ठाकुर राम सिंह जी एक महामानव थे, अपने आप में एक अनूठी संस्था थे।

नौंवी लोकसभा का सदस्य बनने के बाद मैं उन्हें मिलने संघ कार्यालय 'झण्डेवालान' गया। वे काफी देर चर्चा करते रहे। अनेक विषयों पर मार्गदर्शन मिला। हम दोनों हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर से थे। दोनों छोटे-छोटे गांवों से थे। समस्याओं तथा उनके कठिन समाधानों की अनुभूति भी थी। पर सफलता का पूर्ण विश्वास भी। जब मैं वापिस चलने लगा तो ठाकुर जी ने कहा रुको और उठकर अलमारी खोलकर तिल के दो बड़े-बड़े लड्डू निकाल कर मुझे देते हुए कहा ''मैं राजस्थान गया था वहां सर्दियों में लोग तिल के लड्डू खाते और खिलाते हैं।'' उनका स्नेह दिल की गहराईयों को छू गया।

इतिहास के महान ज्ञाता थे, ठाकुर राम सिंह जी। काल गणना के विद्वान, आंकड़ों की अद्‌भुत स्मृति, जो भी सुनता, चर्चा करता, प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

त्रिगर्त इतिहास पर कांगड़ा के किला में एक शानदार आयोजन उन्होंने किया। एक दिन परिचर्चा में मुझे भी बुलाया था। मैं कुछ बोला तो उन्होंने प्रोत्साहित भी किया। फिर हमीरपुर जिला के नेरी गांव में उन्होंने भूमि पसंद की जहां वे इतिहास शोध संस्थान स्थापित करना चाहते थे, हमने जैसा उन्होंने चाहा सहयोग देने का प्रयास किया, इसके पश्चात् जो भी कार्यक्रम वहां हुए उसमें उन्होंने सदैव आमन्त्रित किया। आज यह संस्थान उनके प्रयासों से एक तीर्थ स्थल बन गया है।

कुल्लू के कलामंच भवन में एक संगोष्ठी का आयोजन इतिहास संकलन समिति की ओर से निश्चित था। ठाकुर जी मुख्य वक्ता थे। अचानक उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। सभी चिन्तित थे, उनके उद्‌बोधन के बिना संगोष्ठी की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। परन्तु उन्होंने कहा गोष्ठी होगी, और मुझे कह दिया कि यह मुख्य वक्ता होंगे। मेरा इतिहास ज्ञान सीमित और वहां ठाकुर जी का उद्‌बोधन तथ्यों और आंकड़ों से परिपूर्ण विद्वतापूर्ण होना था, वहां मैं क्या बोलता? पर उनकी बात न मानने का साहस कहां? वे अस्वस्थ होते हुए भी मंच पर सुनने के लिए बैठ गए। मैं जो कुछ बोल पाया केवल उनका आशीर्वाद व प्रभु कृपा ही थी। उन्होंने सराहा तो साहस हुआ और आत्म विश्वास भी बढ़ा।

अनेकों चर्चाओं, संगोष्ठियों में भाग लेने का सुअवसर उनकी कृपा से मिला। सदैव उनका स्नेह व आशीर्वाद मिलता रहा। ऐसी महान विभूतियां सदियों में कभी-कभार अवतरित होती हैं। उनके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

उज्ज्वल और सार्थक जीवन की पूर्णता

शान्ता कुमार
राज्य सभा सदस्य,
यामिनी होटल, पालमपुर

श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी का नाम लेते ही एक ऐसे समर्पित व्यक्तित्व का ध्यान आता है जिसका वर्तमान समय में होना संभव नहीं। एक युग था जब लोग व्यक्तिगत और परिवार के सभी संबंधों से ऊपर उठकर केवल समाज के लिए पूरा जीवन समर्पित कर देते थे। आज के भौतिकवादी युग की यह एक अनहोनी घटना है।

स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी ने हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से गांव में जन्म लेकर कठिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त करके अपने बारे में कभी कुछ नहीं सोचा। उच्च शिक्षा समाप्त करते ही पूरा जीवन राष्ट्रीय कार्य को समर्पित कर दिया।

किसी आन्दोलन में एकदम बलिदान हो जाना भी बहुत कठिन और सराहनीय है। परन्तु पूरा जीवन एक-एक पल जीवित रहकर केवल राष्ट्रीय कार्य को समर्पित करते रहना शायद और भी अधिक कठिन है। क्षणिक बलिदान और पूरे जीवन के पल-पल के समर्पण में बहुत अन्तर रहता है।

मैं १९५१ में मैट्रिक पास करने के बाद संघ के प्रचारक के रूप में कागड़ा में गुप्त गंगा कार्यालय में रहता था। कुछ समय पूर्व ठाकुर रामसिंह जी वहां प्रचारक रहे थे। उन दिनों कांगड़ा के सभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों की जुबान पर उनकी बातें थी। इस प्रकार ठाकुर रामसिंह जी की चर्चा सुनकर उनसे मिलने की बहुत लालसा मन में जग गई थी। कुछ समय बाद झण्डेवालान मन्दिर, दिल्ली में और एक बार नागपुर में उनसे मिलने का समय मिला।

नागपुर में मिलने पर मैंने अपनी प्रथम पुस्तक ''धरती है बलिदान की'' का जिक्र किया था। मुझे याद है कि वे बहुत प्रसन्न हुए थे। उन्होंने मुझसे भारत के क्रान्तिकारियों के इतिहास का जिक्र किया और कहा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास बिल्कुल विकृत कर दिया गया है। क्रान्तिकारियों की इसमें उपेक्षा हुई है। तो उन्होंने मुझे कहा था कि उसी विषय पर मैं और भी कुछ लिखूँ। मैंने पहली पुस्तक उन्हें भेजी थी। उन्होंने मुझे स्नेह भरा उत्तर भी दिया।

एक बार मैंने उन से पूरे समाज के नैतिक पतन की चर्चा की और यह भी कहा कि कई बार हमारे संगठन में भी इस प्रकार का अवमूल्यन दिखाई देता है, तो बहुत चिंता होती है। तब उन्होंने विस्तार से मुझे कहा कि ऐसे मौके पर एक स्वयंसेवक सबसे पहले तो आत्म निरीक्षण करे। यह देखे कि मैं स्वयं कहीं गलत तो नही कर रहा हूँ। उसके बाद दायें-बायें देखे। यदि कुछ गलत लगता है तो ऊपर जिनको कहना चाहिए उसको कहें।

मैंने कहा अगर उसके बाद भी कुछ न हो तो क्या किया जाए? तो उन्होंने कड़कती आवाज में कहा था, ''कहते रहो, कहते रहो पर इतना ध्यान रखो जहां जितना कहना है, उतना ही कहो।''

उनसे मेरी अन्तिम बात तब हुई जब वे मनाली गये थे। श्री महेश्वर सिंह उनके साथ बैठे थे। उन्होंने उन्हीं को मुझसे फोन मिलाने के लिए कहा। मनाली मनु मन्दिर के संबंध में मुझ से लम्बी चर्चा की। उन्हें इस बात की प्रसन्नता थी कि मैंने मुख्यमंत्री रहते हुए उस मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया। उस स्थान के सम्बन्ध में उनके मन में बहुत कुछ था। उन्होंने बड़े विस्तार से बात की थी। वे कई बार इतिहास के शोध लेखन करने में मुझे प्रेरणा देते थे। इतिहास पर लिखी मेरी पहली पुस्तक की प्रशंसा करते थे। उनकी इच्छा थी कि मैं इसी प्रकार से इतिहास के शोध कार्य पर लिखूं, परन्तु मैं राजनीति व अन्य व्यस्तताओं के कारण और कुछ नहीं कर सका।

स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी जैसे लोग कभी भी मरते नहीं, बैसे भी भरतीय चिन्तन के अनुसार मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है, वह जीवन की पूर्णता है। जाता तो केवल शरीर है। स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी ने एक लम्बे समय तक एक-एक पल राष्ट्र कार्य करके अपने जीवन का मिशन पूरा किया। वह उनकी मृत्यु नहीं उनके सफल, उज्ज्वल और सार्थक जीवन, कार्य की पूर्णता थी।

कर्मठ अनुशासित आचार-व्यवहार

बनवीर राणा
प्रान्त प्रचारक
माधव कुंज, शिमला-1

माननीय ठाकुर राम सिंह जी ने हजारों बन्धुओं को अपने कर्मठ अनुशासित जीवन के आचार-व्यवहार से प्रेरणा दी है। अपना स्वास्थ्य ठीक रहे, इसके लिए नियमित व्यायाम करना, यह भाषण का नहीं व्यवहार का विषय है। प्रतिदिन शाखा जीवन का हिस्सा होनी चाहिए इन दोनों बातों को जीवन के अन्तिम समय तक निभाते हमने ठाकुर जी को देखा है।

२०१० जून के पहले सप्ताह की बात है, मुझे नेरी शोध संस्थान रात्रि में ठहरने का अवसर मिला। रात्रि देरी से पहुंचा, सोने से पूर्व श्री चेत राम जी से पता चला कि प्रात: काल की यहां शाखा नहीं है। सुबह पांच बजे जब आंख खुली तो कान में आवाज पड़ी, ऊँ भानवे नम: ..... उठकर हाथ मुंह धोकर जब तक स्नानागार से बाहर आया तो आवाज आ रही थी। परवं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम .....। मा. ठाकुर जी के कमरे में गया अकेले ही प्रार्थना कर रहे थे। ठाकुर जी बोले, ''यहां प्रभात शाखा नहीं है, मैं प्रात: व्यायाम १३ सूर्य नमस्कार और प्रार्थना कर लेता हूँ ....।

दूध की कहानी सुनाते थे

कृष्ण कुमार गोयंका
प्रांत व्यवस्था प्रमुख
''सम्राट'' कमरपट्टी, फैंसी बाजार
गुहवाटी–आसाम

५० वर्ष काले बालों में एवं ५० वर्ष सफेद वालों में माँ की सेवा करनी है। यह जिनकी अदम्य इच्छा थी, ऐसी दृढ़ इच्छा शक्ति वाले ठाकुर साहब की पुण्य स्मृति को सादर नमन। भगवान ने उन्हें कर्ममय जीवन के ९५ वर्षों से अधिक का समय प्रदान कर उनके निश्चय को सार्थक किया।

एक बार हमारी शाखा के पूर्ववर्ती मुख्य-शिक्षक श्री अर्जुनजी शर्मा (वर्तमान में डॉक्टर) को संघ के एक शिविर में जाने के लिये अपने पिता से अनुमति नहीं मिली। ठाकुर जी का उनके घर में काफी आना-जाना था। बालक अर्जुन, ठाकुर जी से बात करके प्रात: सोते हुए पिताजी को प्रणाम करके बिना बोरिया-बिस्तर के ही घर से निकल पड़ा एवं शिविर में पहुंच गया। फिर तो सारा घर ही वर्ग में पहुंच गया। ठाकुर जी को बड़ी खरी-खोटी सुनाई। किन्तु अन्त में पुत्र के आग्रह एवं शिविर के वातावरण को देखकर वे शान्त हो गये।

सन् ६०-६२ की बात है। तब मैं छठी सातवीं कक्षा में पढ़ता था। ठाकुर साहब हमें प्रेरणा दिया करते थे — प्रत्येक हिन्दू को ब्रह्मतेज और क्षात्रतेज से युक्त बनना है। पूछते थे, 'रोज २५ सूर्य नमस्कार करते हो, रोज १०० प्रहार लगाते हो? कितनी जलेबियां खा सकते हो? कितना सेर दूध पी सकते हो? देखो, हम पंजाब में इतना किलो दूध पी लिया करते थे। इतना मक्खन खा लेते थे।'' हम ठाकुर जी की तरफ देखते, वह दमकता चेहरा, वे बलिष्ठ भुजाएं, ब्रह्मतेज व क्षात्रतेज के मूर्तरूप थे।

कभी वीर बन्दा बैरागी कभी हरिसिंह नलवा आदि वीर योद्धाओं की वीरता भरी कहानियां सुनाया करते थे, तो कभी शाखा में कुश्ती की प्रतियोगिता करवाते थे।

सायं शाखा में कुछ उग्र प्रकृति के लड़के हमें शाखा चलाने में बाधा डालते। ठाकुर जी को सूचना देने पर उन्होंने कहा, ''पीट कर आकर बात करना, पिट कर आकर बात मत करना।''

फिर एक दिन ऐसा ही एक दादा टाइप का लड़का सायं शाखा के बाद हमारे पीछे पड़ गया। मैं और मेरा मित्र संघ स्थान से घर की तरफ आ रहे थे कि उस लड़के ने झगड़ा करना चाहा। मित्र के पास एक छाता था। हम दोनों ने पलटकर छाते से उसकी पिटाई कर दी। भीड़ इकट्ठी हो गई। हम लोग तुरन्त चलते बने। फिर वह लड़का कभी न दिखा। ठाकुर जी को खबर मिली, तो पीठ थपथपाई।

गुवाहाटी के पास नारंगी में शीत शिविर लगा था। मैं बाल स्वयंसेवक था।

मुख्यद्वार पर पूर्ण गणवेष में दण्ड सहित रक्षक के नाते मेरी पारी थी। मेरे पिताजी उस दिन वर्ग देखने आये। मैंने उनकी गाड़ी को द्वार पर रोक दिया और अन्दर आज्ञा लेने गया। ठाकुरजी विद्यमान थे। वे हंसे और मुझे प्यार से डांटा। मेरे पिताजी बहुत स्नेहपूर्वक से इस घटना को याद करते थे। मैं सायं शाखा संभालता था। किसी दिन प्रयत्नपूर्वक अच्छी संख्या हो जाती, तो पता नहीं कैसे, किन्तु उसी दिन ठाकुर साहब उपस्थित हो जाते थे और हमारी बाँछें खिल जाती थीं।

ठाकुर जी रात को बहुत देर तक लिखना पढ़ना करते थे, एक बार मा. श्री कृष्णजी मोतलग बीमार पड़ गए। उजान बाजार कार्यालय (धीरेश्वर कुटीर) में उन दोनों के लिये दूध ले जाना था। मैं तब ७वीं-८वीं में पढ़ता था। मैं थरमस में दूध लेकर साइकिल से कार्यालय पहुंचा। रात करीब आठ बजे का समय था। मैंने कार्यालय की सीढ़ियां चढ़ते हुए ठाकुर साहब के कमरे की खिड़िकियों की तरफ देखा। मा. ठाकुर जी गंभीर भाव से कुछ लेखन कार्य कर रहे थे। उन की डेस्क पर केवल टेबल लैम्प जल रही थी। बाकी सब लाइटें स्वाभाविक रूप से बंद थीं। चांदनी रात थी। मैं कार्यालय के पिछवाड़े पहुंचा। ठाकुर जी को एकाग्रचित कार्यरत देखकर उनका ध्यान भंग करने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने सोचा, कि दूध घर से लाया हूँ, अब अगर उनको आवाज देकर ध्यान भंग करता हूँ, तो यह अनुचित होगा। अत: उचित होगा कि मैं दूध अपने घर वापस ले जाऊँ।

फिर सोचने लगा कि अगर दूध घर वापस ले गया, तो माँ नाराज हो जायेगी। इतनी रात, इतनी दूर, दूध बेकार में क्यों ले गया? यह सब मैं कार्यालय के पिछवाड़ें में स्थित कुएं के किनारे खड़ा-खड़ा सोच रहा था। इतने में मेरे बालमन में बुद्धि आई कि अच्छा ठीक है, घर ले जाने की बजाय दूध को इस कुएं में उड़ेल देता हूँ। न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। माँ को बोल दूंगा कि दूध ठाकुर जी को व मोतलग जी को दे आया।

इसी उधेड़बुन में फिर एक बुद्धिमत्तापूर्ण विचार मन में आया कि 'दूध को कुएं में ही उडेंलना है, तो अपने पेट में ही क्यों न उड़ेल लूँ? इस बार मन का समाधान हुआ, और मैंने कुएं के किनारे खड़े होकर लाया हुआ दूध गट-गट पी लिया। अब घर वापस जाना था किन्तु अचानक मन में विचार कौंधा कि अब जाते समय तो ठाकुर साहब की खिड़कियों के सामने से ही गुजरना पड़ेगा। उस समय अगर ठाकुर साहब ने देख लिया तो? दूध तो मैं पी चुका।

खैर, राम-राम करते मैं दबे पैर घर वापस जाने के लिये निकला कि अन्त में जो होना था, वही हो गया। ठाकुर जी ने आवाज लगाई, ''कृष्ण! कहां जा रहे हो? आये नहीं?''

मेरी तो सिट्टी-पिट्टी गुम। मैं संकोच करता हुआ वापस लौट पड़ा थरमस तो खाली था। फिर पूरी कहानी सुनाई तो ठाकुर जी एवं मोतलग जी हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। वास्तव में ठाकुर जी ने मुझे आते हुए अपनी खिड़की से देख लिया था और वे मेरे अंदर पहुंचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अब जब भी मैं मिलता था तो दूसरों को मेरा परिचय

देते समय ठाकुर जी यह कहानी जरूर सुनाते थे।

महाविद्यालय में मैंने विज्ञान विषय लिया था कॉलेज के बाद संघ कार्य में लग जाते थे। नष्ट करने के लिये समय होता ही नहीं था, क्योंकि ठाकुर जी जैसा व्यक्तित्व हमारी टोह रखता था, संघ कार्य जैसे ही पढ़ाई में भी अब्बल रहना है, ऐसा हमारा उत्साह बढ़ाते थे (हालांकि मैं पढ़ाई में मध्यम था), हमारे व्यक्तित्व को पितृवत् संवारने का प्रयत्न करते थे।

मैं व्यवसाय में नया-नया पड़ा था। उसी सिलसिले में पहली बार दिल्ली गया था संघ कार्यालय में रुका था। ठाकुर साहब नहीं थे। मेरी पूरी खबर रखते थे। जिस दिन वापस आना था स्वयं गाड़ी तक छोड़ने आये।

सन् २००४ में छोटे बेटे की शादी थी। ठाकुर जी हमारे हर बड़े मंगल कार्यक्रम में शामिल होते थे। इस बार भी उनको शामिल होने का आग्रह किया था। अचानक पता चला कि किसी कारणवश ठाकुर जी नहीं आ रहे हैं। मैंने दूरभाष पर पुन: संपर्क किया, ''ठाकुर जी आप नहीं आ रहे हैं?'' तीसरे दिन (विवाह के दिन) अवाक् होकर देखता हूँ कि पूज्य ठाकुर जी गुवाहाटी में उपस्थित हैं। हम सभी के आनन्द का पार नहीं रहा। वास्तव में दूरभाष के बाद ठाकुर जी तुरन्त गाड़ी में बैठ गये थे। ऐसी थी ठाकुर जी की निश्छल आत्मीयता।

२०१०, मार्च में प्रतिनिधि बैठकों में कुरूक्षेत्र गया था। वहीं से कार द्वारा ठाकुर साहब के साथ नेरी शोध केन्द्र गया था। रास्तें में भोजन करने बैठे, तो देखा, ठाकुर साहब की खुराक हम लोगों से अच्छी थी। नेरी से लौटते समय मा. ठाकुर जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम 'श्री राम' की जीवनी दी, जो सीता मढ़ी के श्री कुंज विहारीजी जालान की लिखी हुई थी। जीवनी कुछ मोटी थी मुझे पुस्तक की प्रति देते हुए कहा, ''पढ़ोगे, तो दूंगा। दूसरे को मत देना। स्वयं पढ़ना। पूरी पढ़ना और मैंने उसे सर आंखों पर लगाकर ग्रहण किया।

नेरी शोध संस्थान के लिये कुछ वार्षिक राशि इकट्ठा कर भेजते रहने का मैंने वचन दिया था। ठाकुर साहब ने याद तो दिलाया, किन्तु साथ ही कहा, ''जिस प्रकार सहज रूप से हो सके, वैसे करना। किसी पर अनावश्यक दवाब न डालना। कुछ बंधुओं के नाम बताते हुए कहा था, ''उन्हें नेरी संस्थान में जरूर बुलाना। ठाकुर जी कहा करते थे, ''साधनों की चिन्ता न करते हुए लक्ष्य की तरफ बढ़े चलो, साधन अपने आप जुटते जायेंगे, कार्य अवश्य पूरा होगा।''

नेरी शोध संस्थान केन्द्र इसका जीता जागता उदाहरण है। मनाली के मनुधाम की कल्पना भी इसी प्रकार साकार हो रही है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक नेरी शोध संस्थान के भविष्य के कार्य के स्वरूप के बारे में कल्पना देते हुए साथ कार्यकर्त्ताओं को राय देते हुए, अथक चिन्तन करते हुए, देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति पूर्ण विश्वास के साथ ठाकुर साहब इस लोक से प्रयाण कर गये। किन्तु ठाकुर साहब की चिर-स्मृति हमारे दिलों में सदा बनी रहेगी एवं हमें इस ईश्वरीय कार्य में आगे बढ़ते रहने के लिये सदा प्रेरणा देती रहेगी।

लक्ष्य साधक जीवन दर्शन

चेतराम
प्रांत कार्यवाह
संघ कार्यालय,
बिलासपुर, हि.प्र.

मेरा मन पक्का हुआ

मेरा परिचय माननीय ठाकुर जी से १९७१ में आया। उस समय मैं संघ में नया ही था। मुक्तसर तहसील मेरे पास थी। माननीय ठाकुर जी का दो दिवसीय प्रवास था। वे मोटर साईकल पर आये। एक दिन मुक्तसर और दूसरे दिन भलोट का प्रवास किया। तीसरे दिन मैं उन्हें फाजिल्का छोड़ आया। ठाकुर जी से हुई बातचीत चर्चा, आदि के कारण ही मुझे लगा कि हाँ संघ का काम करना चाहिए। इससे पहले मेरा मन पक्का नहीं था। आत्मीयता पूर्ण एवं विश्वास से काम करने की बात ठाकुर जी ने मुझसे कही। मुझे लगा कि मैं संघ का काम कर सकता हूँ। यह परिचय धीरे-धीरे इतना प्रगाढ़ बनता गया जो अन्तिम सांस तक ठाकुर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। ठाकुर जी के साथ भावनात्मक लगाव ऐसा था कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन कार्य है।

ठाकुर जी के निर्णयों में सर्वोपरि संघ

घटना १९७९ की है। उन दिनों मैं रोपड़ जिला प्रचारक था। संभाग प्रचारक स्वर्गीय नारायण दास जी ने मेरा कार्य परिवर्तन कर मुझे पंजाब प्रान्त में भारतीय किसान संघ का कार्य दे दिया और श्री विजय जी जो वर्तमान में पंजाब प्रान्त सेवा प्रमुख हैं, उन्हें रोपड़ जिला प्रचारक का काम दिया गया। मैंने विजय जी का परिचय पूरे जिले में सभी कार्यकर्ताओं से करवाया। यह परिचय करवाने के बाद विजय जी और मैं हम दोनों मोहाली में श्री सुदर्शन जी के पास बैठे हुए थे। सुदर्शन जी बैंक में प्रबन्धक थे। कुछ देर बाद वहां सुदर्शन जी के पास स्वर्गीय नारायण दास जी का फोन आया। चेतराम जी और विजय जी को एक सूचना करनी है। सुदर्शन जी बोले, वे दोनों मेरे पास ही बैठे हुए हैं। आप स्वयं बात कर लो। मैंने फोन लिया तो मुझे वापिस रोपड़ बुला लिया कि तुम्हें इसी जिले में जिला प्रचारक के रूप में काम करना है। मेरी विदाई का कार्यक्रम भी हो गया था, विजय जी का परिचय भी सभी जगह हो गया था। थोड़ी शर्म भी महसूस हो रही थी, परन्तु अधिकारी का आदेश है तो उसे मानना ही है।

ऐसा कैसे हो गया तो पता चला कि ठाकुर जी से जब इस परिवर्तन की बात नारायण दास जी ने की तो ठाकुर जी ने प्रश्न किया कि क्या तुम्हें संघ का काम करने वाले कार्यकर्ता नहीं चाहिए। नारायण दास जी के पास कोई जबाव नहीं था। निर्णय बदल गया तथा पुन: मैं रोपड़ जिला प्रचारक हो गया। अर्थात् ठाकुर जी को प्रथम तौर पर संघ का कार्य चाहिए उसके बाद अन्य कार्य। इसी से जुड़ी हुई बात उनके अन्तिम क्षणों की आई। ठाकुर जी लुधियाना अस्पताल में थे। मेरा स्वास्थ्य भी कोई ज्यादा ठीक नहीं था।

ठाकुर जी का आदेश था कि तुम मेरे साथ ही रहोगे।

पूज्य महन्त सूर्य नाथ जी ठाकुर जी को मिलने अस्पताल में आए हुए थे। महन्त जी ने मेरा स्वास्थ्य देखा तो उन्होंने कहा कि आप दो दिन विश्राम कर लो, दवा ले लो तो पुन: यहां आ जाना। मैं आप को किसी कार्यकर्त्ता के घर पर छोड़ देता हूँ। ठाकुर जी को बताए बगैर यह काम होना नहीं था। मैंने महन्त जी को कहा कि आप ठाकुर जी को यह बात बताओ। महन्त जी ने ठाकुर जी को यह बात लिखकर दी। ठाकुर जी ने वह पढ़ा और स्वयं लिख कर दिया। तुम्हें महन्त जी के साथ नहीं जाना है। तुम्हें संघ का कार्य करना है। मैंने ठाकुर जी को लिखा जैसा आप कहेंगे, वैसा ही करूँगा। अर्थात् ठाकुर जी ने सोचा कि मैं संघ का काम छोड़कर साधु बन रहा हूँ। ठाकुर जी के लिए संघ सर्वोपरि था।

घटना ३ मई, १९७६ की है। आपातकाल लगा हुआ था। मैं रोपड़ में जिला प्रचारक था। ठाकुर जी के ठहरने की व्यवस्था जवाहर मार्केट में की। थोड़ी दूर पर ही भाखड़ा नहर बहती थी। ठाकुर जी ने कहा, चलो नहर की ओर चलते हैं। हम नहर की ओर चल पड़े। वहां पहुंचने पर कहा, चलो कपड़े खोलो और तैरते हैं। मुझे संकोच हो रहा था इतने तेज बहाव में कैसे तैरना। तैरना तो मैं जानता था पर पानी का बहाव तेज था। इतने में ठाकुर जी ने कपड़े खोल दिये और पानी में डुबकी लगाई और नहर को पार कर गए और वापिस भी आ गए। मैं २६ वर्ष का था मेरे पास कोई विकल्प न था और दिल पक्का करके मैंने भी हिम्मत कर ली। इस आयु में भी ठाकुर जी हिम्मत व आनन्द के साथ इतनी शक्ति भरे व दूसरों का उत्साह वर्धन कार्य करते रहते थे।

व्यवस्था पक्ष

एक दिन पण्डित जगन्नाथ शर्मा जी ठाकुर जी से मिलने कुल्लू आए। पण्डित जगन्नाथ जी का घर भुन्तर में है। पण्डित जी की इच्छा थी, कि ठाकुर जी यदि उनके घर पर अपने स्वास्थ्य लाभ के लिए रहें तो अपना घर पवित्र हो जाएगा। पण्डित जी ने ठाकुर जी से आग्रह किया कि मैं आप को भुन्तर ले चलता हूँ। वहां स्वास्थ्य लाभ लिया जाए। ठाकुर जी बोले 'यह व्यवस्था चेतराम जी देख रहे हैं। आप उन से बात कर लो।' ठाकुर जी व्यवस्था पक्ष को ध्यान में रखकर ही निर्णय किया करते थे।

नेरी शोध संस्थान से ठाकुर जी को कुल्लू श्री राम सिंह जी(कुल्लू जिला भाजपा अध्यक्ष) के घर पर स्वास्थ्य लाभ के लिए लाया गया। इस बात के लिए ठाकुर जी तैयार नहीं थे। क्योंकि उनका ध्यान नेरी के कामों में ही था। ठाकुर जी व्यवस्था पक्ष के पक्के आग्रही थे। डाक्टरों की सलाह अक्षरश: पालन करते थे। ठाकुर जी को नेरी के कामों से दूर कैसे रखा जाए जिससे उनका स्वास्थ्य जल्द ठीक हो इसके लिए डाक्टर से बातचीत करनी पड़ी। डाक्टर ने बताया, 'आप को पन्द्रह से बीस दिन ठण्डे क्षेत्र में रहने की आवश्यकता है। इस के लिए कुल्लू अथवा मनाली उपयुक्त रहेगा।'' ठाकुर जी एक दम मान गए। यदि ऐसा है तो ठीक है कुल्लू जाना उपयुक्त रहेगा। तब कुल्लू आने के लिए तैयार हुए।

मनुधाम जमीन की बात है तो ठीक है शिमला चले जाओ।

मुझे संघ कार्य की दृष्टि से शिमला जाना था। इधर ठाकुर जी कहीं जाने नहीं दे रहे थे। मैंने ठाकुर जी को कहा मुझे दो दिन के लिए शिमला जाना है। दो दिन बाद आ जाऊँगा। ठाकुर जी कुछ विचार करने लगे और कहा आपको क्या वहां मनुधाम की जमीन की बात करने के लिए मुख्यमन्त्री जी से मिलना है? मैंने हाँ कर दी। तो बोले, 'ठीक है! चले जाओ, वह काम जल्द ही हो जाना चाहिए। इस प्रकार मा. ठाकुर जी का लक्ष्य साधक विलक्षण जीवन दर्शन है।

जितने लोग उतनी विशेषताएँ

कशमीरी लाल
अखिल भारतीय संगठन मन्त्री
स्वेदशी जागरण मंच
धर्म क्षेत्र, शिव शक्ति मन्दिर, नई दिल्ली

ठाकुर जी के व्यक्तित्व को किसी एक कसौटी पर कसना दुष्कर कार्य है। जितने लोग उतनी विशेषताएं ठाकुर जी की बताते हैं। क्या कोई व्यक्ति इतनी प्रितिभाओं का धनी होता है? उनका अध्ययन, चिन्तन, निरन्तर सक्रियता, कठिन से कठिन कार्य को करने का सामर्थ्य रखना, भारत के कोने-कोने का भ्रमण और सभी कार्य को ईश्वरीय प्रसाद समझ कर करना ठाकुर जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का निदर्शन करवाता है।

घटना आपात काल के दौरान की है। सभी कार्य भूमिगत ढंग से हो रहे थे। रात का समय था। मैं अम्बाला में घर पर ही था। रात को कोई तीन व्यक्ति घर पर आए। माता जी ने यह सूचना मुझे दी। देखा तो ठाकुर जी अपने दो साथियों के साथ खड़े हैं। भोजन-पानी हुआ। अन्य चर्चाएं हुई तथा सभी सो गए। रात को ठाकुर जी को पेशाब जाना था। पेशाब घर बाहर की ओर था। ठाकुर जी अन्धेरे में पेशाब करने गए तो सामने एक दीवार थी। ठाकुर जी को यह पता नहीं था कि यह दीवार कच्ची है। जोर का हाथ लगाने से दीवार के साथ ठाकुर जी नीचे गिर गए। सारी दीवार नीचे चली गई। दीवार गिरने से सारे मुहल्ले के लोग भी इकट्ठे हो गए। यह क्या हो गया? कैसे हो गया? कोई गिरा तो नहीं किसी को लगी तो नहीं। ठाकुर जी शान्त चित्त से अपने कपड़ों को झाड़कर पहले ही ऊपर पहुंच चुके थे। दीवार ऊपर गिरने पर भी ठाकुर जी ने यही दर्शाया कि मुझे कुछ नहीं हुआ है। कोई चोट नहीं लगी। ऐसा आत्मविश्वासी, शक्तिशाली शरीर था ठाकुर जी का।

ब्रह्मपुत्र तैर कर पार की

नवकान्त बरूआ
असम प्रान्त सम्पर्क प्रमुख
गांव कामपुर, जिला नगांव, असम

सन् १९५१ में ठाकुर जी से मेरा प्रथम सम्पर्क हुआ। तब मैं बालक था। हमारे गांव 'कामपुर' (जिला-नगांव, असम) में शाखा आरम्भ हुई। ठाकुर जी हम बालकों को 'नीर-तीर' जैसे खेल खिलाते थे, तरुणों को दण्ड, व्यायाम-योग सिखाते थे, कबड्डी खिलाते थे, साथ ही खुद भी खेलते थे।

सांय शाखा के बाद एक दिन कहा, ''कल सवेरे अपना-अपना अंगोछा ले आना। कपिली नदी पर तैरने के लिये जायेंगे। ''उनका कहना था कि स्वयंसेवकों को तैरना, नौका चलाना, घोड़े की सवारी करना, साइकिल चलाना सब जानना चाहिए। वे कहते थे कि असम के महापुरुष शंकरदेव एवं वीर लाचित बरफूकन की केवल प्रशंसा करने से काम नहीं चलेगा, उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात भी करना पड़ेगा। शंकरदेव घोर बरसात में भी भरी हुई ब्रह्मपुत्र नदी को पार कर जाते थे। क्या हम वह काम कर सकते हैं? ठाकुर साहब की बातें सुनकर चार तरुण स्वयंसेवकों ने ब्रह्मपुत्र नदी को पार करने की हिम्मत जुटाई। उन चार तरुणों को लेकर वे गुवाहाटी के उजान बाजार घाट में ब्रह्मपुत्र में उतरे, उस पार जाने के लिये। दो के नाम मुझे याद हैं – स्वर्गीय श्री अतनु बरुवा तथा स्व. अरुण राय चौधरी। साथ में किराये पर एक नाव कर ली। ठाकुर जी ने कहा, ''जो थक जायेगा, वह नौका में सवार हो जायेगा।'' पांचों ने तैरना आरम्भ किया। तैरते गये, तैरते गये, तैरते-तैरते केवल ठाकुर जी उस पार अमीन गांव घाट पर उतरे, बाकी लोगों को बीच में ही नाव पर सवार होना पड़ा। अतनु ने मुझे बताया कि अमीन गांव से कुछ हाथ पहले ही नौका पर चढ़ना पड़ा। ऐसे बलिष्ठ थे अपने रामसिंह जी।

सन् १९५८ में कामपुर में शीत शिविर था। परम पूजनीय श्री गुरुजी आने वाले थे। एक बड़े मैदान में ३० छोटे तम्बू और मध्य में एक बड़ा तम्बू लगाना था। शिविर से चार दिन पूर्व ठाकुर जी पूरी बात समझाकर चले गये। योजनानुसार सारे तम्बू लगाये गये। शिविर से एक दिन पूर्व रात साढ़े आठ बजे ठाकुर जी आये, तो देखा कि तम्बुओं की खूंटियां एक पंक्ति में नहीं हैं, आगे-पीछे लगी हुई हैं। उन्होंने उसी रात सारे तम्बू खुलवाये एवं एक रस्सी तानकर, उसकी सीध में खूटियों को एक पंक्ति में फिर से गड़वाया। रात भर में तम्बू सुव्यवस्थित रूप में फिर से तान दिये गये। इस प्रकार छोटी-छोटी बातों के प्रति उनकी सूक्ष्म दृष्टि थी।

ठाकुर साहब में अदम्य साहस एवं सूझ-बूझ थी। सबको पता था कि उस समय असम में संघ कार्य करना कितना कठिन था। गांधी मारा पार्टी-गाँधी मारा पार्टी (गाँधी जी

को मारने वाली पार्टी) के नाम से संघ के बारे में चारों तरफ दुष्प्रचार था। ठाकुर साहब ने निश्चय किया कि सबसे पूर्व गणमान्य लोगों से सम्पर्क स्थापित करना होगा, उनके पते लेने पड़ेंगे, उन्हें समझायेंगे, तब काम आगे बढ़ेगा।

इस प्रक्रिया में पहले पहल उन्होंने मणिपुर में हाइकोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री कामाख्याराम बरूवा से संपर्क साधा। उनसे बातचीत की और उनके गले पूरी बात उतारी। तद्नन्तर उनके सहयोग से उनके जंवाई एवं प्राग्ज्योतिष कॉलेज के अध्यक्ष श्री तीर्थनाथ शर्मा, आर्य विद्यापीठ कॉलेज के अध्यक्ष श्री गिरिधर शर्मा तथा नगांव के नामी व वकील कॉलेज के अध्यक्ष श्री गिरिधर शर्मा तथा नगांव के एक अन्य नामी वकील श्री राधिका मोहन गोस्वामी से संपर्क स्थापित किया। इन सबको संघ के संबंध में युक्ति पूर्ण तथा नीति संबंधित यथोचित जानकारी देने के कारण संघ का कार्य असम मे धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

समय पालन के प्रति उनके मन में बड़ी निष्ठा थी। संघ का कार्यक्रम समय पर आरम्भ होना ही चाहिये, उपस्थिति की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यह आग्रह उनका सदा ही रहा। इसके लिये जो कुछ भी करना पड़े, वह करना चाहिये।

सन् १९६१ की बात है। तब असम में पहली बार संघ शिक्षा वर्ग लगा था। तब प्रथम बार मैं भी शिक्षक के नाते वहां गया था। वर्ग में मुझे एक बौद्धिक देने के लिये कहा गया। विषय था 'कथनी और करनी'। मैंने कहा, ''रामसिंह जी! मैं इस विषय पर नहीं बोल सकूंगा।'' ठाकुर जी बोले, ''क्यों नहीं बोल पाओगे? बोलना पड़ेगा। विषय बिन्दु मैं तुम्हें दे दूँगा।

मैंने जवाब दिया, ''बिन्दु देने से नहीं होगा न! मुझे तो कहना पड़ेगा कि देश के लिये, समाज के लिये सर्वस्व त्याग करना पड़ेगा, प्रचारक निकलना पड़ेगा। किन्तु मुझे तो प्रचारक निकलने में असुविधा है। अत: विषय को ही बदल दीजिये।'' ठाकुर जी गरज पड़े। रामसिंह ठाकुर यहां विषय परिवर्तन के लिये नहीं आया है, व्यक्ति-परिवर्तन के लिये आया है।

प्रचारक के रूप में पहली बार मुझे हाजो मुहकमा में भेजा गया। मेरे पिताजी तब मुझे अपनी गाड़ी से छोड़ने आये थे। ठाकुर जी मुहकमे के 'बामुन्दी' ग्राम में एक कार्यकर्त्ता के घर पर निवास के लिये छोड़कर आ गये। वहां बहुत असुविधायें थीं, जिन्हें याद करके अभी भी आंखों में पानी भर आता है। एक दिन बाद रामसिंह जी पुन: गए। ठाकुर जी ने पूछा, ''कैसे हो?'' मैंने कहा, ''मैं नहीं रुकूंगा। मैं वापस जाऊँगा। इन परिस्थितियों में मैं तो नहीं रह सकता।'' ठाकुर जी ने प्यार से कहा, ''सब परिस्थितियों में मनुष्य को रहना सीखना चाहिए। मनुष्य को परिस्थितियों का दास नहीं बनना चाहिए। परिस्थितियों को अपने वश में करके आगे बढ़ना चाहिये।'' मैंने स्वीकार कर लिया, ''अच्छा, आप कहते हैं तो रहूँगा।'' कामपुर से १६ प्रचारक निकले, जिनमें से तीन को छोड़कर बाकी सभी का श्रेय रामसिंह जी को ही जाता है। कोई २० वर्ष रहा, कोई १५

वर्ष, कोई ५ वर्ष तो कोई आज तक। गुवाहाटी में असम का प्रान्तीय कार्यालय तब उजान बाजार स्थित धीरेश्वर कुटीर में था।

रामसिंह जी देर रात तक पत्र लेखन करते थे। अति प्रात: उठकर नित्य कर्म निवृत्ति के बाद तैल-मर्दन, व्यायाम व स्नान के पश्चात् गीता पाठ कर तैयार हो जाते थे। कार्यालय से करीब ५ मील दूर 'मालीगांव' में प्रात: काल समय पर शाखा प्रारम्भ कराने के लिये अति प्रात: कभी साइकिल पर, तो कभी मोटर साइकिल पर निकल पड़ते तथा स्वयंसेवकों को जगाते-जगाते संघ स्थान पर पहुंच जाते थे।

एक बार की बात है मा. ठाकुर जी कामपुर में हमारे घर में एक विवाह में सम्मिलित हुए। विवाह के बाद, मात्र मधुकर जी लिमये को पीछे बैठाकर गुवाहाटी की तरफ मोटर साइकिल से रवाना हो गए।

सोनापुर पार करने के बाद मोटर साइकिल का एक्सीडेंट हो गया। मा. मधुकर जी ने गुवाहाटी मेडीकल कॉलेज ले जाने के लिये एक गाड़ी की व्यवस्था की। गाड़ी चालक ने मा. ठाकुर जी को सांत्वना देते हुए कहा, ''कोई चिन्ता मत कीजिये, सब ठीक हो जायेगा।'' ठाकुर जी ने तुनक कर कहा, ''तुम गाड़ी ठीक से चलाओ। मैं रो रहा हूँ क्या?'' मेडीकल कॉलेज पहुँचे तब डॉ. दिलीप सरकार (वर्तमान में एनएमओ के राष्ट्रीय सलाहकार) वहां रजिस्ट्रार थे।

ठाकुर जी के घुटनों की गुरु शल्य चिकित्सा हुई। दो माह उनको अस्पताल में ही रहना पड़ा। अस्पताल में पन्द्रह दिन गुजरने के पश्चात् ठाकुरजी ने पुराने कार्यकर्त्ता श्री ऊमाशंकर बैनर्जी को आदेश दिया, ''कल प्रात: थोड़े सेब, डेढ़ किलो बुंदिया भुजिया ले आना, चाय की व्यवस्था कर लेना एवं १०-१५ फोल्डिंग कुर्सियों की व्यवस्था कर लेना।'' शंकर दा हंसे, मुझे कहा, ''नवदा, ठाकुर जी इतनी व्यवस्थाएँ क्यों करवा रहे हैं, कौन आयेगा?''

कहे अनुसार अगले दिन व्यवस्थाएँ की गईं। प्रात: देखा तो नियत समय पर १० डॉक्टर उपस्थित थे तथा मा. ठाकुर जी ने बिस्तर पर बैठे-बैठे ही डेढ़ घंटे तक उन लोगों की बैठक ली। अद्‌भुत दृश्य! संघ के संबंध में एवं समाज के संबंध में उन्होंने डॉक्टरों को उद्‌बोधन दिया। बैठक के बाद सभी को जलपान एवं चायपान करवाया। दो माह बाद अस्पताल से विदाई के समय डाक्टर, नर्सें, सफाई कर्मचारी सभी ठाकुर साहब को गाड़ी तक छोड़ने के लिये आये। यह थी उनकी विलक्षण संगठन शक्ति।

सन् १९८१ में वे असम के दौरे पर आये थे। तब जागीरोड़ में पुराने मित्र श्री लालचन्द ठाकुर जी के घर पर १० वर्ष के अन्तराल पर गये। वहां की उन्हें प्रत्येक याद ताजा थी। इसी प्रकार श्री बरठाकुर ने प्रधानाध्यापक के पद से अभी अवकाश ही ग्रहण किया था। उनको उनके घर पर की एक जगह दिखाकर रामसिंह जी ने पूछा, ''बरठाकुर, यहां एक कुंआ था, वह अब तो नहीं दिख रहा है, उसका क्या हुआ? उस कोने में एक अमरूद का पेड़ था उसका क्या हुआ?'' बरठाकुर ने मेरी तरफ देखकर

कहा, ''हाँ-हाँ! एक कुआं तो था, किन्तु उसे कब भर दिया गया, मुझे तो याद नहीं है। अमरूद का पेड़ भी इस कोने में तो था, किन्तु उसे कब कटवा दिया गया, मुझे याद नहीं आ रहा।

इसी प्रकार अखिल भारतीय बैठक में जब जाते हैं, तो जैसे ही जाकर ठाकुर जी को प्रणाम करता हूँ, ठाकुर साहब हाथों हाथ पूछते, ''कामपुर के कर्मेश्वर बोरा की पांच कन्याएँ थीं, सभी का विवाह हो गया क्या? श्रद्धानन्द के लड़के-लड़कियों का क्या हाल-चाल है? लखेश्वर गोहाईं कैसे हैं?''

किसी भी कठिन परिस्थिति में तत्क्षण उचित निर्णय लेने की अद्‌भुत क्षमता ठाकुर साहब में देखीं। सन् १९६२ में कामपुर हाई स्कूल में संघ शिक्षा वर्ग लगाने के लिये लिखित अनुमति मिल गई थी। किन्तु वर्ग से चार दिन पूर्व अचानक सरकार का लिखित आदेश आया कि कामपुर हाई स्कूल में संघ का प्रशिक्षण शिविर नहीं लग सकता। यह खबर ठाकुर जी को गुवाहाटी भेजी गई। ठाकुर जी ने हाथों हाथ मधुकरजी से कहा, ''मधुजी, संघ शिक्षा वर्ग तो कामपुर में ही होगा। चाहे हाई स्कूल में हो, चाहे तत्रस्थ केन्द्रीय नामघर व नाट्य गृह में। आप आज ही कामपुर जाइये। प्रफुल्ल बोरा, कर्मेश्वर बोरा आदि वहां हैं, उनसे परामर्श करके स्थान निश्चित कीजिये।''

उसी वक्त मधुजी कामपुर रवाना हो गये। नाट्य गृह को वसति गृह के रूप में काम में लाना पड़ा और नामघर को बौद्धिक कक्ष के रूप में, किन्तु संघ शिक्षा वर्ग तो कामपुर में ही सम्पन्न हुआ। निर्णय लिया, तुरन्त और उचित। सन् १९६७ की बात होगी। ठाकुर रामसिंह जी धीरेश्वर कुटीर (गुवाहाटी) में प्रांत भर के प्रचारकों की बैठक ले रहे थे। वहां के कार्यालय प्रमुख ने तुरन्त उन्हें एक लिफाफा लाकर दिया। ठाकुर जी ने उसे खोलकर पढ़ा और जेब में रख लिया। फिर बैठक डेढ़ घंटे चली, जिसमें बीच-बीच में स्वाभाविक हास्य विनोद भी हो जाता था। बैठक समाप्त होने के कुछ देर बाद हम लोगों ने चुपचाप देखा कि ठाकुर साहब अपने कक्ष में शान्त होकर बैठे हुए थे, आंखें बन्द थीं एवं सुबक रहे थे। हम लोगों में से किसी का ठाकुर साहब को कारण पूछने का साहस नहीं हुआ। किन्तु अपने पुराने प्रचारक श्री गणेश देव शर्मा ने साहस कर पूछ ही लिया, ''ठाकुर साहब, कभी आपको रोते हुए नहीं देखा, आज आपकी आंखों में पानी क्यों?''

ठाकुर साहब ने जेब से निकालकर वह तार गणेशदा के हाथों में थमा दिया। तार में लिखा था – 'Mother Expired' ऐसी थी ठाकुर जी की स्थितप्रज्ञता।

विकट परिस्थिति के धैर्य साधक

जय कृष्ण शर्मा
पूर्व भाजपा प्रदेशाध्यक्ष,
गांव व डा. हरोली,
जिला ऊना, हि.प्र.

इसका रिवार्ड जानते हो? हाँ ,मौत!

बात सन् १९८६ बैशाखी के दौरान की है। पंजाब में आतंकवाद शिखर पर था। उस दिन मैं अमृतसर में था और मुझे निजी कार्य से दिल्ली जाना था। श्री रामेश्वर जी का फोन आया कि राकेश जी आप से मिलना चाहते हैं। मैं राकेश जी से मिलने के लिए चला गया। हमारी बात चलते-चलते रिक्शा में ही हुई। राकेश जी ने बताया कि माननीय ठाकुर रामसिंह जी और श्री विश्वनाथ जी दोनों आप से मिलना चाहते हैं। मैंने उन्हें दिल्ली जाने की बात बताई। उन्होंने कहा कि वे दिल्ली में ही हैं और आप उनसे दिल्ली में ही मिल लें। दिल्ली में, मैं पहले अपने ससुराल गया और दूसरे दिन प्रात: झण्डेवाला कार्यालय चला गया। जाते ही मैं माननीय विश्वनाथ जी से मिला। उन्होंने कहा पहले ठाकुर जी से मिल लो, उसके बाद हम सारी बात बैठकर करेंगे। ठाकुर जी के साथ मैं उनके कमरे में बैठ गया। ठाकुर जी ने पंजाब की दु:खद स्थिति का जिस प्रकार वर्णन किया वह मुझे आज भी नहीं भूलता है। उन्होंने कहा कि पंजाब की लड़ाई हिन्दू-सिक्ख की नहीं है बल्कि यह तो पाकिस्तान द्वारा छेड़ा गया गुरिल्ला युद्ध है। पंजाब में हिन्दू सिक्खों में नफरत पैदा करने की पाकिस्तान योजना कर रहा है। इसको सफल नहीं होने देना है। पंजाबियों में जो भय का वातावरण बना है, उसको दूर करने की आवश्यकता है ताकि लोग पंजाब से पलायन न कर सकें। उन्होंने मुझे कहा कि सब तरफ नजर दौड़ाने पर हमारा ध्यान आपकी तरफ गया। है। क्या यह काम करने के लिए आप तैयार हैं? उन्होंने विस्तार से सारी योजना बताई मैंने हां कर दी। ***तब उन्होंने मुझसे पूछा कि आपको इस का रिवार्ड पता है? मेरा उत्तर था — हाँ, मौत।*** मैंने कभी ठाकुर जी की आंखों में आंसू नहीं देखे थे। वह भावुक हो उठे थे और उनकी आंखों से आंसू छलक आए। अपनी आंखें पोंछते हुए, उन्होंने कहा, ''इससे ज्यादा हम दे भी नहीं सकते हैं।''

यह भावनापूर्ण क्षण मुझे आज भी ताजा है। उसके बाद उन्होंने मुझे माननीय भाउराव देवरस जी से मिलाया और बाद में श्री विश्वनाथ जी और ठाकुर जी ने मेरे साथ विस्तार से बात की तथा पंजाब में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के संयोजक के नाते जिम्मेवारी दे दी गई।

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का कार्य करने के लिए मैं प्रदेश भर में कार्यकर्त्ताओं से

मिल रहा था। माननीय ठाकुर राम सिंह जी अमृतसर आए हुए थे। डॉक्टर बलदेव चावला जी ठाकुर जी से मिलने के लिए वहां आए। ठाकुर जी ने मुस्कराते हुए डॉक्टर चावला को कहा कि डॉक्टर साहिब जय कृष्ण जी क्या कह रहे हैं? इनको समिति के कार्य के लिए प्रदेश का अध्यक्ष चाहिए। डॉक्टर बलदेव चावला ने कहा कि ठाकुर जी क्या करें जिस से भी बात करते हैं वह कहता है कि गोली कौन खाएगा? ठाकुर जी ने तुरन्त कहा, ''पहली गोली आप खाओ न।'' डॉ. चावला ने कहा यह आदेश है या सुझाव है। ठाकुर जी ने तुरन्त कहा ''आदेश ही समझ लो।'' ठाकुर जी की वाणी में जो आत्म-विश्वास और अपनापन था वह राष्ट्रभक्ति के भाव से परिपूर्ण था। वह मुझे आज भी स्मरण है कि डाक्टर बलदेव चावला राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के प्रदेश अध्यक्ष बनने को तैयार हो गए। उसके बाद पंजाब में हिन्दू-सिक्ख भाईचारे का निर्माण करने व पंजाब के लोगों में आत्म विश्वास पैदा करने के लिए जो आन्दोलन चला वह इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पन्ना बन गया। ठाकुर जी का मार्गदर्शन व प्रेरणा से एक बहुत प्रभावी आन्दोलन खड़ा हो सका।

कार्यकर्त्ता के स्वास्थ्य की चिंता

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का कार्य बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था। सभी कार्यकर्त्ता पूरे उत्साह के साथ जुटे हुए थे। अचानक मेरी आंखों की नजर चली गई। यह रैटिना डिटैचमैंट की तकलीफ थी और मैं इस समस्या के कारण चितिंत हो गया मैंने माननीय भाउराव देवरस जी को पत्र लिखा कि मैं एक सहायक लेकर इस आन्दोलन में चलता रहूंगा। परन्तु एक दिन मैं हैरान हो गया कि माननीय ठाकुर जी अपना सारा प्रवास बीच में छोड़कर मेरे पास फतेहगढ़ चूड़ियां, जिला गुरदासपुर मेरे घर पहुंच गए और कहने लगे कि दक्षिण में शंकराचार्य जी द्वारा एक अस्पताल शुरू किया गया है। वह आंखों का अस्पताल है तथा वहां पर जाकर उपचार करवाना ठीक रहेगा। उसके बाद ठाकुर जी अमृतसर चले गए। वहां से विचार-विमर्श के बाद उनको पता लगा कि अमृतसर में ही डाक्टर राजवीर सिंह रैटिना का ऑप्रेशन करते हैं। उन्होंने मुझे तुरन्त अमृतसर बुलाया और अमृतसर में ही मेरा ऑप्रेशन हो गया। मेरी आंखों की नजर वापिस आ गई। ठाकुर जी की आत्मीयता और कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित करने की अद्‌भुत क्षमता थी। यह उनके भाषण में नहीं बल्कि उनके आचरण में थी। उनका अपनापन मुझे भुलाए नहीं भूलता।

१९७१ में भारत पाकिस्तान युद्ध चल रहा था और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से सैनिकों की सेवा के लिए जगह-जगह कैंटीनें चलाई जा रही थी और बार्डर पार सेना के अधिकारियों से सम्पर्क भी रखा जा रहा था। मेरे पास उन दिनों गुरदासपुर जिला प्रचारक का दायित्व था। उन दिनों भी ठाकुर जी कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित करते रहते थे। युद्ध में पाकिस्तानी फौजों को खदेड़ दिया गया था। ठाकुर जी नानक, कठुआ और

पाकिस्तान के सुक्खोंचक तक गए और इसमें उनके साथ विशेष रूप से क्षेत्रीय प्रचारक माननीय बापूराव मोघे जी, विभाग प्रचारक श्री नारायणदास जी व विभाग संघचालक माननीय पंडित जगन्ननाथ जी, विभाग कार्यवाह श्री जनकराज भी थे। जब हम सुक्खोंचक पहुंचे तो पाकिस्तानी सेना कैसे मोर्चा छोड़कर भाग चुकी थी, यह दृश्य देखने लायक था। मोर्चों पर खंदकों में सामान बिखरा पड़ा था। वहां के हाई स्कूल के ग्राउंड में सब लोग पहुंचे। उसके साथ ही एक ईदगाह भी थी। उस समय ठाकुर जी का उत्साह और प्रसन्नता देखते ही बनती थी। माननीय ठाकुर जी ने उत्साहित होकर कहा कि यहां संघ की प्रार्थना करेंगे और वहां पर 'नमस्ते सदा वत्सले ...' स्वर गूंजा। माननीय ठाकुर जी ऐसे लग रहे थे कि जैसे वह फौज के अधिकारी हों और उनकी आज बड़ी विजय हुई हो। उनका वीरता पूर्ण उत्साही व भावुक स्वरूप मुझे आज भी नहीं भूलता है।

१९७५ में श्रीमती इंदिरा गांधी ने पूरे देश में आपातकाल घोषित कर दिया था। एक ही रात में सारे देश के नेताओं की गिरफ्तारियां हो गई थीं। अखबारों पर जबरदस्त सैंसर लग गया था। कई समाचार पत्रों ने सम्पादकीय के स्थान पर बड़ा भारी प्रश्न चिन्ह लगाकर वह कॉलम खाली छोड़ने शुरू कर दिए। पूरा देश अंधकार में चला गया। मानों पूरा देश ही जेल बन गया था। उस समय माननीय ठाकुर राम सिंह जी आपातकालीन भूमिगत कार्य योजना के सूत्रधार थे। अनेक कार्यकर्त्ताओं को भूमिगत योजना चलाने के लिए सक्रिय करना, उन्हें प्रेरणा देना तथा गुप्त पत्र छापने व बांटने की योजना करना। ऐसी कुशलतापूर्ण कार्य करने की उनकी क्षमता आज भी नहीं भूलती है।

नींद में भी कार्य का चिन्तन

उन दिनों मैं भारतीय इतिहास संकलन समिति हिमाचल प्रदेश का महामन्त्री था। मा. ठाकुर जी ने मुझे एक कार्यक्रम की तैयारी के निमित श्री विजय मोहन कुमार पुरी जी के घर धर्मशाला बुलाया। रात को जिस कमरे में मैं सोया हुआ था उसी कमरे के साथ वाले कमरे में ठाकुर जी के सोने की व्यवस्था भी की गई थी। इन दोनों कमरों के दरवाजे साथ जुड़े हुए थे। मैंने आधी रात को ठाकुर जी को कुछ बोलते हुए सुना तो मैं उनके कमरे में चला गया। मैंने देखा कि ठाकुर जी सोये हुए हैं और कुछ बोल रहे है, ''ऐसे काम नहीं होगा। किसी भी काम के लिए संगठन का आधार बहुत जरूरी है। पहले स्थानीय समितियां बनानी होंगी। इसके लिए प्रवास करना होगा'' आदि-आदि ...। मैं हैरान हो गया कि ठाकुर जी सोते-सोते और चलते-फिरते अपने कार्य की चिन्ता करते रहते हैं। संगठन का कार्य और ठाकुर जी का जीवन दोनों एक रूप हो गये थे। यह बात उनके जीवन में प्रकट हो रही थी। ऐसे ध्येय निष्ठ, तपस्वी, संगठन कुशल ठाकुर रामसिंह जी को मेरा शत्-शत् नमन।

ठाकुर जी स्वयं इतिहास बन गए

प्रेमचन्द गोयल
कार्यकारिणी सदस्य उत्तर क्षेत्र
18 सी, 1017–18 सैक्टर, चण्डीगढ़

ठाकुर जी के जीवन को शब्दों में बांधना मुश्किल कार्य है। मेरा परिचय ठाकुर जी से आसाम से पंजाब आने पर ही हुआ। उनके जीवन के बारे में यह कुछ पंक्तियाँ कह सकता हूँ :

वह कैसे थे राही, स्वयं राह बन गए,
वह कैसे थे पथिक, स्वयं पथ बन गए।।
वह कैसे थे इतिहास के विद्यार्थी,
स्वयं इतिहास बन गए।।

ठाकुर जी का जीवन विश्वास व कर्मशीलता से भरा हुआ था। चुनौतियाँ उनकी मित्र थीं। चुनौतियों का डटकर सामना करना, उसी में स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण करवाना ठाकुर जी की विशेषता थी। जहां भी गए अपने पदचिन्ह छोड़ गए।

९० वर्ष की आयु में वे इतिहास के राष्ट्रीय कार्य से मुक्त हुए। उनके मन में इतिहास के शोध के लिए स्थाई केन्द्र खड़ा करने की योजना भी पूर्व से ही चल रही थी। अब उसे साकार रूप देने का समय आ गया। पूरे मनोयोग से ठाकुर जी इस काम में गए और यह केन्द्र अल्प काल में ही खड़ा हो गया।

भारत अखण्ड हो यह विषय भारत के युवाओं के जहन में स्थान बनाए इसके लिए बड़े स्तर के कार्यक्रम हाथ में लिए। दिल्ली में भव्य कार्यक्रम हुआ। पूजनीय सरसंघचालक उसमें उपस्थित हुए। अभी पंजाब में कार्यक्रम तय कर गये। ठाकुर जी अनथक राही थे।

हृदय की स्वच्छता

विश्वनाथ शेखड़ी
19/77, पंजाबी बाग (पूर्व)
नई दिल्ली – 42

ठाकुर राम सिंह जी का नाम मैंने पहली बार १९४२ में अपने परममित्र श्री ब्रह्मदेव बैहल के मुख से सुना था। बैहल जी लाहौर माडल टाउन शाखा के मुख्य शिक्षक थे और ठाकुर जी उस शाखा के स्वयंसेवक बने। बैहल जी एक बहुत निपुण और प्रभावशाली स्वयंसेवक थे। वह स्यालकोट में मेरे साथ स्कूल में और कॉलेज में पढ़े थे। उन्होंने १९४० में एक शाम मुझे अपने फ्लैट में ले जाकर दो घण्टे में इतना प्रभावित कर दिया कि अगले दिन ही उनके साथ मैं संघ की शाखा में चला गया और बाद में मैं एक पूर्ण निष्ठावान स्वयंसेवक बना और १९४१ में उन्हीं के साथ मैं नागपुर में

प्रथम वर्ष प्रशिक्षण के लिए ओटीसी में चला गया।

बैहल जी अपने परिवार के साथ लाहौर मॉडल टॉउन में चले गए। ठाकुर जी का नाम वह बहुत गर्व से लिया करते थे और कहा करते थे कि यह उनके स्वयंसेवक हैं और उन्हीं की प्रेरणा से वह अपने पहले वर्ष में शिक्षा के लिए खण्डवा गए और फिर प्रचाकर भी बन गए। उस समय तक मैं ठाकुर जी को मिला तो नहीं था, परन्तु उनके बारे में लगातार सुनता रहा कि उन्होंने आसाम और उत्तरपूर्व के प्रदेशों में बहुत अच्छा काम किया है। मेरी उनसे मुलाकात पाकिस्तान बनने के पश्चात् झण्डेवाला संघ कार्यालय के दफ्तर में चमन लाल जी ने करवाई। चमन लाल जी जो कि स्यालकोट के ही थे और मेरे साथ १९४१ के नागपुर वर्ग में गए थे, मैं अक्सर उनसे मिलने उनके कमरे झण्डेवालान में जाया करता था। मैंने ठाकुर जी को याद दिलाया कि उनके नाम की पहचान मुझे ब्रह्म देव जी ने करवाई थी तो उनसे हमारी आपस में ब्रह्मदेव जी को लेकर उनके परिवार के लोगों के बारे में लम्बी बातचीत हुई।

जब उनको अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का काम दिया गया तो उन्होंने मुझे उसकी एक कमेटी का सदस्य बना लिया। जब अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के कार्यालय को दिल्ली में बनाने की बात आई तो यह मेरे निवास स्थान पर विधिपूर्वक हवन यज्ञ करके किया गया। भोजन के समय जब वह मेरी धर्मपत्नी को मिले और उन्हें पता चला कि वह श्री बलराज मधोक की छोटी बहन है तो वह मेरे अधिक निकट आ गए। उसके पश्चात् वह मुझे अपना छोटा भाई ही समझने लगे। चमन लाल जी के होते हुए यह दोनों महीने में एक बार मेरे बुलाने पर मेरे घर खाने के लिए आया करते थे। जिससे हमारी निकटता और दृढ़ होती गई। चमन लाल जी के स्वर्गवास के बाद वह अकेले ही आया करते थे।

ठाकुर जी और मधोक जी दोनों इतिहास की एमए क्लास में पढ़े थे। एक ही साल में दोनों ने एमए की परीक्षा दी और उसमें पहला और दूसरा स्थान पाया। यह एफसी कॉलेज लाहौर में पढ़ते थे और मधोक जी डीएवी कॉलेज लाहौर में। मधोक जी की प्रेरणा से ही वह संघ के स्वयंसेवक बने। जब दोनों ही संघ के प्रचारक के रूप में १९४२ में निकले तो उनकी आपस में घनिष्ठता और बढ़ गई जो कि ठाकुर जी ने अपने जीवन के अन्त तक निभाई। कुल्लू से उनका जब दूसरा फोन आया तो उन्होंने मुझे कहा कि मेरी अस्वस्थता के बारे में बलराज जी को बता दो। बलराज जी के बीजेपी और आर. एस. एस. से विमुख होने पर भी ठाकुर जी ने अपना सम्बन्ध उनसे बहुत अच्छा बनाए रखा। पिछले साल उन्होंने अपनी संस्था की ओर से दिल्ली में बलराज जी को सम्मान देने के लिए सभा बुलाई, उनको मानपत्र दिया और उनके गुणों की बहुत प्रशंसा की। यह बात उनके हृदय की स्वच्छता को प्रमाणित करती है। उनका हमारे साथ प्यार व आत्मीय सम्बन्ध हमें अपने जीवन के अन्त तक याद रहेगा। हम कभी भूलेंगे नहीं।

साढ़े सात बजे का बुलावा

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
प्राध्यापक संस्कृत विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर

दिनांक ३-७-२०१०को छोटे चेतराम जी और मैं अपराह्न मेरे घर में ही इतिहास दिवाकर के शोध पत्रों पर चर्चा कर रहे थे। नेरी में ही स्थापित किए जाने वाले भारत के १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन की रूपरेखा के राष्ट्रीय संग्रहालय की स्क्रिप्ट लिखने के सन्दर्भ में ठाकुर रामसिंह जी द्वारा दिए गए निर्देशों की चर्चा भी उसी दिन हुई। मैंने चेतराम जी से कहा कि मैं तीन दिन बाद नेरी आकर ठाकुर जी द्वारा दिए गए निर्देशों को कार्यान्वित करने की रूपरेखा दिखाने वाला हूँ। चेतराम जी छ: बजे के लगभग मेरे घर से नेरी चले गए। मुझे कहा गया था कि ठाकुर जी कुछ अस्वस्थ चल रहे हैं। साढे सात बजे मुझे नेरी से चेतराम जी का फोन आया कि आपको ठाकुर जी अभी और इसी वक्त नेरी बुला रहे हैं।

मैं सामान्य भाव लिए घर से निकला और सीधे नेरी पहुंचा, क्योंकि ठाकुर जी के आदेश पर हम 'क्यों' शब्द प्रयोग नहीं किया करते थे। मैं सीधा ठाकुर जी के कक्ष पहुंचा। उस समय ठाकुर जी मोहन भागवत जी को एक पत्र डिक्टेट करवा रहे थे। मुझे कुर्सी पर बैठने का संकेत किया, मैं बैठ गया और गौर से सुनता रहा। पत्र सम्पन्न कर वे सीधे मुझ से मुखातिब हुए। उन्होंने सीधे मुझसे कहा, ''डाक्टर साहब, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। आप अब यहां के लेखन के कार्य को देखें।'' ये वाक्य कहकर वे कुछ समय के लिए चुप हो गए। मैं सन्नाटे में कुछ भाव टटोलने लगा। पहली बार मैंने उन्हें भावों में डूबे देखा। मैंने उन्हें लिखित रूपरेखा दिखाई और कहा कि मैंने स्क्रिप्ट लिखने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। उन्होंने एक ही शब्द प्रयोग किया 'बहुत अच्छा'। पहली बार मैं भी गहरी चिन्ता में डूब गया। उस रात मैंने ठाकुर जी के साथ रात्रि का भोजन लिया। चिन्ता और चिन्तन साथ-साथ थे। लगभग १०:३० बजे मैं वापस घर लौटा।

अगले दिन मैंने फोन पर ठाकुर जी की तबीयत के सन्दर्भ में पूछा तो पता चला कि उनकी हालत वैसी ही है। दिन को डाक्टर ने जांच की। दिनांक ८-७-२०१० को उन्हें हमीरपुर के रीजनल अस्पताल में भर्ती किया गया। मुझे जैसे ही सूचना मिली, मैं तुरन्त अस्पताल चला गया। वे आई.सी.यू. में भर्ती थे। मैं उनसे मिलने कक्ष में गया। उन्होंने मुझे स्टूल पर बैठने को कहा। मैं बैठ गया। उन्होंने दीवार पर टंगे यन्त्र की ओर इशारा करते हुए मुझ से पूछा कि यह यन्त्र क्या बताता है? मैंने कहा कि यह दिल की धड़कनों की ओर संकेत करता है। उन्होंने फिर पूछा कि आप को क्या लगता है? मैंने यन्त्र की ओर देखते हुए कहा कि सब ठीक है, डाक्टर समस्याओं की जांच कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद मैं कक्ष से

बाहर आ गया। मैं बाहर बैठा ही था कि ९:३० मिनट पर ठाकुर जी का पुन: बुलावा आया। मैं तुरन्त कक्ष के अन्दर गया। उन्होंने मुझे अपने बैग को लाने के लिए कहा। मैं तुरंत बैग लाया। उन्होंने फिर कहा कि इस बैग को खोलें। मैंने बैग खोल दिया। उन्होंने फिर कहा कि इसमें से गीता पुस्तक को बाहर निकालें। मैंने गीता बाहर निकाल दी। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक के अन्दर मैंने ब्रह्माण्ड का लेटैस्ट छपा फोटो रखा है, आप उसे स्क्रिप्ट के लिए अपने पास रखें। मैंने उस फोटो को अपने हाथ में लिया। उसके पश्चात् मेरी ओर वे निश्चिन्त भाव से देखने लगे। मैंने उनसे कहा कि वे निश्चिन्त रहें क्योंकि स्क्रिप्ट लेखन का कार्य शुरू कर दिया गया है। फिर उन्होंने वही शब्द प्रयोग किया 'बहुत अच्छा'। कुछ ही समय पश्चात् उन्हें लुधियाना ले जाया गया।

उन्ही दिनों मेरे बच्चों के स्कूल में ग्रीष्मकालीन अवकाश हुआ। परिवार चौपाल, जिला शिमला अपने घर चला गया। मैं हमीरपुर में ही था। मैंने तुरन्त पुस्तकें उठाईं और अध्ययन प्रारम्भ किया। गहन चिन्तन और मनन कर मैंने ठाकुर जी द्वारा निर्देशित संग्रहालय की स्क्रिप्ट लगभग तैयार कर ली। लुधियाना से भी ठाकुर जी के अच्छे स्वास्थ्य की खबर मिल रही थी। मेरे मन में बसी चिन्ता अब दूर होने लगी थी। मैं दुगने उत्साह से काम में जुटा था। सूचना मिली कि ठाकुर जी दिनांक ३-८-२०१० को नेरी लौट रहे हैं और एक दिन रुकने के पश्चात् वे स्वास्थ्य लाभ के लिए कुल्लू चले जाएंगे।

मैं बहुत उत्सुक था ठाकुर साहब के इलाज के पश्चात् की एक झलक पाने को। सायंकाल ठाकुर जी गाड़ी से नेरी शोध संस्थान पहुँचे। मैं एकाग्रचित होकर उन्हें निहारने लगा। कमज़ोर तो थे परन्तु मुझे वे स्वस्थ लगे। मैं बहुत खुश हुआ कि अब कोई समस्या नहीं। कक्ष में बैठकर उन्होंने जल ग्रहण किया और दस मिनट के भीतर मुझे तुरन्त बुलाया। थकान तो थी, परन्तु मुझे उन्होंने पैन और कागज़ निकालने का निर्देश दिया। मैं लिखने बैठ गया।

उन्होंने मेरे और मेरे परिवार के हालचाल पूछे और तुरन्त विषय पर आ गए। उन्होंने मुझे संग्रहालय का प्रस्तावित नाम लिखवाया। मैंने लिखा, लिखने के पश्चात् बहुत विनम्रता से कहने लगे, ''डाक्टर साहब! यह जो मैंने संग्रहालय का नाम लिखवाया है, यह मेरा सुझाव है, बाकि आप डा. विद्याचन्द जी के साथ बैठकर स्वयं निर्णय लें।'' विचारों में स्वतन्त्र ऐसे विचारक की ओर मैं कुछ देर टकटकी लगाए देखता रहा। वह किसी विचार को थोपते नहीं थे अपितु सभी के समक्ष चिन्तन के लिए परोसते थे।

अगले दिन संग्रहालय के शुभारम्भ का पूजन था। ठाकुर जी स्वयं सीढ़ियां चढ़ने में असमर्थ थे। उन्होंने मुझे और संग्रहालय के कला पक्ष के प्रभारी अश्वनी जी को पूजा में बैठने का निर्देश दिया। पूजा सम्पन्न हुई परन्तु मैं बार-बार ठाकुर जी की अनुपस्थिति महसूस कर रहा था। भोजनोपरान्त ठाकुर जी कुल्लू के लिए रवाना हुए। कुल्लू से मुझे सूचना मिली कि ठाकुर जी संग्रहालय पर किए जा रहे कार्य की प्रगति पर पूछ रहे हैं। मैंने अश्वनी जी से बात की और एक पत्र विवरण सहित कुल्लू प्रेषित किया। ठाकुर जी के साथ यह मेरा अन्तिम सम्पर्क था।

ठाकुर जी के सम्पर्क से पूर्व कई पुस्तकें और लेख प्रकाशित किए थे। सन् २००६ से जब से मैं उनके सम्पर्क में आया, तब से मेरा भारतीय इतिहास, शोध और लेखन के प्रति नजरिया ही बदल गया। वह एक ऐसे तपस्वी थे, जिन्हें भारतीय इतिहास और समाज के ऐसे तथ्यों की जानकारी थी, जिन्हें मैं किसी पुस्तक या पुस्तकालय में नहीं ढूंढ सकता था। भारत में इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से न तो लिखा और न ही पढ़ाया जाता है। ठाकुर जी प्रमाण सहित इन तथ्यों को प्रस्तुत करते थे। भारत के १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन के जो प्रकल्प नेरी में उन्होंने निर्धारित किए उनमें महाभारत से पूर्व का कार्य मेरी देखरेख में करवा रहे थे। ऐसे युगपुरुष के प्रस्ताव को मैं कैसे ठुकराता। मुझे तो हां ही करना था। ठाकुर जी की आभा जो सामने होती थी। मुझे याद है जब उन्होंने मुझे ऋषियों की जीवनियों के प्रकल्प के अन्तर्गत परशुराम पर कार्य करने को कहा। मैंने स्वीकार किया और शोध कार्य प्रारम्भ किया। एक दिन मैं शीर्षक लेकर उनके समक्ष उपस्थित हुआ। उन्होंने पूछा कि पुस्तक का शीर्षक क्या रखा है? मैंने उत्तर दिया कि मैंने 'युगपुरुष परशुराम' शीर्षक निर्धारित किया है। वे काफी देर तक मौन चिन्तन करते रहे। आंखे खोली और कहने लगे कि युगपुरुष शब्द निश्चय ही परशुराम के जीवन के वास्तविक तथ्यों को उद्घाटित करने के लिए अनुकूल है। मैं बहुत उत्साहित हुआ और चैन की सांस ली।

ठाकुर जी की विषय को समझने और व्यक्त करने में अतुल्य क्षमता थी। अक्सर रविवार के दिन वे मेरे घर आया करते थे। वह दिन चर्चा का हुआ करता था। जिन तथ्यों को उन्होंने चर्चा में लाया, आज भी वे मेरे लिए निरन्तर खोज के लिए नई दिशा प्रदान करते हैं। कालक्रम पर हमारी लम्बी चर्चा हुई। इसी आधार पर हम १९७ करोड़ वर्ष के इतिहास लेखन के चार युगों पर कार्य करने में जुट गए। उन्होंने इतिहास लेखन के जो सूत्र हमें प्रदान किए हैं, वे निश्चय ही अनुकरणीय हैं। मैंने संस्कृत भाषा और साहित्य को साहित्यिक विधा के अनुसार ही पढ़ा था। ठाकुर जी ने मुझे संस्कृत वाङ्मय में इतिहास लिखने की कला सिखाई। 'युगपुरुष परशुराम' पुस्तक लेखन के पश्चात् उन्होंने एक दिन मुझे बुलाया और कहा कि अब ब्रह्माण्ड के इतिहास पर शोध करना है। मैं सहर्ष तैयार हो गया। मैंने और ठाकुर जी ने इस सन्दर्भ की कई पुस्तकों पर चर्चा की। मुझे स्वयं एक पुस्तक उन्होंने लाकर दी थी। मैं एक दिन जब उनके पास ब्रह्माण्ड के इतिहास लेखन की रूपरेखा लेकर गया, उसे पढ़कर वे बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे कहा कि अपने शोध को धीरे-धीरे आगे बढ़ाएं। मुझे उनके आशीर्वाद से बहुत ऊर्जा मिला करती थी। उन्हें मेरे घर शिमला के पहाड़ी क्षेत्रों में बनाए जाने वाले पकवान घी-सिड्डू बहुत पसन्द थे। जिस रविवार को उन्हें मेरे घर आना होता था, उस दिन वे फोन पर स्वयं सूचित करके कहते थे कि अपनी अर्धांगिनी जी को कहें कि हमें सिड्डू खिलाएं। अन्तिम बार मेरी धर्मपत्नी ने उन्हें माश के बेड़वा सिड्डू खिलाए। उस दिन उन्होंने उनसे कहा था कि जब सरसंघचालक जी नेरी प्रवास पर आएंगे तो उस दिन उन्हें 'घी सिड्डू' जरूर खिलाएं। उन्होंने खड़े होकर उस दिन यह भी कहा कि अगली बार 'गुड़ से बने सिड्डू' खाने आऊँगा। परन्तु वह अब शायद हमारे घर सिड्डू खाने न आ सकेंगे।

सरल, सादे व निर्भीक ठाकुर जी

अशोक प्रभाकर
राष्ट्रीय संयोजक, हिन्दू जागरण मंच
झण्डेवालान (दिल्ली)

मैं श्रद्धेय ठाकुर जी के सम्पर्क में १९७० में आया। अगस्त का महीना था और गर्मियाँ पड़ रही थीं। ठाकुर जी ने आसाम से आना था और उसी निमित मैं कार्यालय में ठहरा हुआ था। पहले कभी ठाकुर जी को देखा नहीं था। एक व्यक्ति ने पूछा तुम कौन हो? मैंने अपना नाम अशोक प्रभाकर बताया तथा मैं यहां पर प्रचारक हूँ। ''तो क्या तुम आज शाखा नहीं गए?'' अगला प्रश्न उनका यह था। मैंने कहा कि असाम से मा. ठाकुर जी ने आना था, वे आए भी नहीं और मैं शाखा भी नहीं जा सका। अच्छा! तो तुम राम सिंह की प्रतीक्षा कर रहे हो। तो मैं ही राम सिंह हूँ। यह मेरा ठाकुर जी के साथ पहला परिचय था।

घर जाते समय ठाकुर जी जालन्धर कार्यालय रुक लिया करते थे। स्वयंसेवकों से मिलना-मिलाना व अगले दिन हमीरपुर चले जाते थे।

ठाकुर जी की सादगी व सरलता का अनुभव मुझे उसी दिन सायं शाखा को जाती बार हुआ। ठाकुर जी को मुझे सायं शाखा में ले जाना था। मेरे पास साईकिल थी वह भी बिना ब्रेक के। ठाकुर जी आगे बैठ गए और मुझे कहा तुम साईकिल चलाओ। मैं थोड़ा डर रहा था। इतने बड़े अधिकारी बिना ब्रेक से साईकल कहीं बज गई तो क्या होगा। परन्तु ठाकुर जी ने कहा चलो जो होगा देखा जाएगा। चिंता मत करो साईकिल चलाओ।

पंजाब, आदमपुर के निकट श्याम चौरासी में कार्यकर्त्ताओं की बैठक थी। बैठक में संख्या तकरीबन बीस के लगभग थी। सभी अर्धमण्डल में बैठे हुए थे। जहां ठाकुर जी बैठे हुए थे उनके पीछे एक छोटा कमरा था, जिसका दरवाजा ठीक ठाकुर जी के पीछे था। बैठक प्रारम्भ हो गई। थोड़ी देर बाद एक मोटा-लम्बा सांप उस कमरे से बाहर बैठक कक्ष में निकल आया। सांप को देखते ही सारे उठ खड़े हुए और बाहर भागना शुरू किया। सब लोग दूर बाहर खड़े हो गए। ठाकुर जी अपनी जगह से नहीं हिले और बोले, ''अरे भाई यह कोई पुराना स्वयंसेवक होगा। इसमें घबराने की क्या बात।'' अपने आप थोड़ी देर बाद सांप उसी रास्ते से अन्दर चला गया। जब अन्दर देखा तो सांप कहीं गायब हो गया था। ठाकुर जी अपनी जगह से नहीं हिले उनका साहस देखकर सभी कार्यकर्ता दंग रह गए।

जम्मू में प्रचारकों की बैठक थी। बैठक सम्पन्न होने के उपरान्त हम सभी वापिस जालन्धर आ रहे थे। दूसरे दिन सायं जालन्धर में कार्यक्रम था। रात को हम लोग टांडा में श्री कपिल जी, लवली स्वीट शॉप वाले के घर ठहरे। चारों ओर वर्षा, तूफान तथा

जलजला आया हुआ था। किसी भी प्रकार के कोई वाहन नहीं चल रहे थे। चारों ओर पानी ही पानी था। कैसे जालन्धर पहुंचना है, यह समस्या सब के सामने थी। ठाकुर जी साथ थे तो उन्हें यह कहना कि ऐसे में जाना मुश्किल है यह साहस किसी में नहीं था। ठाकुर जी ने कहा कि कार्यक्रम में पहुंचना है। कोई साधन नहीं भी है तो कोई बात नहीं पैदल ही चल पड़ते हैं। उस वर्षा तूफान में वे सभी साथी चल पड़े। रास्ते में ऐसी भयानक स्थिति थी कि खड्ड पार करती बार छाती तक पानी आता रहा पर किसी ने कोई परवाह नहीं की। सभी एक दूसरे के सहारे चलते रहे। यह सारा सफर ४० कि.मी. था जो सभी ने ठाकुर जी की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण पूर्ण किया। समय से पूर्व कार्यक्रम पर पहुंच गए। सब को अच्छा भी लगा और किसी भी कठिनाई में काम करने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। ऐसे थे ठाकुर जी।

ठाकुर जी अधिकारी नहीं बड़े भाई जैसे लगते थे। आपातकाल का समय था। एक गुप्त बैठक ठाकुर साहब ले रहे थे। मैंने कहा ठाकुर साहब! आईये और बैठिए। ठाकुर जी ने मजाक करते हुए कहा, ''यहां न साहब है और न ही कोई मेम।'' सभी हंसे और चले गए।

अद्‌भुत व्यक्तित्व

श्रीकांत जोशी
अखिल भारतीय प्रमुख
75 अ, नव युग निवास,
मुम्बई – 400007

ठाकुर रामसिंह जी का निधन एक इतिहास पुरुष का निधन ही कहना होगा। स्व. बाबा साहेब आप्टे तथा स्व. मोरोपन्त जी के इतिहास संकलन कार्य के सच्चे उत्तराधिकारी के नाते ठाकुर जी का स्मरण सदैव होता रहेगा। उनके द्वारा निर्मित कार्य में नेरी, शोध संस्थान को उनका सही स्मारक कहना होगा। वे स्वयं ही एक अद्‌भुत व्यक्तित्व वाले इतिहास पुरुष ही थे। उनका पार्थिव शरीर तो चल गया है लेकिन उनके अभूतपूर्व कार्य के रूप में वे सदैव हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि १९६३ से १९७९ तक मैं आसाम में उनके मार्गदर्शन से संघ के दायित्वों का निर्वाह करने में सफल होता गया। १९७१ में संघ कार्य का दायित्व पं. पू. श्री गुरुजी ने प्रांत प्रचारक के नाते मुझे सौंपा और ठाकुर जी के दिग्दर्शन तथा आशीर्वाद से उसे निभा सका था। उनके प्रभावकारी जीवन को याद करके अब हम सभी को उनके शुरू किए कार्य को आगे ले जाना ही, उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ठाकुर रामसिंह इतिहास है

रामशरण युयुत्सु
श्री अंगिरा शोध संस्थान,
411/3, शान्ति नगर, जीन्द, हरियाणा

ठाकुर रामसिंह नाम नहीं, एक इतिहास है। गहन चिन्तन, दृढ़ संकल्प, कड़े संघर्ष और नियोजित विजय का। जिन्होंने सोच लिया और कर दिखाया, उसे ही ठाकुर राम सिंह कहा जा सकता है।

६ सितंबर, २०१० की शाम को स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण प्रतिदिन की दिनचर्या से हटकर, समय से पूर्व ही मैं हृदय रोग की दवा खाकर बिस्तर पर चला गया था। नींद की झपकी लेते-लेते मोबाईल फोन की घंटी बजी और हृदय विदारक समाचार मिला कि मा. ठाकुर राम सिंह जी का देहावसान हो गया है। ऐसे लगा जैसे किसी ने सिर पर हथौड़ा मार दिया हो। रातभर परेशान रहा और परिवारजनों ने दिन का प्रकाश दिखते ही अस्पताल में प्रवेश दिला दिया। मा. ठाकुर राम सिंह जी के दिवंगत हो जाने का समाचार बहुत दु:खदायी बन गया था। मानसिक पीड़ा बहुत दे रही थी। चारपाई पर पड़े-पड़े प्रयास करके ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी (हि.प्र.) की शाखा विचार मंच हरियाणा, श्री अंगिरा शोध संस्थान जीन्द (हरियाणा) तथा इतिहास संकलन समिति जीन्द (हरि.) की समितियों के सौजन्य से संयुक्त रूप से नगर की शोक सभा का आयोजन १३-०९-२०१० को इन्दिरा प्रियदर्शनी राजकीय महिला महाविद्यालय जीन्द के सभागार में किया गया।

शोक सभा में माननीय ठाकुर जी की स्मृतियों को ताजा करते-करते सन् १९८३ से आज तक की घटनाओं का दृश्य सिनेमा की रील की तरह चल पड़ा। ईस्वी सन् १९८५ में भारतीय इतिहास संकलन योजना के अन्तर्गत वैदिक सरस्वती नदी शोध अभियान का सर्वेक्षण दल २० नवंबर, १९८५ से २२ दिसंबर, १९८५ तक हरियाणा, राजस्थान, गुजरात के प्रवाह मार्गों का सर्वेक्षण करता हुआ चल रहा था। इतिहास संकलन समिति प्रकल्प जीन्द (हरियाणा) की स्थापना दिनांक २२-१०-१९८३ को पहले ही हो चुकी थी। मा. मोरोपन्त पिंगले जी, आप्टे भवन, केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली में रहकर कार्य देख रहे थे और वहीं से ही सर्वेक्षण दल की स्थिति पर नजर रखे हुए थे। मा. ठाकुर राम सिंह जी पंचकूला (हरियाणा) में रहकर योजना की सफलता हेतु कमान संभाले हुए थे।

मा. मोरोपन्त पिंगले जी जीन्द (हरि.) में स्थित गोपाल विद्या मंदिर विद्यालय में व्यवस्था तथा कार्य योजना को लेकर बैठकें ले चुके थे। जिला संयोजक के नाते उनकी बैठकों की व्यवस्था मुझे करनी होती थी। व्यवस्था को स्थायी रूप देने की

दृष्टि से जीन्द में इतिहास संकलन समिति का विधिवत् गठन ११-०९-१९८४ को कर दिया गया। समिति के अध्यक्ष प्रो नफे सिंह तथा संयोजक के पद पर मुझे मनोनीत किया गया।

मा. पिंगले जी ने सूक्ष्म रूप से ठाकुर जी का परिचय इन बैठकों में दिया तो था, परन्तु पता नहीं क्यों मैं उनके नाम में अधिक रुचि नहीं ले पाया। कैथल से चलकर हिसार विश्वविद्यालय पहुंचने तक के क्षेत्र की व्यवस्था के कारण मैं श्रद्धेय विष्णु श्रीधर वाकणकर जी के साथ ही रहा। ठाकुर जी के व्यवस्था में अति व्यस्त रहने के कारण अभी तक उनके दर्शन मैं नहीं कर सका था। अभी तक वे जीन्द में पधारे भी नहीं थे।

सर्वेक्षण दल के हरियाणा से निकलकर राजस्थान में प्रवेश करते ही पंचकूला से ठाकुर जी का पत्र मेरे पास (मेरे ही नाम से) आया, जिसमें ढेर सारी सूचनाओं और प्रमाणित सामग्री (दस्तावेज) की मांग की गई थी। मैं पत्र का उत्तर ठीक से नहीं दे पाया तो ठाकुर जी का टेलीफोन मेरे पास आया और कहा कि श्रीमान युयुत्सु जी प्रयास करो और सामग्री शीघ्र भेज दो। यह कार्य आप कर सकते हैं, आप में क्षमता है, करो। मुझसे बिना मिले, बिना कोई वार्तालाप किए ठाकुर जी ने मेरे पत्र को जानकर, मुझे साहस की ऊर्जा दे डाली। उस दिन से लेकर आज के अन्तिम समय तक मा. ठाकुर जी मेरे प्रेरणा स्रोत बने रहे। प्रेरणा स्रोत के साथ-साथ वे मेरी ऊर्जा के पावर हाऊस भी बने रहे। इसी बीच में मुझे मेरे मार्गदर्शक रहे श्री इन्द्रसिंह शास्त्री जी से मा. ठाकुर जी के विषय में विस्तृत जानकारी मिल चुकी थी। तब उन्होंने ही बताया था कि इस पूरे प्रकल्प (योजना) के प्राण ही ठाकुर जी हैं। इसके पश्चात तो दिन पर दिन निकटता बनती चली गई तथा मेरे प्रति ठाकुर जी का विश्वास हर दृष्टिकोण से पक्का होता चला गया। हरियाणा में जब भी प्रवास होता था अथवा उनका हरियाणा में प्रवास का मन होता था तो वह जीन्द जरूर प्रवास करते थे। धीरे-धीरे अब वह समय भी आ गया, जब भी इतिहास संकलन समिति, हरियाणा का कोई कार्यक्रम करना होता था तो दिल्ली में रहकर ही ठाकुर जी कह देते थे, यह कार्यक्रम तो जीन्द में आयोजित करा लें, वहाँ रामशरण युयुत्सु अपने आप व्यवस्था कर लेगा।

लेखन के कार्य में भी ठाकुर जी मुझ पर पूरा भरोसा करने लगे थे। जब भी मैं उनसे कहता कि—'मैं तो डाक विभाग का कर्मचारी रहा हूँ, मेरी शिक्षा भी महाविद्यालय स्तर की नहीं है, मैं इतिहास के इतने गूढ़ विषय पर कैसे लिख सकूँगा?' परन्तु ठाकुर जी केवल इतना ही कहते थे, युयुत्सु जी आप लिख सकते हैं और लिखोगे भी।

स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह जी की प्रभावशाली वाणी, आकर्षक मुस्कान, मीठा व्यवहार, मिलने पर कार्यकर्त्ताओं तथा उनके परिवार तक का पूरा हालचाल पूछ लेने की उनकी प्रवृत्ति किसी को भी आकर्षित कर लेने की क्षमता, किसी को भी अपना

बना लेने में सक्षम थी।

ठाकुर जी स्वयं मेरे पास सीधे ही फोन कर लेते थे। मुझ से मेरे सम्मेलन (उपनिषद्) में पहुँचने और लेख तैयार कर लने की रपट मांग लेते थे। उनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन, आशीर्वाद, अद्भूत ऊर्जा के प्रभाव से मैं अपने दायित्व में सफल भी हो जाता था। मा. ठाकुर जी के सूक्ष्म आशीर्वाद एवं प्रेरणा के फलस्वरूप ही मैं—उत्तरवैदिक साहित्य में शिल्प एवं शिल्प शास्त्र की अवधारणा, पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह का रियासत जीन्द के संबन्धों का सिंहावलोकन, महाराजा रणजीत सिंह के विदेशी जरनैल, स्वाधीनता संग्राम में जीन्द स्टेट का योगदान, प्रथम स्वातंत्रय-समर १८५७ में करनाल-पानीपत का योगदान, १८५७ के स्वातंत्र्य-समर की ओझल व अनछुई घटनाएं, जीन्द के लोगों ने भी अपने हिस्से का खून बहाया, सोलह काट्ये भोली नैं, जैसे चर्चित ऐतिहासिक लेख लिख पाया हूँ। यह मेरे जीवन की सबसे कीमती उपलब्धियां हैं।

वैसे तो जीन्द में ठाकुर जी के दिशा-निर्देशन में कई बड़े-बड़े जिला स्तरीय कार्यक्रम हुए हैं, परन्तु ४ मार्च, २००० तथा १३ दिसंबर, २००० के इतिहास दिवस समारोह उपनिषद् के रूप में विशेष उलेखनीय रहे हैं, जिसमें मा. ठाकुर जी ने स्वयं उपस्थित रहकर इतिहास के विद्वानों को संबोन्धित कर मार्गदर्शन किया। जिससे उनके इतिहास लेखन में विशेष गति आई थी।

ईश्वर प्रदत्त शारीरिक पीड़ाओं से ग्रस्त रहने के बावजूद वे रूके नहीं, थके नहीं, घबराए नहीं, इच्छा शक्ति के साथ ध्येय की ओर चलते चले गए। मैं भी जितना उनके निकट आता गया, उनसे गहरे से प्रभावित होता गया। उनकी प्रेरणा से ही आज मैं पिछले बारह वर्षों से कैंसर तथा चौदह वर्षों से हृदयाघात से ग्रस्त होने के पश्चात भी निरन्तर क्रियाशील हूँ। यह उनकी प्रेरणा का ही प्रभाव है, जिससे मुझे हर दिशा में सफलता मिल रही है।

श्रद्धेय ठाकुर जी द्वारा बड़े आकार के कागज पर दो-दो, तीन-तीन पृष्ठ के पत्र मुझे लिखना, मेरे लिए तो बहुत ही सम्मान की बात है। मैं राष्ट्रीय स्तर की अनेकों सभाओं, संस्थानों से सम्मानित हो चुका हूँ, परन्तु इससे बड़ा सम्मान में अपने लिए किसी को नहीं मानता हूँ। ठाकुर जी के व्यक्तिगत पत्रों के सम्मुख सभी सम्मान-पत्र बौने हैं।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व प्रोफैसर प्रतिष्ठित इतिहासविद् प्रो. सतीशचन्द्र मित्तल जी द्वारा दिए गए संस्मरणों के अनुसार वारंगल (आन्ध्रप्रदेश) में ईस्वी सन् १९९२ में सम्पन्न हुए इतिहास संकलन योजना के द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन में मा. ठाकुर रामसिंह जी को सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया गया। ठाकुर जी के इतिहास प्रेम और भारत के गौरवशाली अतीत की खोज और लेखन को व्यवहारिक रूप दिए जाने से भारत के इतिहास को नए आयाम मिले हैं।

ठाकुर जी की इच्छा थी कि भारत के विजयी अतीत, परतंत्रता के विरूद्ध संघर्ष और भविष्य की संभावनाओं की खोज और लेखन के लिए किसी बहुत बड़े शोध

संस्थान की स्थापना हो। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के नेरी नामक स्थान पर ई. सन् २००६ में निर्मित हुआ 'ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान' ठाकुर राम सिंह जी की तीव्र इच्छा और संकल्प शक्ति का मूर्तरूप है। इस शोध संस्थान में विशाल पुस्तकालय, कम्प्यूटरीकृत शोध व्यवस्था, सभागार, विद्वानों एवं शोधकर्त्ताओं के ठहरने की पूर्ण व्यवस्था, खुला मैदान, पुष्पवाटिका एवं भोजनालय इत्यादि का निर्माण अपने देखरेख में ही पूर्ण करवा लिया था। राष्ट्रीय स्तर के इस विशाल शोध संस्थान के संचालन के लिए विद्वानों और प्रबंधकों की योग्य टोली तैयार करने में ठाकुर जी ने अद्‌भुत सफलता अर्जित की।

१२ से १४ मई, २००८ को ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी (हि.प्र.) में मेरी पत्नी व पुत्र सहित प्रवास के समय वर्षा के पश्चात मीठी-मीठी धूप में बैठकर चार-पांच घंटे तक सृष्टि रचना से लेकर वर्तमान तक धारा प्रवाह बोलना किसी को भी आश्चर्यचकित कर देता है। चौरानवे वर्ष की आयु इतनी लंबी बैठक किसी को आश्चर्यचकित नहीं करेगा क्या? माननीय ठाकुर जी का कहना है कि इस देश के इतिहास को विदेशियों ने विकृत कर इसकी प्राचीनता ३५०० वर्ष पूर्व निर्धारित की है। जबकि इस देश का इतिहास पृथ्वी पर मानवोत्पति से लेकर आज तक १९७ करोड़ वर्ष का है। इस पृथ्वी पर पहले मानव का जन्म सुमेरू पर्वत पर हुआ था। अत: सभी राष्ट्रों, सब जातियों, सभी धर्मों और ज्ञान-विज्ञान के शास्त्रों का उद्‌गम स्थान भारत रहा है।

भारतीय इतिहास के अनेक स्याह अध्याय और अज्ञात पक्षों को उजागर करने का सफल प्रयास माननीय ठाकुर जी ने किया। इनके परिश्रम और मार्गदर्शन के कारण इतिहास के अनेक विकृत अंशों, ब्रिटिश षड्‌यंत्रों पर से पर्दा हटा और भारतीय इतिहास का उज्ज्वल रूप निखर कर दुनिया के सामने आया। इस कार्य के लिए उन्होंने देश का सतत भ्रमण किया और प्रांत-प्रांत में इतिहास के सत्य को सामने लाने के लिये जिज्ञासु अध्येताओं की टोलियां खड़ी की।

श्रद्धेय ठाकुर जी मेरे लिए तो सदैव प्रकाश स्तम्भ की तरह रहे, परन्तु अब वह प्रकाश ६ सितंबर, २०१० को सूक्ष्मलोक में विलीन हो गया। अब तो उनके द्वारा दिखाई गई दिशाओं में चलकर ही अपने मार्ग स्वयं बनाने होंगे। उनके द्वारा किया जाने वाले शेष कार्यों को पूरा करना ही हम सभी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि समझी जा सकेगी। उनकी पवित्र आत्मा को मैं शत-शत् नमन करता हूँ।

स्नेहशील और अनुशासनप्रिय

डॉ. ठाकुर प्रसाद वर्मा
सम्पादक इतिहास दर्पण
397–ए, गंगा प्रदूषण रोड़
वाराणसी – 221005

छः सितम्बर सन् दो हजार दस को अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का एक और आधार स्तम्भ ढह गया। योजना के माननीय संस्थापक सदस्यों में से सर्वमाननीय मोरापन्त पिंगलेजी, श्रीराम साठेजी, प्रभाकर फैजपूरकर चले गये तथा अब ठाकुर रामसिंह जी भी महाप्रयाण कर गये। इन सभी में श्री ठाकुर जी ने सबसे अधिक आयु पाई। वे योजना के संस्थापक अध्यक्ष थे। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त निराला था। स्नेहशील इतने कि किसी को भी आधे घंटे के अन्दर अपना अन्तरंग बना लेते थे, कठोर अनुशासनप्रिय इतने कि कार्य में किंचित मात्र लापरवाही सहन नहीं कर सकते थे। वे इतने अध्ययनशील थे कि बाद के दिनों में जब दिखाई कम पड़ने लगा था तो हाथ में लेन्स लेकर पढ़ते तथा नोट्स तैयार करते थे। कर्मशील इतने थे कि जीवन के अन्तिम दिनों में भी बीमार पड़ने तक प्रवास करते रहे प्रवास में जब निकलते थे तो धूप या सर्दी की परवाह तो करते ही नहीं थे। यदि रिक्शा आदि सवारी नहीं मिली तो अपना झोला लटकाये हुए मीलों का सफर पैदल तय कर गंतव्य तक पहुंच ही जाते थे। प्रचारक के रूप में वे जहां कहीं भी रहे वहां के लोग उनका स्मरण उनके जाने के बाद भी करते रहते हैं। वैसे असम तथा बंग स्नेहशीला माताओं तथा बहनों का क्षेत्र है ही, लेकिन मैंने देखा है कि बाद के वर्षों में भी वहां के जिस किसी भी घर में वे पहुंच जाते थे, उनका स्वागत परिवार के बिछुड़े हुये परिजन की तरह किया जाता था।

माननीय ठाकुर रामसिंह जी ने कभी अपने को सेवानिवृत्त नहीं माना। बहुत अधिक आयु हो जाने के कारण संघ के दायित्वों से मुक्त होने के उपरान्त भी वे निष्क्रिय नहीं बैठे। वे सदैव नई-नई योजनायें बनाते रहते थे। इतिहास संकलन योजना का अध्यक्ष पद छोड़ने के बाद उन्होंने नेरी, हिमाचल प्रदेश में अध्ययनशील विद्वानों तथा छात्रों के लिये अत्याधुनिक उपकरणों से सज्जित एक परिसर का निर्माण कराया जिसमें पुस्तकालय के साथ आवास तथा भोजन आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। सभी लोग उनका इतना सम्मान करते थे कि अपनी परियोजनाओं के लिये उन्हें कभी धन की कमी का अनुभव नहीं होने पाया।

श्री ठाकुर जी एक स्वावलम्बी तथा कर्मठ व्यक्ति थे। केशवकुंज में तीसरी मंजिल पर रहते हुये वे अपने लिये जल लेने प्रायः स्वयं ही नीचे चले जाते थे। सहायक की सुविधा उपलब्ध होते हुये भी वे अपना सभी काम स्वयं करते थे। वे बीमार पड़ने पर भी किसी की अधिक सेवायें लेना उन्हें पसन्द नहीं था। नित्य प्रातः क्रिया तथा स्नानादि करने के बाद नियमित व्यायाम उनकी दिनचर्या में शामिल था। शाखा पर नित्य जाना तथा किसी दिन प्रार्थना छूटने न पावे इसका बराबर ध्यान रखते थे।

ऐसे हमारे ठाकुर रामसिंह जी श्री विष्णु चरणों में लीन हो गये। काशीपुराधीश भगवान विश्वनाथ जी से प्रार्थना है कि वे पुनः इस भारतभूमि पर अवतार लें तथा भारतमाता की सेवा में अगला जीवन भी व्यतीत करें।

स्मृतियाँ राह दिखलाती हैं

बलवीर राणा
निदेशक विवेकानन्द विद्यालय,
गांव लखवाल, डा. अध्वाणी
जिला कांगड़ा, हि.प्र.

प्रतिदिन की शाखा

शाखा प्रतिदिन लगती है या नहीं यह देखने का मापदण्ड ठाकुर जी का अपना था। एक बार मण्डी विभाग में एक स्थान पर कार्यकर्ताओं की बैठक थी तथा जहां पर बैठक थी वहां ठाकुर जी शाखा के बारे में बातचीत कर रहे थे उन्होंने पूछा कि क्या शाखा प्रतिदिन लगती है? एक कार्यकर्ता ने कहा प्रतिदिन लगती है। कितने बजे लगती है ..... प्रात: शाखा में जायेंगे। दूसरे दिन ठाकुर जी शाखा समय से दस मिनट पहले ही संघ स्थान पर पहुंच गये तथा टहलने लगे मैं उनके साथ था। मुझे कहने लगे यहां पर शाखा रोज नहीं लगती है, रोज लगती होती तो यहां पर सूखा पशुओं का गोबर तथा कूड़ा कर्कट न होता। यह गोबर बता रहा है कि यह तीन चार दिन पहले का है। शाखा लगी फिर ठाकुर जी ने शाखा के शारीरिक कार्यक्रम देखे तो मुझे कहा कि यह स्वयंसेवक भी प्रतिदिन शाखा नहीं आते हैं आज ही इनको लाया गया है। शारीरिक कार्यक्रमों के बाद स्वयंसेवकों को अर्धमण्डल में बैठाया गया। ठाकुर जी ने दैनिक शाखा का महत्व तथा जहां रोज शाखा लगती है वहां संघ स्थान कैसा होता है, वहां शाखा के कार्यक्रम कैसे होते हैं। इस विषय पर चर्चा की। ऐसी दूर दृष्टि थी अपने ठाकुर जी की।

समय पालन

जब मैं कुल्लू, मण्डी और लौहल-स्पीति जिले के प्रचारक के नाते कार्य करता था तो ठाकुर जी का मण्डी, कुल्लू जिलों का प्रवास था। उनके कार्यक्रम कुल्लू, बञ्जार तथा मण्डी में रखे हुए थे। कुल्लू के कार्यक्रम के लिए गये। सुरेन्द्र खन्ना जी एडवोकेट कुल्लू (उस समय सम्भाग कार्यवाह) अपने साथ थे। रात्रि बञ्जार तहसील की बैठक तथा प्रात: शाखा का कार्यक्रम हुआ फिर स्नान भोजन करने के पश्चात् दोपहर की बस बञ्जार से औट के लिए लेनी थी, फिर वहां से मण्डी पहुंचना था क्योंकि वहां भी बैठक थी। परन्तु हुआ ऐसा कि उस दिन बञ्जार से जो बस दोपहर को चलनी थी वह खराब हो गई उसके बाद कोई बस नहीं थी। अब प्रश्न उठा कि क्या किया जाए। तो ठाकुर जी कहने लगे कि कितनी दूर है यहां से औट? मैंने कहा लगभग २० कि.मी. कहने लगे कोई बात नहीं, पैदल ही चलेंगे। ठाकुर जी, सुरेन्द्र जी तथा मैं हम तीनों पैदल चल दिये तथा सांयकाल तक औट पहुंचकर मण्डी के लिए बस जो छ: बजे आखिरी थी पकड़ ली।

मण्डी बैठक में समय से पूर्व ही पहुंच गये। किसी भी कार्यक्रम में निश्चित समय से पूर्व पहुंचना हमने ठाकुर जी की प्रेरणा से ही सीखा।

स्वावलम्बी जीवन

एक बार की बात है कि ठाकुर जी का प्रवास कांगड़ा विभाग में था। ठाकुर जी संघ कार्यालय कांगड़ा आए हुए थे। उस दिन मैं भी वहां था। योगेन्द्र प्रताप सिंह संगठन मन्त्री भारतीय किसान संघ तथा कुछ और स्वयंसेवक भी थे। ठाकुर जी कुर्सी पर बैठे हुये थे। हाथ में कपड़े तथा तौलिया आदि धोने के लिए पकड़े हुए थे और सब से बातचीत कर रहे थे। इतने में योगेन्द्र प्रताप सिंह एक दम ठाकुर जी के पास गये तथा कपड़े लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया। ठाकुर जी ने एक दम डांट दिया और कहा कि जाओ अपना काम करो, मैं अपने कपड़े स्वयं धोता हूँ। जैसे पतलून पहनने वाले को पता होता है कि कहां साबुन ज्यादा लगाना है और कहां कम। ऐसे मुझे अपनी धोती कुर्ते का पता है कहां मैल अधिक होती है कहां कम तथा कितना साबुन लगाना है। इतनी बातचीत सुनने के बाद सब सुनने वाले स्तब्ध हो गये। ठाकुर जी अपने कपड़े लेकर स्नानागार में चल गये।

प्रकृति का आनन्द

प्रभातकाल के बाद लाहौल घाटी में जहां चन्द्रा नदी तथा भागा नदी का संगम है, तांदी गांव में संघ का प्राथमिक शिक्षा वर्ग लगाया गया। समापन पर ठाकुर जी, अविनाश जी, जसवाल जी, श्री विश्वनाथ जी, श्री नारायण दास जी तथा मा. माधवराव जी मूले समापन कार्यक्रम पर पहुंचे। गद्दी के मैदान में समापन का कार्यक्रम हुआ। दूसरे दिन मा. ठाकुर जी ने श्री विश्वानाथ जी को कहा चलो यहां आये हैं तो संगम में स्नान कर लें। पहले तो विश्वानाथ जी संकोच करने लगे कि पानी बहुत ठण्डा होगा। परन्तु ठाकुर जी ने उनको कहा कि हम सरसों के तेल की शीशी साथ ले चलेंगे। पहले तेल मालिश कर लेंगे उससे ठण्ड कम लगेगी। श्री विश्वनाथ जी की हिम्मत बंध गयी तथा दोनों ने चन्द्रभागा में जाकर संगम पर स्नान किया।

जब तक न हो पूर्ण काम — नाम नहीं विश्राम का

ठाकुर जी प्रान्त प्रचारक थे। संघ कार्य का विस्तार करने का देश भर में मण्डल योजना तैयार करने का निश्चय किया गया। हर गांव तक संघ कार्य पहुंचाने के लिए यह योजना बनी जिस में तीन चार पंचायतों या १०-१५ गांवों को मिलाकर मण्डल बनाना था। मण्डी विभाग में मैंने बिलासपुर, कुल्लू और लाहौल स्पीति की योजना तैयार कर ली थी। मण्डी जिले के दो जिले बना दिये थे। एक सुन्दरनगर जिला तथा दूसरा मण्डी जिला। दोनों जिलों की पंचायतें तथा गांव अलग-अलग करने थे। मैंने सुन्दरनगर जिले की मण्डल योजना तो तैयार कर ली थी, परन्तु मण्डी जिले की नहीं। उन्हीं दिनों ठाकुर जी का मण्डी विभाग का प्रवास हुआ। बाकी सब जिलों की मण्डल योजना की

तीन-तीन प्रतियां बनाकर ठाकुर जी को दे दी। जब मण्डी जिले की नहीं दी तो कहने लगे मण्डी नगर की बैठक के बाद बैठेगें तथा इसे तैयार कर लेंगे। रात्रि मण्डी नगर की बैठक के बाद ठाकुर जी मुझे लेकर बैठ गये और कहा, लाओ सारे कागज और मुझे लिखाते जाओ। हम दोनों बैठकर सारी रात कार्य करते रहे। प्रात: तीन बजे तक सारा कार्य सम्पन्न हुआ और प्रात: छ बजे फिर शाखा में उपस्थित थे। ऐसे थे अपने ठाकुर जी।

माँ जब तूनें बैंत नहीं लिया तो मैं कैसे लूँ ?

आपातकाल के बाद १९७७ में संघ पर से प्रतिबन्ध हटा तथा देश भर में लोकसभा के चुनाव हुए। ठाकुर रामसिंह जी अपने घर झण्डवीं माता जी को मिलने आये हुये थे। कुछ अस्वस्थ थे। थोड़ा समय घर पर व्यतीत किया तथा लोकसभा चुनाव वाले दिन अपना वोट भी घर पर रहकर ही डाला। मुझे पता चला कि ठाकुर जी घर आये हुये हैं। मैंने सोचा उनको तथा पूज्यमाता जी को जाकर मिल आऊँ। जब मैं मण्डी से गांव पहुंचा तो ठाकुर जी चले गये थे तथा पूज्य माता जी से ही घर पर मिलना हुआ। माता जी ने भोजन करवाते-करवाते मुझे ठाकुर जी का एक संस्मरण सुनाया कि अभी रामसिंह घर आया हुआ था। ठीक नहीं था, टांग में दर्द था। मैंने कहा कि कुछ दिन आराम कर लो, पर वह चला गया, माना नहीं। इसी बीच उन्होंने (माताजी) मुझे बताया कि चुनाव वाले दिन मैं तथा रामसिंह लुदरमहादेव में मतदान केन्द्र पर वोट डालने के लिए चलने लगे तो राम सिंह बैंत लेकर मेरे साथ चलने लगा। परन्तु जब उसने देखा कि मेरी अम्मा तो बिना बैंत के चली है और मैं बैंत लेकर चल रहा हूँ तो उसने अपना बैंत लिया और दीवार पर टांग दिया और चल पड़ा। मैंने (माताजी) कहा राम सिंह बैंत कहां रखी तो कहने लगा 'अम्मा तैं बैंत नी लेया, कनै मैं बैंत लेईने चलां, खरा नी लगदा'।

जिसका साथी भगवान उसको क्या रोके आंधी क्या तूफान

एक बार ठाकुर जी ने बताया कि जब १९४२ में लाहौर से एम.ए. करने के बाद प्रचारक बनकर कांगड़ा आया तो धीरे-धीरे कांगड़ा जिले में जगह-जगह संघ शाखाएं लगने लगी। कार्य का विस्तार हुआ कांगड़ा में जिन लोगों से प्रारम्भिक दिनों मे ठाकुर जी ने परिचय किया तथा जिन्होंने उनके ठहरने तथा भोजन की व्यवस्था की उनमें से एक डीएवी स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रत्नचन्द मिश्रा भी थे। गरली शाखा का गुरु दक्षिणा का कार्यक्रम था। ठाकुर जी ने श्री रत्न चन्द जी से बातचीत की कि आपने गरली शाखा के गुरु उत्सव की अध्यक्षता करनी है। उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी। जिस दिन गुरु दक्षिणा थी, उसके एक दिन पूर्व कांगड़ा से बस द्वारा ज्वालामुखी पहुंचे। उस समय बसें भी बहुत कम चलती थीं। ज्वालामुखी से चम्बा पतन पार कर पैदल गरली पहुंचना था। ज्वालामुखी से जब चम्बा पतन पहुंचे तो सांयकाल का समय हो गया था। किश्ती से नदी व्यास पारकर गरली जाना था। जब हम दोनों वहां पहुंचे तो मल्लाह अपनी नौका किनारे

पर बांध कर चला गया था। ठाकुर जी ने उससे बातचीत की हमें गरली पहुंचना है, प्रात: कार्यक्रम है। हम दोनों को पार छोड़ आओ। मल्लाह कहने लगा, बावूजी अब अन्धेरा हो गया है और मैं किश्ती लेकर नहीं जा सकता। अब प्रात: ही जाना होगा। ठाकुर जी ने कहा ज्यादा पैसे ले लो वह नहीं माना। ठाकुरजी कहते हैं कि उन्हें चिन्ता होने लगी। अध्यक्ष जी साथ हैं, नये व्यक्ति हैं इनके भोजन तथा रात्रि ठहरने का यहां नदी किनारे कैसे प्रबन्ध किया जाये। कहीं अध्यक्ष निराश होकर सुबह वापिस न चले जाएं। बड़ी गड़बड़ हो जायेगी। परन्तु मैंने उनको बातचीत में व्यस्त रखा तथा वहां पास में ही एक दुकान थी, दुकानदार से चावल, दाल तथा पतीली ली, वहां पत्थर का चूल्हा बनाया, आसपास लकड़ी इकट्ठी करके आग जलाकर फिर खिचड़ी तैयार की। खुद भी खायी और रत्न चन्द मिश्रा को भी खिलाई। मैं तो जागता रहा तथा अध्यक्ष महोदय जी को दुकानदार से चटाई आदि लेकर बरामदे में सुला दिया। मिश्रा जी आर्य समाजी थे। दृढ़ विचारों वाले थे। उनका त्यागी, परिश्रमी जीवन था। इसलिए वह भी घबराये नहीं। प्रात: हुई पहले चक्कर में ही मल्लाह ने हमें नदी पार करवा दी। हमें आगे भी पैदल ही जाना था। फिर भी हम गुरु दक्षिणा के कार्यक्रम पर समय से पहले ही पहुंच गये। कार्यक्रम अच्छे ढंग से सम्पन्न हुआ। ठाकुर जी कहते थे कि मैंने रत्न लाल मिश्रा जी को उस समय कहा कि संघ कार्य ईश्वरीय कार्य है। जिसका साथी है भगवान उसको क्या रोके आंधी क्या तूफान।

आगे बढ़ना है पीछे नहीं हटना है

आपातकाल के दिनों में ठाकुर जी भूमिगत होकर कार्य कर रहे थे। मैं भी भूमिगत होकर ही कार्य कर रहा था। चौतड़ा, सुखवाग तहसील जोगेन्द्रनगर स्व. वजीर प्रताप सिंह का घर सूचना केन्द्र तथा मिलन स्थान था। ठाकुर जी की मुझे सूचना मिली कि आज सायं वे मण्डी पहुंच रहा रहे है तथा कल प्रात: हम दोनों कन्याल (मनाली) ठाकुर कुञ्जलालजी से मिलने चलेंगे। अगस्त का महीना था। ठाकुर जी निर्धारित समय पर मण्डी पहुंचे तथा दूसरे दिन अल्पाहार करके हमने बस द्वारा मण्डी से मनाली के लिए प्रस्थान किया, परन्तु जब हम पण्डोह पहुंचे तो पता चला कि पण्डोह डैम के ऊपर नई सड़क बन रही है। उसकी कटाई का मलवा ढहकर सारा नीचे सड़क पर आ गया है। पण्डोह से लगभग सात कि.मी. तक बस जा सकती थी, उससे आगे रास्ता अवरुद्ध था। मैंने ठाकुर जी को कहा पहले हमें इस पहाड़ी को चढ़कर दूसरी तरफ उतरना पड़ेगा तब सड़क आयेगी। आगे भी थलौट तक पैदल चलेंगे। पहाड़ी का रास्ता भी ठीक नही है। छोटी सी पगडण्डी यात्रियों ने बना तो दी है, पर वह भी ठीक नहीं है। ठाकुर जी कहने लगे कोई बात नहीं लोग भी तो जा रहे हैं। हम भी चल पड़ेंगे। हिम्मत रखो, वापिस नहीं जाएंगे। आगे बढेंगे। पीछे नहीं हटना है। ठाकुर जी ने प्रेरित किया और चढ़ाई चढ़ने

लगे। पहाड़ी की चढ़ाई चढ़कर फिर नीचे उतरना था, परन्तु रास्ता बहुत खराब फिसलन बाला था तथा नीचे दरिया व्यास बह रहा था। पैर फिसलने पर कुछ भी हो सकता था। जब चढ़ाई चढ़ कर हम नीचे उतरने लगे तो ठाकुर जी की तबीयत अचानक खराब हो गई। चेहरा सफेद पड़ गया। ठाकुर जी बैठ गये। मैं यह सारा दृश्य देखकर घबरा गया। ठाकुर जी ने एक दम कहा, घबराओ मत, मुझे थोड़ा विश्राम कर लेने दो। मैं ठीक हो जाऊँगा। फिर चल पड़ेंगे। जितनी देर ठाकुर जी वहां बैठे, मैं प्रभु से प्रार्थना करता रहा कि हम ठीक-ठाक नीचे सड़क पर पहुंच जायें। इतने में ठाकुर जी उठ खड़े हुए तथा हम धीरे-धीरे नीचे उतर आये। जब हम नीचे उतर कर सड़क पर पहुंच गये तो मैंने प्रभु का धन्यवाद किया। थोड़ा पैदल चलकर फिर हमें थलौट से बस मिलनी थी। थलौट पहुंच कर हम सीधी मनाली बस से दोपहर बाद पतली कुहल पहुंच गए। पतली कुहल से नदी व्यास का पुल पार किया और नदी के साथ-साथ चल दिए। वाणु पहुंच कर मास्टर प्रेम चन्द जी के घर चाय पान किया। फिर वहां से पुल पार कर रांगड़ी पहुंचे। रांगड़ी से ठाकुर कुञ्जलाल जी के गांव कन्याल के लिए पैदल ही चल पड़े और सांयकाल तक उनके घर पहुंच गए।

सफलता की अन्तिम सीढ़ी तक प्रयत्न करना

ठाकुर जी का कुल्लू का प्रवास पूर्व से ही था। उन्होंने प्रवास से पहले ही मुझे सूचना भेजी थी कि मैं कुल्लू की सांय शाखा में रहूंगा तथा रात्रि कुल्लू नगर की बैठक करेंगे। उन्होंने दिल्ली से प्रात: ३.३० बजे हरियाणा रोड़वेज बस से आना था। वह बस सांयकाल पांच बजे तक ढालपुर मैदान कुल्लू पहुंच जाती है। परन्तु इस प्रवास के पहले ही माननीय माधवराव जी मूले तत्कालीन सहकार्यवाह का देहान्त हो गया उनको अपना प्रवास छोड़कर मा. माधवराव जी के अन्तिम संस्कार पर पूना जाना पड़ा। मण्डी में ज्योति स्वरूप जी (वर्तमान झण्डेवाला में) जिला प्रचारक थे। उन्होंने मुझे बताया कि ठाकुर जी तो पूना चले गये हैं। शायद ही कुल्लू पहुंच पायें। जिस दिन उन्होंने कुल्लू पहुंचना था, मैं उस दिन थोड़ा अनिश्चित सा था। ढालपुर मैदान में शाखा के पास ही बस का इन्तजार कर रहा था कि ठाकुर जी निश्चित समय पर हरियाणा रोड़वेज की बस द्वारा पहुंच गये। मैं हैरान था। जब मैंने कहा कि मैं दुविधा में था कि आप पूना से पहुंच पाएंगे भी या नहीं, तो उन्होंने कहा क्या मैंने सूचना भेजी थी, आपने कैसे मान लिया कि मैं नहीं आऊँगा।

ठाकुर जी के साथ एक दिन की अन्तिम यात्रा

१८ मई २०१० प्रात: ६:३० बजे नेरी से शोध संस्थान के कार्यालय प्रमुख छोटे चेतराम जी का फोन आया कि ठाकुर जी कह रहे हैं कि कांगड़ा में राजपूत कल्याण सभा द्वारा महाराणा प्रताप जयन्ती का कार्यक्रम है। उसमें चलना है। राणा जी को कह दो

कि हम डेढ़ घण्टे तक पहुंच रहे हैं तैयार होकर सड़क पर खड़े हो जायें। घर नहीं बैठेंगे। सीधे कांगड़ा कार्यक्रम पर पहुंचेंगे। मैंने चेतराम जी को कहा कि मैं तैयार रहूँगा तथा चल पड़ूँगा। ८.३० तथा नौ बजे के बीच चेतराम जी तथा ठाकुर जी पहुंच गये। गाड़ी घर के गेट के सामने खड़ी हो गयी। चेतराम जी गाड़ी चला रहे थे। मेरे बेटे सौरभ ने गाड़ी में बैठे-बैठे ठाकुर जी के पैर छूए तथा ठाकुर जी ने उसका हालचाल पूछा। मैं भी गाड़ी में बैठ गया तथा कांगड़ा के लिए चल पड़े। अभी थोड़ी दूर ही पहुंचे थे कि ठाकुर जी ने बातचीत आरम्भ कर दी। पांच छः महीने तक एक बड़ा कार्यक्रम करने वाले हैं जिससे भारत के गौरवमय इतिहास का गुणगान होगा क्योंकि सभी राजनीतिक नेता वोट की राजनीति खेल रहे हैं, मुसलमानों को खुश करने में लगे हुए हैं। ठाकुर जी ने कहा मैं १२ जुलाई को दिल्ली जाऊँगा। वहां पूजनीय सरसंघचालक जी से मिलूँगा और उनसे कार्यक्रम के लिए समय लूंगा। मैंने कहा ठीक है, कार्यक्रम करेंगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा कि मैं कुल्लू वालों को कह रहा हूँ कि शीघ्र मनुधाम का कार्य शुरू करायें। मैंने उनको अल्टीमेटम दे दिया कि अक्तूबर तक कार्य प्रारम्भ कर दें। उसके बाद मैं (ठाकुरजी) दिमाग घसाई नहीं करूँगा। जब गाड़ी ज्वालामुखी से निकली तो कहा यहां के पेड़े बहुत मशहूर हैं, मैंने कहा, वापिसी पर लेंगे। कांगड़ा में महाराणा प्रताप जयन्ती कार्यक्रम पुराना बस अड्डा (राजपूत भवन) में था। हम समय से पूर्व पहुंच गये। वहां जाकर अपना स्थान ग्रहण किया। ठाकुर जी को जिन्होंने निमन्त्रण दिया था और उनमें से एक श्री अमरसिंह परिहार नादौन वाले को मैं जानता था। उनको बुलाकर लाया, वे आये तथा उन्होंने ठाकुर जी को मंच के पास जो व्यवस्था थी वहां बिठा दिया। साथ में चेतराम जी तथा मैं भी बैठ गए। नेरी शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री विजय मोहन कुमार पुरी जी को भी ठाकुर जी ने अपने पास बिठा लिया।

कार्यक्रम देरी से प्रारम्भ हुआ, क्योंकि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पहुंचे नहीं थे। महाराणा प्रताप जयन्ती कार्यक्रम लगभग चार घण्टे चला। अन्त में ठाकुर जी को स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथि श्री वीरभद्र सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम समाप्त होने पर वर्षा लग पड़ी। राजपूत कल्याण सभा ने भोजन की व्यवस्था भी की हुई थी। राजपूत सभा के प्रांगण में जो मन्दिर है ठाकुर जी को हमने वहां बैठाया। मैं और चेतराम जी भोजन करने चले गये। ठाकुर जी ने कहा मैं भोजन नहीं करूँगा। आप कर लो। मैं फल ले लूंगा या फिर चने। मैंने कहा चने मंदिर के पास ही मिलेंगे। वर्षा इतनी थी कि छाते के बिना गाड़ी से उतरना बड़ा कठिन था। फिर भी चेतराम जी बेकरी से बन्द तथा केले ले आये। पास में रेहड़ी खड़ी थी, उस पर तले हुए काकड़ चने थे मैंने कहा ठाकुर जी यह ले लिये जायें, तो उन्होंने कहा थोड़े ले आओ। ठाकुर जी ने कहा संघ कार्यालय चलो, वहां डा. सत्यपाल जी तथा मंगल देव जी को मिलकर आना है।

कार्यालय जाकर दोनों बंधुओं को मिले तथा उस दिन विभाग प्रचारक तपन जी भी वहीं थे। डा. सत्यपाल जी के पास जाकर बैठे, मैं भी उनके साथ बैठा। ठाकुर जी ने डा. सत्यपाल जी की बहन का हालचाल पूछा। तो डाक्टर साहब ने कहा कि वे अब नहीं रहीं। फिर ठाकुर जी ने उनसे पूछा बटाले वाले अपने मकान का क्या किया? डा. सत्यपाल जी ने बताया कि उसको गिरा दिया है। वहां पर अपने कुल देवता का मन्दिर बनायेंगे। डा. साहब ने कहा मेरे भतीजे बंगलौर में हैं, उन्होंने कहा हम बनायेंगे। ठाकुर जी ने पूछा डाक्टर साहब आपकी आयु कितनी हो गयी है। डॉ. साहब ने कहा ८५ वर्ष। ठाकुर जी बोले,'' आपने सौ वर्ष पूरे करने हैं, देखो, मैं ९५ वर्ष का हो गया हूँ।'' उसके बाद मंगल देव जी से बातचीत चली। इस बार आम बहुत हैं, परन्तु बन्दर खा रहे हैं, ठाकुर जी ने कहा इनको तुड़वा लो तथा पकने डाल दो फिर सबको बांट देना । उसके पश्चात् मंगलदेव जी ने आग्रह से बिस्कुट दिये। फिर हम वहां से चल पड़े।

पांच बज चुके थे। हमने वापसी की यात्रा आरम्भ की। ठाकुर जी ने गाड़ी में बैठकर ही बन्द खाये। चने भी खाये। उस दिन यही उनका भोजन था। जब हम ज्वालाजी पहुंचे तो चेतराम जी को कहा आगे करके गाड़ी खड़ी करो। मैं पेड़े लेकर आता हूँ। ठाकुर जी ने अपना पर्स निकाला तथा पैसे देने लगे और मज़ाक में चेतराम जी को कहा, ड्राईवर के पास पैसे नहीं होते हैं। मैंने कहा आप पर्स रखो, मैं पेड़े लेकर आऊँगा। मैंने पेड़े लाकर ठाकुर जी को दिये तथा हम चल पड़े। ठाकुर जी गाड़ी में मुझे, चेतराम जी को पेड़े का एक-एक टुकड़ा देते गए और स्वयं भी खाते रहे। थोड़ी देर बाद ही हम घर की तरफ चल पड़े। क्योंकि मुझे घर पर छोड़ना था, फिर आगे नेरी पहुंचना था। ठाकुर जी ने घर पहुंचने से पहले कहा कि एक कार्यकर्ता ने मेरे से २०१० की गीता प्रैस गोरखपुर की डायरी मंगवायी थी, दिल्ली तो मिली नहीं, खत्म हो चुकी है, परन्तु कई बार होता है कि छोटे स्थानों पर मिल जाती है, जहां पर गीता प्रैस गोरखपुर का साहित्य आता है, मैनें कहा, नादौन में प्रमोद जी हैं, वह मंगवाते हैं। घर पहुंचकर फोन से पता करते हैं। घर पहुंचे बैठक में बैठे, मेरी धर्मपत्नी सुषमा जी ने ठाकुर जी के पैर छुए, आशीर्वाद लिया। फिर वह चाय बनाने लग पड़ी। उसने पूछा, ठाकुर जी, भोजन तैयार करती हूँ। अब आपने भोजन करके ही जाना है, ठाकुर जी ने कहा मैं तो नहीं करूँगा। परन्तु यह दोनों राणा जी और चेतरामजी भी नहीं करेंगे। इन्होंने सांयकाल ही धाम खायी है। गीता प्रैस की डायरी का नादौन से पता किया, उन्होंने कहा २०१० की डायरी खत्म हो गई है पिछले वर्ष की लेनी है तो मिल जायेगी। ठाकुर जी ने कहा पुरानी डायरी नहीं चाहिए। प्राय: उस डायरी में गीता के श्लोक होते हैं तथा पाठ करने की विधि होती है। ठाकुर जी ने एक कार्यकर्ता को डायरी उपलब्ध करवानी थी, उसके लिए पूरा प्रयास कर रहे थे।

कल्पनाओं को साकार करने वाले महायोगी

बालमुकुन्द
संगठन सचिव
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
आपटे भवन, केशव कुंज, झण्डेवालान, दिल्ली

जीवन वही जो अंत तक काम आए।
मौत वही जो बिना आह के निकल जाए।

कवि की इस कल्पना को साकार करने वाले माननीय ठाकुर रामसिंह जी अब हमारे बीच नहीं रहे। मैं गुवाहाटी के प्रवास में था, उत्तर असम के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक समाप्त होने ही वाली थी जिसका समापन क्षेत्र के सह क्षेत्र प्रचारक माननीय गौरी दा ने की। गौरी दा ने समापन के उपरान्त बताया कि उत्तर क्षेत्र के माननीय क्षेत्र प्रचारक श्री रामेश्वर जी का फोन आया था कि माननीय ठाकुर जी के स्वास्थ्य के लिए देश भर में ईश्वर से प्रार्थना की जानी चाहिए। हम सबने दो मिनट तक ध्यान लगाकर ठाकुर जी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। सायंकाल ७ बजे दिल्ली प्रान्त के प्रान्त प्रचारक श्री प्रेम कुमार जी का एस.एम.एस. आया कि ठाकुर जी का शरीर पूरा हो गया है।

ठाकुर जी का प्रथम दर्शन १९९३ में उदय प्रताप कालेज, वाराणसी में अ.भा. इतिहास संकलन योजना के तृतीय अधिवेशन में किया था। उस समय मैं सिद्धार्थ नगर का तहसील प्रचारक था। इतिहास का विद्यार्थी होने के कारण मुझे इस कार्यक्रम की व्यवस्था में लगाया गया था। सौभाग्य से मुझे ठाकुर जी की अतिथि व्यवस्था में रखा गया था। प्रात:काल मैं ठाकुर जी के जलपान के लिए कमरे में ही चना और जलेबी लेकर आया, ठाकुर जी ने चना तो खा लिया लेकिन जलेबी नही खाई क्योंकि उस समय उनको मधुमेह की शिकायत हो गयी थी। बाद में उन्होंने बड़े ही विनम्र भाव से एक जलेबी खाने के लिए अनुमति मांगी, मैं ठगा सा रह गया ! इतना वरिष्ठ तथा ऋषि तुल्य व्यक्ति मुझसे एक जलेबी खाने के लिए अनुग्रह पूर्वक अनुमति मांग रहा है, मैं मधुमेह से बहुत परिचित नही था, किन्तु मैने देखा कि ठाकुर जी का संयम किस स्तर का था।

दूसरी भेंट ठाकुर जी से देवरिया (उ०प्र०) में हुई। मैं वहां जिला प्रचारक था। ठाकुर जी का जिलाश: प्रवास था। भारतीय वैज्ञानिक काल गणना पर बौद्धिक था। हमने बहुत परिश्रम करके संस्कृत सम्मेलन के विशाल कक्ष में ठाकुर जी का कार्यक्रम कराया। वेद विज्ञान महाविद्यालय के प्रधानाचार्य जी इस कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। ठाकुर जी १ घंटा २० मिनट तक बोले। उसके बाद अध्यक्षीय भाषण में आचार्य जी ने कहा, ठाकुर जी के बोलने के बाद मैं कुछ भी नहीं बोल सकता क्योंकि मैं ५८ वर्ष की अवस्था में भी २० मिनट से अधिक खड़ा होकर नहीं बोल सकता और ८५ वर्ष की अवस्था में ठाकुर जी १ घंटा २० मिनट बोले हैं। मैं उनके चरणों में प्रणाम कर अपनी बात समाप्त करता हूँ।

जब मुझसे इतिहास संकलन के कार्य के लिए वार्ता की गयी तो यही सोचा कि ठाकुर जी के सान्निध्य में मैं अपना जीवन धन्य कर लूंगा, मैं अपना सामान लेकर केशव कुंज आया तो स्वागत कक्ष में सामान रखकर, सीधे ठाकुर जी के कमरे में गया और अपना परिचय दिया, ठाकुर जी बहुत खुश हुए, नीचे तक आकर मेरा सामान उठाने लगे। मैंने बहुत आग्रह पूर्वक अपना सामान उठाया। ठाकुर जी प्रथम तल पर बने हाल में मेरा सामान रखवाये तथा बताया कि भोजन का समय तथा पानी की व्यवस्था कहां है। एक स्नेही अभिभावक की तरह उन्होंने मेरा प्रथम स्वागत

किया। उनके साथ मैं कई स्थानों पर दिल्ली में गया। मैं ठाकुर जी के पास बैठकर अपने प्रश्नों का समाधान पाता था। एक दिन ठाकुर जी नेरी के प्रकल्प के विषय में अपनी योजना बता रहे थे कि नेरी को रजिस्टर्ड रिसर्च सेन्टर बनाया है। २० कमरे शोध छात्रों के लिए रहेंगे तथा उनकी सारी चिन्ता की जायेगी। उच्च अध्ययन के लिए अच्छे पुस्तकालय तथा कम्प्यूटर लेने की भी आवश्यकता है। मैने पूछा कि इतने बड़े कार्य के लिए प्रमाणित और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता रहेगी तथा उन कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन कौन करेगा। ठाकुर जी ने तपाक से कहा ! मैं कहां जा रहा हूँ। ठाकुर जी इच्छा शक्ति के धनी थे। कल्पना तथा कल्पना को साकार करना, ठाकुर जी की विशेषता रही है। ठाकुर जी ने जो सपना देखा उसे पूर्ण करके ही गये।

जून के माह में मैंने ठाकुर जी से आग्रह किया कि आपटे भवन में मोरोपंत पिंगले राष्ट्रीय पुस्तकालय का पुनर्निर्माण हो रहा है। आप एक बार पधारें। ठाकुर जी धीरेन्द्र के साथ पुस्तकालय में आये। पुस्तकालय में आकर वे इतना खुश हुए जिसकी कल्पना मैं नहीं कर सकता था। ठाकुर जी पुस्तकालय में बहुत देर तक बैठे रहे। यह कार्यालय बनाने में आने वाली बाधाओं, रज्जू भैया के द्वारा बाधाओं का निवारण और मा. सुरेश चन्द्र वाजपेयी द्वारा कुशलता पूर्वक इसके निर्माण के बारे में बताते रहे। बाद मे मैंने उनसे खाने के लिए आग्रह किया तो उन्होंने तरबूज खाने की इच्छा व्यक्त की तथा बड़े ही प्रेम से ठाकुर जी ने तरबूज खाये। उन्होंने अन्त:करण से आशीर्वाद देते हुए कहा कि मुझे आशा है कि तुम काम को आगे बढ़ाओगे।

एक कर्मयोगी की लघु जीवनी

डॉ. जगदीश गण चौधरी
103, कंचन अपार्टमेंट, धंतोली नागपुर–12

मुझे माननीय ठाकुर जी के साथ १० वर्ष तक त्रिपुरा में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हीं की प्रेरणा से त्रिपुरा राज्य का इतिहास लिख पाया था। लिखने का अभ्यास ठाकुर जी ने जो एक बार पैदा कर दिया तो वह अब तक चला आ रहा है। उन्ही की प्रेरणा से मैंने अब तक छोटी-बड़ी २३ पुस्तकें प्रकाशित कर दी हैं।

ठाकुर जी के कर्मठ जीवन से प्रभावित होकर मेरे मन में उनकी लघु जीवनी लिखने की उत्कण्ठा पैदा हुई। ठाकुर जी का जीवन ऋषि जीवन रहा है। वे किसी भी प्रकार से आत्म प्रशंसा को स्थान नहीं देते थे। मैंने सेवानिवृति के बाद यह तय कर लिया कि इस कार्य को मैं कर लूँ।

अनेक चर्चाओं में मैं पारिवारिक पृष्ठ भूमि, संघ कार्य को ही जीवन लक्ष्य निश्चित करना व अन्य जानकारियाँ प्राप्त करता रहता था। काम शुरू किया और कलियुगाब्द ५१०९ ई. सन् २००७ को यह काम पूरा हो गया।

एक कर्मयोगी की ९४ वर्ष की जीवन यात्रा को समेट पाना एक दुष्कर कार्य रहा, परन्तु नेरी शोध संस्थान तक मैंने ९ अध्यायों में इसे पूरा किया। ठाकुर जी एक सच्चे योगी थे। वे किसी समस्या से घबराते नहीं थे, बल्कि उस समस्या के समाधान में लग जाते थे। उनके लिए जीवन की सार्थकता राष्ट्र कार्यों को समर्पित हो जाने की सच्ची साधना रही है। ऐसे ऋषिपुरुष को मेरा शत्-शत् प्रणाम।

इतिहास की समग्र दृष्टि

डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री
निदेशक हि. प्र. विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केन्द्र धर्मशाला

मैं बाबा बालकनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय चकमोह (हमीरपुर) में प्रिंसिपल के पद पर कार्यरत था। लगभग दस साल तक बरखास्तिगी का दंश झेलने और राजकीय प्रकोप का सामना करने के बाद बहाली हुई थी। महाविद्यालय में राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन करने की योजना बन रही थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उस समय के जम्मू-कश्मीर व हिमाचल प्रदेश के प्रान्त प्रचारक इन्द्रेश कुमार जी ने सुझाव दिया कि हिमाचल क्षेत्र के समस्त क्षेत्रों को शामिल करके पहाड़ी क्षेत्र की समग्र समस्याओं पर विचार करने के लिए गोष्ठी समर्पित होनी चाहिये। काफी विचार-विमर्श के बाद गोष्ठी का विषय 'युग-युगीन हिमालय और वर्तमान चुनौतियां' निश्चित किया गया।

पूर्वोत्तर भारत के पहाड़ी प्रदेशों के विद्वानों से प्रत्यक्ष सम्पर्क करने एवं उन्हें गोष्ठी में आमन्त्रित करने के लिये मैं स्वयं वहां गया था। यह शायद सितम्बर, २००१ की बात है। गुवाहाटी में संघ कार्यालय में ही ठहरा था। जिस गाड़ी से मैं गुवाहाटी पहुंचा था, उसी गाड़ी से ठाकुर राम सिंह जी भी आये हुए थे। कार्यालय में ही उनसे भेंट हुई। ठाकुर राम सिंह जी ने अपने जीवन का प्रखर काल पूर्वोत्तर भारत के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के नाते ही व्यतीत किया था। असम तो एक प्रकार से उनका दूसरा घर ही बन गया था। असमियां व बंगला भाषा में उन्होंने इतनी महारत हासिल कर ली थी कि आम आदमी यह बता ही नहीं सकता था कि असमिया उनकी अपनी भाषा नहीं है। ठाकुर जी मूलत: इतिहास के विद्यार्थी थे। अत: उन्होंने असम और वहां के अन्य प्रान्तों का भी गहरा अध्ययन किया था। गुवाहाटी में ठाकुर जी से मुलाकात हुई तो इधर-उधर की बातों के बाद इतिहास के मुद्दे पर बातचीत केन्द्रित हो गई।

वैसे मेरा ठाकुर जी से पुराना परिचय था। मैं १९७१-७२ मैं पंजाब में भारतीय जनसंघ का विभाग संगठन मंत्री था। देवदत्त शर्मा जी पंजाब के प्रादेशिक संगठन मंत्री थे। लेकिन कुछ कारणों से उन्होंने गृहस्थ आश्रम में जाने का निर्णय किया और वे वापिस अपने घर अमृतसर में आ गये। उन्होंने विवाह किया और गृहस्थी हो गए। ठाकुर राम सिंह जी तब तक प्रचारक के नाते असम से पंजाब में आ गये थे। ठाकुर जी और देवदत्त शर्मा जी दोनों में मतभेद उत्पन्न हो गये। उन दिनों मुझे अनेक बार इस प्रसंग में ठाकुर जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था और उनके सही चरित्र, प्रकृति व स्वभाव से परिचित होने का अवसर भी।

संघ का कार्य ठाकुर जी के लिये उनकी प्राणवायु था। इस मामले में वे कोई

समझौता करने को तैयार नहीं थे। स्वयं दृढ़ अनुशासन का पालन करते थे और इस मामले में अपने लिये भी निष्ठुर थे, उतनी ही कठोरता से वे दूसरों से भी अनुशासन की अपेक्षा रखते थे। उनके और संगठन में द्वैत नहीं था, अपितु वे इससे एकाकार हो गए थे। इसलिये अंतिम क्षण में भी उनमें कार्य शिथिलता नहीं आई। नव भारत के निर्माण में वे इतिहास की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानते थे। इतिहास भूतकाल की नींव पर भविष्य का निर्माण करता है। इतिहास से विस्मृति किसी भी राष्ट्र की पहचान को खत्म कर देती है, ऐसा वे मानते थे।

इसलिए जब इतिहास संकलन योजना का प्रारम्भ हुआ, जिसके शिल्पी मोरोपन्त पिंगले जी थे, तो ठाकुर रामसिंह जी उसके अग्रदूत बने। मानों प्यासे को जल का सागर मिल गया हो। उन्होंने स्वयं को इसी योजना हेतु समर्पित कर दिया। सन् २८.३.१९९६ से ३०.३.१९९६ तक उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्राचीन जनपद कांगड़ा के दुर्ग के भग्नावशेषों में एक ऐतिहासिक विचार गोष्ठी का आयोजन किया था, जिसमें हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो. एस. के. गुप्ता जी को बुलाया हुआ था, जो एक जानेमाने इतिहासकार थे। मुझे भी ठाकुर जी ने उसमें भाग लेने के लिये आदेश दिया हुआ था। प्रो. गुप्ता ने मुझे सुझाव दिया कि मैं महाराजा रणजीत सिंह और कांगड़ा नरेश महाराजा संसार चन्द की सफलताओं-असफलताओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करूँ। विषय मुझे भी रूचिकर लगा, क्योंकि रणजीत सिंह और संसार चन्द दोनों ही समकालीन थे।

लेकिन जैसे ही मैंने इस विषय पर अपना वक्तव्य समाप्त किया और इस विषय पर जिज्ञासा समाधान के लिये प्रश्न आमन्त्रित किये तो सबसे पहले प्रश्न पूछने वालों में से ठाकुर रामसिंह जी ही थे। मैं घबराया, ठाकुर जी गरजे, यह विषय ही भ्रमित करने वाला है। उन्होंने कहा कि रणजीत सिंह और संसार चन्द की तुलना का कोई आधार ही नहीं बनता है। रणजीत सिंह के राज्य सम्पन्नता के पीछे मध्यकालीन भक्तिकाल की नैतिक शक्ति थी और इसलिये उनके अभियानों के पीछे राष्ट्रीय भावना थी लेकिन, संसार चन्द के अभियान व्यक्तिगत सत्ता की महत्त्वकांक्षाओं से प्रेरित थे। ठाकुर जी के इस वक्तव्य से सन्नाटा छा गया। लेकिन क्योंकि प्रश्न विचार गोष्ठी में आया था तो मुझे कुछ न कुछ उत्तर तो देना ही था। लेकिन सत्र समाप्ति के बाद उन्होंने मुझे बुलाया और लम्बे समय तक अपने वक्तव्य का तात्त्विक विवेचन करते रहे। उनका विश्लेषण सही और सटीक था। अपने मत के पक्ष में उन्होंने प्रमाण भी दिये।

लेकिन इस सारी बहस के बाद जो बिन्दु मेरे सामने स्पष्ट था कि इतिहास मंथन उनके लिये केवल बौद्धिक विलास का माध्यम नहीं था और न ही अकादमिक बहस का विषय मात्र। राष्ट्रीय नव निर्माण में सही इतिहास दृष्टि उनके लिये प्रतिबद्धता थी। उन्होंने स्वयं पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से इतिहास विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी और उसमें स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया था। विश्वविद्यालय ने उन्हें इतिहास विभाग

में पढ़ाने के लिये आमंत्रित भी किया था। लेकिन शायद उन की रुचि इतिहास पढ़ने से ज्यादा इतिहास निर्माण करने में थी। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य करने के लिए असम पहुंच गये। आज असम में संघ का जो स्वरूप है उसे गढ़ने में ठाकुर जी का सबसे ज्यादा योगदान है। असम में राष्ट्रवादी शक्तियों को संगठित करने में ठाकुर जी ने अपना यौवन समर्पित कर दिया।

इसे संयोग ही कहना होगा कि सितम्बर २००१ को मेरी मुलाकात ठाकुर जी से उनकी इसी कर्मभूमि असम में ही हुई थी। ठाकुर जी ने मुझे गुवाहाटी आने का सबब पूछा। तो मैंने उन्हें अपने महाविद्यालय में होने वाले राष्ट्रीय सैमीनार के बारे में विस्तार से बताया। मेरा मत था कि लद्दाख से लेकर अरूणाचल तक का पर्वतीय क्षेत्र आन्तरिक रूप से एक ही सांस्कृतिक धारा से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र की समस्याएं सांझी हैं। दिल्ली में बैठकर इन समाचारों के समाधान की बात तो दूर उन्हें ठीक ढंग से समझा भी नहीं जा सकता। सरकार इन पर्वतीय क्षेत्र में विकास का जो मैदानी मॉडल लागू कर रही हैं, उससे समस्याओं की वृद्धि भी हो रही है और सांस्कृतिक क्षार भी हो रहा है। पर्वतीय क्षेत्र के लोगों के बारे में मैदानी क्षेत्रों में पूर्वाग्रह विद्यमान रहते हैं। इन पूर्वाग्रहों के चलते संवाद में कठिनाई होती है और अविश्वास की भावना पनपती है। इसलिये जरूरी है कि पर्वतीय क्षेत्र के लोगों की अपनी संवाद रचना के लिये एक उत्तम का निर्माण किया जाए ताकि एक बार तवांग से लेकर लेह तक के लोग एक साथ बैठ तो सकें। युगयुगीन हिमालय और वर्तमान चुनौतियां विषय को लेकर हो रहा सैमीनार उसी की रचना करता है। ठाकुर जी मेरी बात अत्यन्त ध्यान से सुनते रहे।

इसके बाद शान्त भाव से उठे और अपने बैग में से एक ग्रन्थ उठा लाये। मेरी उत्सुकता बढ़ी। ग्रन्थ असमिया भाषा में था। बोले असम के इतिहास का कौन सा स्थान है हमारे इतिहास में? हम स्कूलों और कॉलेजों में जो इतिहास पढ़ा रहे हैं, वह क्या कभी उतर भारत से आगे बढ़ पाता है। दक्षिण तक जाने की तो बात दूर, पंजाब से आगे हिमाचल तक भी नहीं पहुंच पाता है। लद्दाख, कश्मीर, उत्तरांचल, नेपाल, असम, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश को नहीं छू पाता हैं यह इतिहास? हिमालय को हम भारतीय इतिहास की धुरी स्वीकार करते हैं। लेकिन हिमालय के लोगों को विदेशी आक्रान्तों से जूझते हुए दिखाया है, उसका हम कहीं उल्लेख नहीं करते। आप हिमालय की समस्याओं को लेकर विचार गोष्ठी तो कर रहे हो। लेकिन हिमालय के लोगों से हो रहे इस अन्याय की ओर उनका ध्यान गया है क्या? यह कहकर उन्होंने असमिया भाषा का वह ग्रन्थ अपने बैग में रख लिया। मैं फिर सेमीनार सम्बन्धी तैयारियों की जानकारी देने लगा। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उस समय के कुलपति प्रो. एस. के. गुप्ता जी सेमीनार की आयोजन समिति से जुड़े हुए थे। ठाकुर जी उनका नाम सुनकर बोले, ''उन्हें कहें कि कम से कम वे तो अपने विश्वविद्यालय में भारत के समग्र इतिहास का पाठ्यक्रम तैयार करवायें, जिसमें असम के इतिहास को भी उचित स्थान दिया जाये।

जिनकी राष्ट्रीय दृष्टि है उन्हें तो इस काम में आगे आना चाहिये। जो लोग अभी भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद की दृष्टि से अंधे हैं, उन्हें तो कहना ही क्यों है?" उसके बाद ठाकुर जी मुझसे पूछते रहे कि गुवाहाटी में किस-किस से मिलने वाला हूँ। उन्होंने गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रो. भूपेन्द्रनाथ चौधरी का नाम सुझाया। वे शायद उस समय असम की इतिहास संकलन योजना से जुड़े हुए थे। फिर वे लम्बे अरसे तक असम के इतिहास के बारे में मुझे बताते रहे। दूसरे दिन सुबह मुझे अरुणाचल प्रदेश के लिए निकलना था। वहां तवांग घाटी में बौद्ध सम्मेलन हो रहा था। जिसमें शिरक्त करनी थी और साथ ही अरुणाचल प्रदेश के उस समय के मुख्यमन्त्री मुकट मिरथी को चकमोह के सैमिनार के लिए आंमत्रित करना था। जाने से पहले मैं एक बार फिर ठाकुर राम सिंह को नमस्कार करने के लिए उनके कमरे में गया। उन्होंने मुझे बिठा लिया और एक स्वयंसेवक को नीचे वस्तु भण्डार से लचित बड़फूकन की जीवनी की पुस्तक लाने के लिए भेजा। लचित बड़फूकन की यह कुछ पृष्ठों की छोटी सी पुस्तिका थी। ठाकुर जी ने मुझे देते हुए कहा कि इसे रास्ते में पढ़ना, फिर वह लचित बड़फूकन का इतिहास बताने लगे "असम पर औरंगजेब की सेना ने आक्रमण किया हुआ था। लम्बे अरसे से लड़ाई चल रही थी। लचित बड़फूकन के नेतृत्व में लोग इस्लामी सेना का मुकाबला कर रहे थे। यदि औरंगजेब की सेना जीत जाती तो भारत का पूर्वोत्तर पूरी तरह विदेशी आक्रान्तों के हाथ में चला जाता और तब असम के इस्लामीकरण को कोई रोक नहीं पाता। ब्रह्मपुत्र की लहरों पर आसन्न युद्ध के बादल गहरा रहे थे। असमी सेना की टुकड़ियां नावों में बैठकर ब्रह्मपुत्र की रक्षा कर रही थी। लचित बड़फूकन स्वयं रात्रि को घूम-घूम कर अपनी सेना का उत्साह वर्धन कर रहे थे। जब वे एक टुकड़ी के पास पहुंचे, जिसका नायक उनका अपना सगा मामा था तो उन्होंने पाया कि नायक सो रहा है। लचित ने मयान से तलवार निकाल कर मामा का सिर धड़ से अलग कर दिया और कहा देश पहले मामा बाद में।

ब्रह्मपुत्र पर सरायघाट के स्थान पर असमी सेना और औरंगजेब की सेना में भयंकर युद्ध हुआ। लचित बड़फूकन की बहादुरी के आगे औरंगजेब की सेना टिक न सकी और उसे भागना पड़ा। ठाकुर राम सिंह जी लचित बड़फूकन की शौर्य गाथा सुनाते हुए सहसा चुप हो गए। कुछ क्षण के अन्तराल के बाद फिर बोले जो काम राजस्थान में महाराणा प्रताप ने, महाराष्ट्र में शिवाजी ने और पश्चिमोत्तर में गुरू गोबिन्द सिंह जी ने किया था, वही काम पूर्वोत्तर में लचित बड़फूकन ने कर के दिखाया। लेकिन इसे देश का दुर्भाग्य कहना चाहिए कि लचित बड़फूकन को देश भूल गया। गुवाहाटी में असम के तत्कालीन राज्यपाल श्री एस. के. सिन्हा के प्रयासों से लचित बड़फूकन की आदमकद मूर्ति लगाई थी। लचित बड़फूकन की वह छोटी जीवनी मैंने अपने बैग में डाली और ठाकुर जी से विदा लेकर, त्वांग की यात्रा पर निकल गया।

चकमोह महाविद्यालय में युगयुगीन हिमालय पर आयोजित सेमीनार अत्यंत सफल रहा। इन्द्रेश कुमार जी ने उसी सेमीनार में हिमालय परिवार की स्थापना की घोषणा

की। सेमीनार में अनेक हिमालयी प्रान्तों के प्रतिभागियों ने शिरकत की। बाद में मैंने इस की रिर्पोट ठाकुर राम सिंह जी को भी दी।

मैं जुलाई, २००२ में हि.प्र. विश्वविद्यालय के धर्मशाला परिसर के निदेशक का पदभार सम्भाल कर धर्मशाला में आ गया, लेकिन मैं लचित बड़फूकन को लेकर ठाकुर रामसिंह जी की पीड़ा को अभी तक भूल नहीं पाया था। मैंने ठाकुर जी को एक पत्र लिखा जिसमें क्षेत्रीय केन्द्र में लचित बड़फूकन के योगदान को रेखांकित करने वाले प्रस्तावित सेमीनार के आयोजन की सूचना थी और साथ ही उन्हें उस सेमीनार में मुख्यातिथि के नाते आमंत्रित किया। उधर इन्द्रेश कुमार जी ने हिमालय परिवार की ओर से वर्ष २००२ में पूरे देश में हिमालय वर्ष के तौर पर मनाने की घोषणा की थी और हिमालय परिवार इस दिशा में सक्रिय हो गया था। हिमालय वर्ष में लचित बड़फूकन के योगदान को रेखांकित करने वाली विचार गोष्ठी का इससे अच्छा संयोग और क्या हो सकता था। साथ ही केन्द्र के भवन का नामकरण लचित बड़फूकन के नाम से किया जाना प्रस्तावित था। ठाकुर रामसिंह जी इस योजना और प्रस्ताव को सुनकर बहुत भाव विभार हो गये। उन्होंने अपने आने की सहर्ष स्वीकृति दी। ८ नबम्वर, २००२ को क्षेत्रीय केन्द्र विश्वविद्यालय में लचित बड़फूकन के योगदान को लेकर विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई और उसमें ठाकुर राम सिंह जी ने बीज भाषण दिया। वे लगभग एक घण्टे तक धारा प्रवाह बोले और भारत के समग्र इतिहास में असम के इतिहास की महत्ता को रेखाकिंत किया। क्षेत्रीय केन्द्र के भवन का नामकरण लचित बड़फूकन भवन दिये जाने की नामकरण पट्टिका का भी उन्होंने उद्घाटन किया। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उस समय के महाविद्यालय विकास परिषद् के डॉ. सुदेश कुमार गर्ग ने इस पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

ठाकुर राम सिंह जी इस सारे प्रसंग से इतने प्रसन्न थे कि बाद में वह अनेक स्थानों पर लचित बड़फूकन पर हुए इस सेमीनार की बात को दोहराते रहे और इस बात पर प्रसन्नता प्रकट करते रहे कि क्षेत्रीय केन्द्र ने अपने भवन का नाम लचित बड़फूकन के नाम पर कर के उन्हें सही श्रद्धांजलि भेंट की है।

लगभग एक वर्ष पहले ठाकुर जी ने सुजानपुर टीहरा में ठा. जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान की ओर से कांगड़ा के इतिहास पर एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया था। जिसमें भारत स्थित मंगोलिया के राजदूत मुख्यातिथि के रूप में पधारे थे। इस विचार गोष्ठी का संचालन करने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा था। जब वह मेरा परिचय करवाने लगे तो एक बार फिर उन्होंने २००२ के उसी सेमीनार का उल्लेख करते हुए यह बताया कि किस प्रकार क्षेत्रीय केन्द्र धर्मशाला ने लचित बड़फूकन के महत्त्व पर सेमीनार आयोजित किया था। आज ठाकुर जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनकी दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं।

हमारे पथ-प्रदर्शक ठाकुर जी

डॉ. बलदेव चावला
पूर्व स्वास्थ्य मंत्री पंजाब
चेयरमैन पंजाब वाटर सप्लाई
सीवरेज बोर्ड,

तो गोली तुम खाओ

जिस समय पंजाब में आतंकवाद जोरों पर था, उस समय जब कोई भी व्यक्ति घर से बाहर निकलता था, उसको यह पता नहीं होता था कि उसने घर वापिस लौटकर जाना है या नहीं। उग्रवादी दिन-दहाड़े भीड़ भरे बाजारों में निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे थे। लोगों को बसों, कारों, गाड़ियों से निकाल कर एक लाईन में खड़ा करके ए.के. ४७ से निशाना बना रहे थे। अपने ही धर्म स्थानों पर बमों से हमला किया जा रहा था। कोई भी व्यक्ति पंजाब में अपने आप को सुरक्षित नहीं समझता था।

उस समय मेरे पास संघ की ओर से अमृतसर महानगर सम्पर्क प्रमुख का दायित्व था। मा. ठाकुर राम सिंह जी हमारे क्षेत्रीय प्रचारक थे। डॉ. कुलदीप चन्द जी महानगर संघ चालक थे। माननीय ठाकुर जी ने मुझे बुलाकर कहा कि ऐसा व्यक्ति बताओ जो आतंकवादियों का सामना कर सके। उनका उसी भाषा में जबाब दे सके तथा हिम्मत वाला हो। मैं दिनभर उन सभी कार्यकत्ताओं को मिला जो इस कार्य के लिए ठीक समझे जाते थे। रात को लगभग १० बजे डॉ. कुलदीप चन्द जी के निवास स्थान पर पहुंचा। जहां मा. ठाकुर जी भी पधारे हुए थे। उग्रवादियों की गोली कोई नहीं खाना चाहता थे। जब मैं पूरी बात बता चुका तो उन्होंने यही कहा, ***''अगर वो गोली नहीं खाना चाहते तो तुम गोली खाओ''*** कल से इस काम को संभालो, यह सब सुनकर मैं एक आध मिनट सोचता रहा। फिर मैंने कहा जैसी आप की आज्ञा। डॉ. कुलदीप चन्द जी ने भी मा. ठाकुर जी की हां में हां मिला दी। उसके बाद आगे कोई बात नहीं रही। स्वयंसेवक होने के नाते अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना था।

बस फिर मैंने अगले ही दिन आतंकवाद के विरुद्ध काम करना शुरू कर दिया। जब पहले ही दिन मैंने अपना वक्तव्य आतंकवाद के विरुद्ध दिया तो फोन आया, यह स्टेटमैंट तुम्हारा है? मैंने कहा यह मेरा ही स्टेटमैंट है। कुछ दिनों के बाद तीन उग्रवादी मुझे मारने के लिए आए। दो उग्रवादी कटड़ा मोती राम चौक (अमृतसर) में खड़े रहे। जब सायंकाल का समय था, एक उग्रवादी मुझे मारने के लिए उस समय क्लीनिक में आया। क्लीनिक में मरीजों की भीड़ बहुत थी। उस समय मेरे पास केवल दो गनमैन थे। एक सरदार गनमैन क्लीनिक के सामने ड्यूटी पर था। उग्रवादी ने उस से बातचीत की। गनमैन के डर से वह क्लीनिक में नहीं घुसा, क्योंकि गनमैन ने कह दिया था कि मेरे होते हुए, तुम डॉ. साहब को नहीं मार सकते। तुम भी बचकर नहीं जाओगे। यह सारी बात गनमैन

ने मुझे बताई। जब उग्रवादियों के बारे में लोगों को पता चला तो हवाई फायर करते हुए भाग गये।

मैंने अपने साथियों के साथ लगभग १२ वर्ष उग्रवाद के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी। मा. ठाकुर राम सिंह जी मा. विश्वनाथ जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सुरक्षा समिति का निर्माण हुआ था। समिति के माध्यम से मैं अपनी टीम के साथ लगभग सभी प्रधानमन्त्रियों एवं विरोधी दल के लीडर साहबान, श्रीमान् अटल जी, श्री आडवाणी जी तथा संघ के वरिष्ठ अधिकारियों को मिलता रहा। इस लम्बे समय में मा. ठाकुर राम सिंह जी एवं मा. विश्वनाथ जी का अनेकों बार मार्गदर्शन मिला। प्रधानमन्त्रियों एवं दूसरे लीडर साहबान को मिलने से पहले हम मा. ठाकुर जी एवं मा. विश्वनाथ जी से विचार विमर्श करके ही जाते थे। इन का दृढ़ मत था कि किसी भी कीमत पर आपसी भाईचारा टूटना नहीं चाहिए। पंजाब से हिन्दुओं का पलायन नहीं होना चाहिए। इस प्रक्रिया में हम काफी हद तक सफल रहे।

समाज स्वयंसेवक के आचरण की ओर देखता है

मेरे लड़के डॉ. जयवन्त चावला जो इस समय न्यूरोसर्जन है, उस की शादी थी। मा. ठाकुर रामसिंह जी का स्नेह हमारे परिवार के साथ बहुत था। शादी की तारीख पक्की करने से पहले मैं उनसे मिला और उनको बताया कि शादी में दहेज नहीं लेंगे। रोका ठाका, चुनी दहेज केवल सवा रुपये में। यह सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुये और कहा शादी में मैं बच्चों को आशीर्वाद देने के लिये अवश्य आऊँगा।

शादी के समय पंडाल में मन्दिर बनाया गया था। मा. ठाकुर जी, विश्वनाथ जी, श्री अशोक जी प्रभाकर जी तथा अन्य अधिकारियों द्वारा जोत जलाई गई। ज्योति प्रजवल्लन के बाद आरती की गई और ठाकुर जी ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। जब मा. ठाकुर जी को इस बात का पता चला कि शादी समारोह में यहां पर शराब का सेवन नहीं किया है, न ही शराब पीकर शादी में कोई आ सकता है, शादी में भोजन आदि पर खर्च होने वाली राशि भी आधी लड़के वाले खर्च करेंगे। मा. ठाकुर जी ने यह सुनकर कहा, ''समाज स्वयंसेवक के आचरण की ओर देखता है।'' हम सब को इस की ओर ध्यान देना होगा।

नेरी का पूरा ध्यान रखना

हम सब जानते हैं कि माननीय ठाकुर राम सिंह जी को सन् १९८८ में भारतीय इतिहास संकलन योजना का दायित्व सौंपा गया और वे सन् १९९२ में भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। आप के अनथक प्रयास से हमीरपुर जिला के नेरी गांव में ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान की स्थापना हुई। माननीय ठाकुर राम सिंह जी ने मुझे भी इस में पूरा योगदान देने के लिए कहा। मैंने नेरी में काफी बैठकों में भाग लिया।

जब पहली बार माननीय ठाकुर जी बीमार पड़े तो लुधियाना हस्पताल में दाखिल थे। उन्होंने मुझे एवं डॉ. भीम सेन को मिलने के लिए संदेश भेजा। हम उसी दिन लुधियाना पहुंचे। माननीय ठाकुर राम सिंह जी का हाल-चाल पूछा। वह कुछ प्रसन्न नजर आये। हमने कहा आप जल्दी से स्वस्थ हो जाओगे। उस समय वह मुझसे एक ही बात करते रहे। ***आप नेरी का पूरा ध्यान रखना।*** समय-समय पर जाते रहना। फिर घर का हाल-चाल पूछा। हम थोड़ी देर वहां पर ठहरे।

माननीय ठाकुर राम सिंह जी जब दूसरी बार बीमार पड़े तो पता चलने पर मैं लुधियाना हस्पताल पहुंचा, माननीय ठाकुर जी से मिला। डॉ. साहब ने जो डयूटी पर थे, श्री ठाकुर जी के मुंह पर से थोड़ी देर के लिए ऑक्सीजन मास्क हटा दिया। माननीय ठाकुर जी का हाल-चाल पूछा वह कहने लगे मैं ठीक हूँ। आप लोग मेरे पीछे ***नेरी का ध्यान रखना।*** उस समय माननीय रामेश्वर जी क्षेत्रीय प्रचारक भी उन को मिलने के लिए आए हुए थे। उन्होंने कहा, ''ठाकुर जी आप ने सौ साल पूरे करने हैं।'' पर प्रभु को ऐसा मंजूर नहीं था। ठाकुर राम सिंह जी जीवन के अंतिम क्षणों में भी अपने कार्य के प्रति सक्रिय रहे।

आश्चर्यजनक कर्म साधना

ज्योति स्वरूप
वरिष्ठ प्रचारक
झण्डेवालान, दिल्ली

ठाकुर साहब का जीवन कर्म आग्रही था। मेरी उनसे पहली मुलाकात १९४४ में दिल्ली और पंजाब प्रान्त के संयुक्त संघ शिक्षा वर्ग में मेरठ में हुई थी। ठाकुर साहब नागपुर से तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण पूर्णकर लौटे थे। मेरठ के वर्ग में उन्हें वाहिनी प्रमुख बनाया गया। उसी वाहिनी के एक गण का गण शिक्षक मैं स्वयं था। उनके ललाट पर दिव्य आभा सदा चमक बिखेरती थी। उनका जीवन ध्येय के प्रति समर्पित था। अध्ययन और अनुसंधान की तीक्ष्ण बुद्धि उन्हें विधाता ने जन्मजात दी हुई थी।

९५-९६ वर्ष की उम्र में भी मैंने उन्हें अपने वस्त्र स्वयं धोते हुए देखा। उन्हें निकट से देखने का अवसर मुझे काफी मिलता रहा, क्योंकि जब वह सह क्षेत्र प्रचारक नियुक्त हुए तब मुझ पर दिल्ली प्रांत के व्यवस्था प्रमुख का दायित्व आ गया था। पिछले अनेक वर्षों से केशव कुंज, दिल्ली में उनका और मेरा कक्ष भी एक तल का अगल-बगल ही रहा है। मैंने हमेशा उन्हें किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त पाया। ९५-९६ साल की अवस्था में भी वह अकेले प्रवास करने के लिए चल देते थे। उनकी आश्चर्यजनक साधना से मैं स्वयं अचंभित रह जाता था। संघ कार्य की साधना में उन्होंने बहुत ऊँचा आदर्श प्रस्तुत किया।

परिस्थितियों को अनुकूल बनाने वाले साधक

रमाशंकर राय
हिन्दुस्तान समाचार
गुवाहाटी, असम

असम (वर्तमान उत्तर और दक्षिण असम प्रांतों) के प्रांत प्रचारक माननीय राम सिंह ठाकुर से मेरा प्रथम संपर्क १९६१ में हुआ। उस समय मैं होकर असम में एक असमिया माध्यम के माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत था। अब तक मुझे असम में संघ कार्य के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं थी। मैंने 'पांचजन्य' को पत्र लिखा। उन्होंने मुझे प्रान्त प्रचारक और उनका पता देकर उनसे संपर्क करने का सुझाव दिया। उसके अनुसार मैंने प्रांत प्रचारक ठाकुर जी को पत्र लिखा। एक सप्ताह बाद उनका पत्र आया जिसमें दिसम्बर या जनवरी की एक तिथि का उल्लेख था। उस तिथि को नगांव जिले के कामनुर में तीन दिवसीय शीत शिविर में शामिल होने का आमंत्रण भी उन्होंने दिया। पत्र में यह भी उल्लेख था कि शिविर में सरसंघचालक पूज्य गुरुजी उपस्थित रहने वाले हैं। स्वाभाविक ही मैं उसमें भाग लेने गया और वहीं पर मा. ठाकुर जी से मेरी प्रथम भेंट हुई। यह संपर्क असम में उनके कार्यकाल और बाद में अंतिम समय तक जारी रहा। वही आत्मीयता प्रारंभ से लेकर अंत तक बनी रही।

मा. ठाकुर जी का जीवन संघ को समर्पित था और उनका कामकाज संघ का जीवंत प्रतिरूप था। वे प्रांतभर में (वर्तमान के सातों राज्यों में) भ्रमण करते रहते थे। जहां भी जाते वहां की शाखा के समय से कुछ पहले वहां के कार्यकर्त्ताओं को आवाज देने में कभी संकोच नहीं करते। कार्यक्रम के बाद कार्यकर्त्ताओं के घर जाकर उनसे संपर्क करने में नहीं झिझकते। १९६२ के चीनी आक्रमण के समय असम से बाहर के लोग असम से भागकर देश के अन्य सुरक्षित राज्यों को जा रहे थे। उस समय मा. ठाकुरजी न केवल डटे रहे, बल्कि चीनियों के असम पर अधिकार कर लेने की स्थिति में संघ के स्वयंसेवकों को लेकर उनसे मुकाबला करने की, उस समय के वरिष्ठ प्रचारक मा. एकनाथ जी रानाडे के साथ मिलकर रणनीति बनाने में व्यस्त थे। वे संकट से घबराने के स्थान पर उसका सफल मुकाबला करने में विश्वास करते थे। चीनी आक्रमण शीघ्र ही समाप्त हो गया, साथ ही तीसरी दुनिया के नेता बनने के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के ख्याली पुलाव का भी अंत हो गया। अपने 'पंचशील' सिद्धांत की इस परिणति को देखकर वे इतने मर्माहत हुए कि डेढ़ वर्ष बाद ही उनका प्राणांत हो गया। चीनी आक्रमण के बाद देश ने काफी प्रगति ही नहीं की है, बल्कि देश एक शक्तिशाली और वैभवशाली राष्ट्र बनने की दिशा में चल पड़ा है। आज देश चीन की चुनौती का करारा जवाब देने को तैयार है।

मा. ठाकुर जी अनुकूल निर्णय लेने में नहीं चूकते थे। मैं उस समय जोरहाट में

बी. टी. की पढ़ाई कर रहा था। उस समय वहां के प्रचारक सुधाकर राव देशपांडे प्रभात शाखा में बिगुल बजाना सिखाते थे। एक दिन एक पुलिस अधिकारी निकट के थाने में आया और उनसे उनका नाम आदि पूछा। उन्होंने स्वाभाविक रूप से अपना नाम और संघ का नाम आदि बता दिया। उस मुस्लिम पुलिस अधिकरी ने डी.आ.ई. आर. (डिफेंस ऑफ इंडिया) कानून के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया। दूसरे दिन जब यह समाचार 'असम ट्रिब्यून' नामक समाचार पत्र में छपा तो मैं प्रचारक को लेकर जोरहाट के कई बड़े वकीलों से मिला। सबने यही पूछा कि अभी तक गिरफ्तार नहीं हुए। किसी के पास डीआईआर कानून की किताब नहीं थी। अब घबराने की मेरी बारी थी। कारण, पास के डिब्रूगढ़ में ललित बददोलोई नामक जनसंघ कार्यकर्त्ता को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। उस समय ठाकुर जी ने सभी कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया था कि कोई गिरफ्तारी न हो। श्री देशपांडे को मैंने सलाह दी कि वे मा. ठाकुर जी से मिलकर सारी बात बताएं और उनकी सलाह के अनुसार कार्य करें।

दूसरे दिन मा. रामसिंह, 'आलोक' के संपादक राधिकामोहन गोस्वामी और जनसंघ के प्रदेश संगठन मन्त्री रमेश कुमार मिश्र के साथ जोरहाट पहुंचे। मुझसे कहा कि एक आवेदन पत्र देकर संघ की शाखा फिर से आरंभ हो। जब मैं जिला कार्यवाह के पास हस्ताक्षर कराने गया, तो उन्होंने इससे इंकार कर दिया। जब मैंने उन्हें जिला कार्यवाह के निर्णय की जानकारी दी तो उन्होंने कहा, ''तुम आवेदन पत्र दोगे।'' मैंने पूछा कि मैं क्या हूँ? उनका तत्काल उत्तर था कि तुम जिला कार्यवाह हो। आवेदन पत्र पर पद का उल्लेख जरूरी होता है। महीनों बाद उत्तर मिला कि आर एस एस को सैनिक कार्यवाही करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। शाखा बंद थी। जब मा. बाला साहब देवरस सरकार्यवाह के रूप में १९६३ में असम में आए तो उन्होंने कहा कि तुममें हिम्मत हो तो शाखा शुरू करो। तुम्हें कोई अनुमति नहीं देगा, किंतु कोई रोकने भी नहीं आएगा। मैंने वैसा ही किया और शाखा फिर से चल ही नहीं, बल्कि हमने सीटी बजाकर पथ संचलन भी किया। केवल बिगुल नहीं बजाया। इस समारोह में गुरुदक्षिणा का कार्यक्रम नहीं हो पाया। १९६५ की जनवरी में जब मा. ठाकुर जी आए तो उन्होंने कहा कि गुरुदक्षिणा का कार्यक्रम करो। मैंने कहा कि समय बीत गया है। उन्होंने कहा कि काम कैसे चलेगा। उस समय संघ की स्थिति आज जैसी नहीं थी। उस वर्ष हमने फरवरी में केवल गुरुदक्षिणा का कार्यक्रम ही नहीं किया बल्कि दक्षिणा राशि में ७५ प्रतिशत की वृद्धि भी दर्ज की। इस प्रकार उनमें निर्णय लेने और कार्यकर्त्ताओं में उत्साह भरने की अद्‌भुत क्षमता थी। १९७१ में जब उनका स्थानांतरण पंजाब में हुआ तो मा. ठाकुर जी ने उसे बड़ी सहजता में लिया। किन्तु ठाकुर जी का असम में बिताए दो दशकों से अधिक कार्यकाल से बहुत ही लगाव था। इसीलिए यहां से जाने के बाद भी साल दो साल में आते ही रहते थे। उनके समय के कार्यकर्त्ता भी कभी भी उनको भूल नहीं पाते।

बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में जब मेरा नई दिल्ली वर्ष में एक-दो बार जाना

होता था, उस समय दिल्ली कार्यालय में जब कभी मेरी भेंट होती थी तो समय प्रतिबंधित यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) द्वारा संघ के चार प्रचारकों की हत्या का स्मरण आते ही वे दुखी हो जाते थे। उनका कहना था कि जब असम में संघ का काम इसके आधे जिलों तक ही सीमित था, उस समय भी उनके नेतृत्त्व में संघ विरोधियों की अच्छी पिटाई की व्यवस्था की थी। उस समय उनकी उम्र अस्सी वर्ष से अधिक थी, किन्तु उनका जोश किसी तरुण कार्यकर्त्ता से अधिक था। ९० वर्ष की आयु पार करने के बाद भी उन्होंने इतिहास संकलन और शोध केन्द्र का निर्माण हिमाचल में किया है। वह कार्यकर्त्ताओं को अंतिम समय तक कार्य करने की प्रेरणा देते रहे।

बाल्यावस्था में मिला स्नेह

विनोद भतरा
प्रधान सचिव
अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद
असम प्रान्त

स्वर्गीय रामसिंह जी ठाकुर के साथ हमारे परिवार का घनिष्ट व्यक्तिगत सम्बन्ध रहा। पूज्य पिता जी स्व. शंकरलाल शर्मा (भातरा), जिनका असम में संघ कार्य बढ़ाने में सक्रिय योगदान रहा है, के पास ठाकुर साहब प्राय: घर पर आया करते थे। हम उस समय बाल्यावस्था में होने के नाते उनके अत्यधिक स्नेह के पात्र बन जाते थे। उनका व्यक्तित्व विलक्षण था। संघ की शाखा में जब-जब उनका बौद्धिक सुनने को मिलता, मानसिक रूप से परिपक्व होते रहने का व राष्ट्रहित में संघ संगठन के लिये कार्य करने की प्रेरणा मिलती रहती। उनके बौद्धिकों में हरिसिंह नलवा, नलवा आया, नलवा के बारे में विशेष उल्लेख रहता था ताकि उनके जैसा साहसी, पराक्रमी व देश भक्ति से ओत-प्रोत व्यक्तित्व की प्रेरणा मिल सके। वे अनुशासन को विशेष महत्त्व देते थे। असम में उनका काफी लम्बा प्रवास रहा। सभी स्वयंसेवक बन्धुओं से अनका आत्मीय भरा व्यवहार रहता था। असम में अपना दायित्व अच्छी प्रकार निर्वाह करने के बाद आपको संघ कार्य हेतु उत्तर भारत जाना पड़ा। समय-समय पर मेरा जब भी उत्तर भारत का भ्रमण होता रहा, उनसे मिलकर आत्मीयता व स्नेह का बोध करवाते रहने की लालसा बनी रहती व कितना भी व्यस्त कार्यक्रम क्यों न हो, उनका सान्निध्य प्राप्त हो ही जाता था। सन् १९९५ में दिल्ली प्रवास के समय माननीय श्री रमेश कुमार जी मिश्र, माननीय श्री लखेश्वर जी गोहाई व श्री हरेकृष्ण जी भराली के साथ, मेरा भी संघ कार्यालय झंडेवालान में तीन-चार दिनों के लिये रुकने का कार्यक्रम बना तो मैंने देखा कि स्व. रामसिंह जी जो ठाकुर साहब जी के नाम से प्रसिद्ध थे, ने स्वयं अपने हाथों से मा. मिश्रा व गोहाई जी के सोने का बिस्तर लगाया। हम सब को किसी प्रकार की असुविधा व कष्ट तो नहीं है, इसकी जानकारी स्वयं कार्यालय के विश्राम कक्ष में आकर लेते थे।

अस्खलित साधक में भारतीय आदर्श

जानकी नारायण श्रीमाली
महामन्त्री, भा.इ.स.यो. समिति राजस्थान,
ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर, राजस्थान

माननीय ठाकुर श्री रामसिंह जी भारतीय शौर्य तथा पौरुष के पूंजीभूत ज्वाला और साथ ही हृदय में हिमनद सी शीतलता से युक्त अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी वाणी में अग्नि शिखा सी तेजस्विता, किन्तु कार्यकर्ता के साथ व्यवहार में अमृत सी संजीवनी एक साथ समुपस्थित थी। ९५ वर्ष की आयु तक जिस ध्येय के प्रति राष्ट्र संगठन हेतु वे समर्पित रहे, उसकी अस्खलित साधना ठाकुर जी ने की। अस्खलित साधना में भारतीय आदर्श भगवान परशुराम जी का आभास ठाकुर जी में होता था।

इतिहास संकलन समिति की बीकानेर शाखा और क्षेत्रीय कार्यालय बीकानेर ने उनके प्रत्येक निर्देश को ज्यों का त्यों पूरा करने का सदैव प्रयत्न किया, क्योंकि रंगमंच की त्रुटि उन्हें असह्य होती थी। अत: हमें और हमारे कार्यकर्ताओं को उनका सागर सा लहराता प्यार व स्नेह प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्देशानुसार मैंने १९८० से इतिहास संकलन समिति में कार्य करना प्रारंभ किया और तभी से ठाकुर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। यह सम्पर्क उनके प्रयाणकाल तक जीवंत बना रहा।

१९८२ में जयपुर, जोधपुर और कुरुक्षेत्र में सरस्वती शोध अभियान के निमित बैठकें हुई। मा. मोरोपन्त जी और ठाकुर रामसिंह जी इन बैठकों का मार्गदर्शन करते थे। ठाकुर जी के प्रत्येक बिन्दु पर सूक्ष्म विचार होता था। एक बार तो मोरोपन्त जी ने कहा कि ठाकुर जी का दिशा निर्देश पूरा हो तो हम आगे बढ़े, किन्तु वे अविचल भाव से विवेचन करते रहे।

ठाकुर साहब अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और मोरोपन्त जी संरक्षक एवं मार्ग दर्शक। यद्यपि ठाकुर साहब मा. पिंगले जी को सदैव केवल 'मोरोपन्त' कहकर ही संबोधित करते थे, किन्तु उनकी सहमति के बिना एक कदम भी नहीं बढ़ाते थे। गजब का आत्म अनुशासन था। मैं सरस्वती शोध की यात्रा में अपनी सहधर्मिणी के संग मारवाड़ के पूरे प्रवास में साथ था। वे हम सबकी सारी संभाल करते थे। मेरी पत्नी को प्यार से प्रोत्साहित करते थे।

बीकानेर जब भी आते तो वे प्राय: मेरे घर पर ही निवास करते थे, यह हमारे संयुक्त परिवार का सौभाग्य था। हमारा संघ परिवार है। अत: सन् १९५६ से ही प्रचारकों का घर पर आना जाना होता था। परिजन सादा भोजन बनाते। ठाकुर साहब घर पर आते ही बता देते, जैसा घर में भोजन बनता है वैसा ही करूंगा, कुछ विशेष नहीं। हमारे घर में बल्कि पूरे मारवाड़ में लाल मिर्च का भरपूर प्रयोग होता है। वे इसका आनन्द उठाते। मैं

दिल्ली के झंडेवालान कार्यालय में ठहरता तो प्रात: ५.३० बजे वे अपने हाथ से चाय बनाकर मुझे पिलाते थे। बहुत बार स्वयं पास बैठकर भोजन भी करवाते थे।

इतिहास की सच्चाई उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। हमने १९९४ में उन्हें द्वितीय रातीघाटी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। बीकानेर के टाउनहाल में उनका जोरदार भाषण भी हुआ दूसरे दिन हम उन्हें प्रात: पांच बजे रेल पर पहुंचाने आए। मैंने उन्हें पूगल की एक युवा क्षत्राणी की शौर्य कथा सुनाई। वे बोले इसे भी रातीघाटी के खाते में डाल दो। सभी हंस पड़े। मैं नाराज होकर बोला क्या रातीघाटी सच्चा इतिहास नहीं? वे बोले, संसार के समक्ष अभी इसका सत्य सिद्ध किया जाना शेष है। शोध करो। हम सभी जुट गए। इतने प्रमाण एकत्र हुए कि आज इतिहासकारों ने इस युद्ध को मान्य कर लिया है।

गोष्ठी है इतिहास लेखन नहीं

बीकानेर में ठाकुर साहब द्वारा प्रेषित सूची जिसमें इतिहास लेखन पद्धति के इतिहास लेखन हेतु प्रमुख विषय थे। त्रिदिवसीय संगोष्ठी में ठाकुर साहब पूरे समय रहे। बड़े-बड़े विद्वान हमारे बीकानेर संभाग का सारे सहभागी थे। हम बहुत खुश हुए। कार्यक्रम पूरा होने पर प्रमुख कार्यकर्त्ता ठाकुर साहब के साथ बैठे थे तो वे बोले – ''तुमने केवल गोष्ठी की है, इतिहास लेखन नहीं।'' यह ले लो मैडल।

कालगणना

बीकानेर के डूंगर कॉलेज में यू.जी.सी. के सहयोग से कालगणना पर ठाकुर साहब का व्याख्यान था। उनके डेढ़ घंटे के भाषण से विद्वान मंत्रमुग्ध हो गए किन्तु जब अंत में वे बोले कि मैंने जो बात बताई वह तो ब्रह्मा की कालकणना हैं। इससे बड़ी विष्णु की और उससे भी बड़ी शिव की होती है तो सचमुच प्राचार्य ने मेरे पैर पकड़ लिए बोले, अब क्या होगा? मैंने कहा चिंता न करिए ये डेढ घण्टे से एक मिनट भी अधिक नहीं बोलेंगे और वैसे ही हुआ, प्राचार्य की जान में जान आई।

कार्यकर्ता चयन

वे अपने कार्य के प्रति अति सजग थे। राजस्थान एक बड़ा प्रान्त है उसके लिए एक गतिशील महामंत्री की जरूरत थी। ठाकुर साहब ने मात्र भैय्या जी (कृष्ण भैय्या) से कहकर तथा मा. मोरोपन्त जी से दबाव डलवाकर हरियाणा प्रान्त के पूर्व प्रान्त प्रचारक श्री विजयकृष्ण नाहर को इतिहास कार्य के लिए मांग लिया। मैं सन् १९९९ मार्च में सेवा निवृत्त होने वाला था। उन्होंने हमारे प्रान्त प्रचारक श्री नंदलाल जी को कहा जानकी को हमें दे दो। वैसा ही हुआ चयन करना, चयनित को कठोर अग्नि परीक्षाओं से प्रशिक्षित करना तथा कार्य में जुटाना, उनका सहज भाव था।

संघ आज्ञा सर्वोपरि

वे प्रत्येक परिस्थिति में संघ आज्ञा को सर्वोपरि मानते थे। अपने छोटे से छोटे

कार्य करने के भी लिए मा. मोरोपन्त जी की सहमति प्राप्त करते थे। मुंबई से उनके पुराने शिष्य श्री इन्द्रजीत का निमन्त्रण आया तो जाने से पूर्व उन्होंने मोरोपन्त जी से आज्ञा ली और वहां से वापस आए तो प्राप्त राशि भी उन्हीं के पास रख दी। इस राशि से नेरी के शोध संस्थान की स्थापना का विचार आया।

नेरी शोध केन्द्र

हमीरपुर जिला हिमाचल प्रदेश में गांव नेरी डाकखाना खगल में ठाकुर साहब द्वारा स्थापित 'ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान' के शिलान्यास समारोह में मैं भी उपस्थित था। यह शोध संस्थान राष्ट्रीय इतिहास लेखन व शोध की दिशा में एक महान प्रयास है। यह संस्थान ठाकुर साहब की अमर स्मृति है।

सरल सुलभ कर्मयोगी

कभी-कभी कार्य में अपेक्षित प्रगति न होने आदि की घटनाओं से वे व्यथित भी हो जाते थे। ऐसे ही एक प्रसंग का मुझे ज्ञान हुआ। मैं उन दिनों हरिद्वार में था। वहां से सीधे हम दोनों (पति-पत्नी) दिल्ली गए। दो दिन ठाकुर साहब के साथ रहे। हम हरिद्वार से आम ले गए थे। उन्होंने अपने हाथ से हम दोनों को काटकर खिलाए। प्रचारकों को भी अपने कक्ष में बुलाकर अपने हाथ से आम खिलाए। वे बहुत सुलभ सरलता के स्वामी थे। ठाकुर साहब के साथ कार्य में अगणित संस्मरण हृदय में विद्यमान हैं। उनके दर्शनार्थ हमने १६, १७, १८ सितंबर को नेरी जाने का कार्यक्रम मा. शेरसिंह जी से मिलकर तय किया, पर हंस अनन्त यात्रा पर उड़ गया।

भारत में राष्ट्रीय इतिहास लेखन के वे आधुनिक युग के मनु थे। उन्हें क्रोध आता था पर क्षणिक। वे निष्पाप हृदय के स्वामी थे। स्वभाव में उग्रता थी मगर मुझे लगता है, उनके जीवन समुद्र में विकार की एक भी लहर नहीं उठी। वे किसी भी महान और दुष्कर कार्य को करने में सक्षम थे। मानों साक्षात् पौरुष का ही शरीर धारण कर घर में अवतीर्ण हुआ था। उनका आत्म समर्पण परिपूर्ण था। अन्त: प्रेरणा, ओजस्विता का उनमें समावेश था। वे निष्काम कर्मयोगी थे।

जंगल में मंगल

केदार नाथ साहनी
पूर्व राज्यपाल
जी–12, आई.एन.डी.एस.ई.
साऊथ एक्सटेंशन, भाग–2, नई दिल्ली

अप्रैल २००६ में ठाकुर जी मेरे पास घर पर आए तो कहने लगे कि हमीरपुर में नेरी नामक स्थान पर एक बड़ा शोध संस्थान बनाया गया है वहां पर भी गुरु जी की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में माधव भवन का निर्माण भी हो गया है, पूज्य सरसंघचालक माननीय सुदर्शन जी उसके उद्घाटन के लिए आ रहे हैं। आप वहां मुख्यातिथि के रूप में पधारने की कृपा करें। मैं तो ठाकुर जी के सामने नतमस्तक था। ठाकुर जी आपने हमारे घर पर आकर जो कृपा की है, यही हमारे लिए बहुत बड़ा उपकार है। मैं नेरी में बने शोध-संस्थान में आपके ओदशानुसार पहुंच जाऊँगा। मैं जब वहां पर पहुंचा तो देखकर गद्गद् हो गया। ठाकुर जी ने वहां जंगल में मंगल कर दिया था।

इतिहास के शोध के लिए इतना व्यवस्थित व बड़े स्थान का निर्माण कर दिया जो सभी सुविधाओं से पूर्ण हैं। वहां पर उस समय सिकन्दर के भारत आक्रमण विषय पर एक बड़ा सेमिनार आयोजित किया गया। ठाकुर जी ने ऐसे तथ्य वहां प्रस्तुत किए जो अभी तक सामने नहीं आए थे। उन तथ्यों में यह बात स्पष्ट थी कि सिकन्दर डोगरा वीरों के हाथों द्विगर्त क्षेत्र में मारा गया। देश का इतिहास इतना बिगाड़ दिया है। उसे ठीक करने के लिए ऐसे शोध संस्थानों की आवश्यकता महसूस हुई है। यह कठिन कार्य ठाकुर जी ने साकार कर दिखाया। ठाकुर जी योगी थे, पिछले दिनों वे बीमार पड़े हुए थे, उन्हें चिकन गुनियां हुआ था। ऐसी बीमारी में भी उन्हें अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न होते हुए कार्यकर्त्ताओं से उनके कार्य आदि के बारे में विस्तृत बात करते रहते थे। मैं भी उन्हें देखने गया था।

कार्यकर्त्ताओं का वे मार्गदर्शन करते रहते थे। वे कार्य को साधना के रूप में लेते थे। मेरा तो यह कहना है कि उनके द्वारा शुरु किये गए कार्य को मिलकर आगे बढ़ाना चाहिए।

साहसिक यात्रा से आश्चर्यचकित

सुखदास चित्रकार
अध्यक्ष, रिनर्चेन जङ–पो साहित्यिक
तथा सांस्कृतिक सभा, लाहुल–स्पिति

स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह जी, जो इतिहास पुरुष के नाम से विख्यात थे, ने आयु के ९३वें वर्ष में लद्दाख के लिए लाहुल मार्ग से होकर जाते समय मेरे घर ग्राम 'ठोलङ्' में ठहरे थे। लाहुल के सामाजिक तथा आर्थिक विषयों पर चर्चा के पश्चात् ठाकुर जी ने इतिहास का प्रसंग आरम्भ कर दिया। मुझे उनसे प्राचीन भारतीय स्वर्णिम इतिहास के बारे में जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस आयु में अद्भुत स्मरणशक्ति थी।

लाहुल से लद्दाख जाने का मार्ग निर्जन तथा दुर्गम स्थानों से होकर १८, ००० फुट ऊँचे जोत को लांघ कर जाता है ९३ वर्ष की आयु में मैं उनकी इस साहसिक यात्रा से आश्चर्यचकित रहा। उनके निधन से भारतमाता ने एक सच्चा देश भक्त सपूत खो दिया है।

ठाकुर रामसिंह जी का इतिहास विषयक चिन्तन

प्रो. लक्ष्मीश्वर झा
एच-7, धर्मपुरा क्लार्क, नजफगढ़
नई दिल्ली-43

वस्तुत: वही मनुष्य जन्म लेता है, जिसके जन्म से और कर्म से, देश, जाति और वंश समुन्नति को प्राप्त करते हैं। इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं जन्म लेकर मरता है। यह कथन ठाकुर रामसिंह के जीवन में सटीक बैठता है। श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी का जीवन देश और हिन्दू समाज के उन सभी नेताओं के लिए प्रेरणा का विषय है, जिन्होंने हिन्दूराष्ट्र का सपना देखा है। हिन्दूधर्म, संस्कृति, विचारधारा, व्यवहार आदि के व्याख्याता इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत माता के लिए समर्पित कर दिया। अपना यौवन, जीवन, सुख सन्तति आदि को भारत माता के चरणों में समर्पित कर, उसके सोये हुए वैभव को पुन: प्राप्त करने के लिए पंजाब लब्धजन्मा, आसाम के जंगलों में, गांव से गांव, द्वार से द्वार जाकर हिन्दुओं को संगठित किया तथा इतिहास के उन पन्नों के संग्रह में जुट गये, जो भारत के वैभव को दर्शाते हैं।

ऐसे चरित्रनायक के साथ मेरी मुलाकात दिल्ली के झण्डेवालान स्थित बाबा साहब आपटे स्मारक भवन में हुई। इसके संयोजक श्री वाजपेयी जी थे जो प्रदेश इतिहास संकलन योजना के अध्यक्ष थे। संघ के एक स्वयंसेवक होने के नाते तथा नजफगढ़ नगर के संघचालक होने के कारण कुछ कार्यकर्त्ताओं में मुझे इतिहास पुन: लेखन के कार्य से जुड़ने का आग्रह किया और मैं उनके आग्रह को मानकर माननीय ठाकुर जी से मिलने झण्डेवालान के कार्यालय में पहुंचा। वहां एक शुभ्र, सौम्य, सुशील, धीर, गम्भीर, व्यक्तित्व के धनी ठाकुर जी का दर्शन हुआ।

इसी दर्शन में मेरी चर्चा इतिहास के विषय में हुई, उनका पहला प्रश्न था, इतिहास किसे कहते हैं? मैंने वेद विषयक इतिहास का लक्षण ... ''सत्यवृत्तमितिहास: समयस्थलासापेक्ष:'' इतिहास सत्य घटना का वृतान्त होता है, जो स्थान तथा समय के परिप्रेक्ष्य में घटित होता हुआ होता है। अत: इतिहास का निर्वचन 'इति-ह-आस' ऐसा किया गया है। जिसका अर्थ है ''ऐसा यहां हुआ था।'' तभी पुराण का लक्षण इस प्रकार किया गया है –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम्।।

सर्ग सृष्टि को कहते हैं, प्रतिसर्ग प्रलय कहलाता है। इस सृष्टि में उत्पन्न अनेक प्रकार के वंश, उसके काल तथा उन वंशों में उत्पन्न प्रजाओं के चारित पुराण कहलाते हैं। तभी पुराण का निर्वचन ''पुरानवम् इतिपुराणाम्'' कोई घटना घटते समय नयी होती है, कालान्तर में वह पुरानी हो जाती है। यही पुरानी घटना इतिहास कहलाती है।

मेरे इस उत्तर को सुनकर उन्होंने पुन: पूछा क्या आधुनिक इतिहास पढ़ा है? मैंने कहा हाई स्कूल तक। ''तभी आपने इतने सटीक उत्तर दिया है'' ऐसा ठाकुर जी ने कहा।

कुछ दिनों के बाद दिल्ली प्रदेश के परिसंवाद संगोष्ठी में 'कालतत्व' चर्चा का विषय रखा गया। उसमें ठाकुर जी का उद्‌बोधन इतना प्रभावशाली रहा कि मैं उनके काल विषयक चिन्तन तथा तथ्यपरक सूचना प्राप्त कर धन्य हो गया। जिन तथ्यों को मैं लिखकर लाया था, तथा उन्हें पत्रवाचन में उपयोग करना था, उनसे कई गुणा विस्तृत जानकारी ठाकुर जी ने मौखिक दी। अथर्ववेद के कालसूक्त के सारे अभिप्रायों को अपनी सहज भाषाा में अभिव्यक्त ही नहीं किया, अपितु स्मृतियों, पुराणों में आये हुए वर्णनों का सविस्तार प्रतिष्ठापन किया, 'एको कालो वहति अश्वनामा' इन मन्त्रों में वर्णित विषयों को बड़ी सहजता से प्रतिनिधियों के सम्मुख रखा। एक ही मूल का तत्त्व उस विश्व का कारण है, व्यक्त होकर कालपुरुष इस विश्व के नकारात्मक स्वरूपों को धारण करता है और भव्यस्वरूप में इनको विलीन करता है। इस प्रकार व्यक्त काल जहां उपादान के साथ-साथ निमित है, वहीं अव्यक्त काल जगत का शुद्ध निमित कारण है। काल संख्या ने धातु से बना काल शब्द अपने गत्यात्मक स्वरूप के कारण विश्व सृष्टि का अधिष्ठाता बनता है और 'कालो लोकस्य कारणम्'।

निर्विशेषतात्मक अव्यक्तकाल में स्थित चेतना तत्व 'एकोऽहमं बहुस्याम' की भावना से प्रेरित होकर अपने अंश विशेष को सीमित कर अव्यय पुरुष को जन्म देता है। इस प्रकार अव्यक्त काल निर्विशेष से परात्पर, परात्पर से अव्यय, अव्यय से अक्षर और अक्षर से क्षर जगत की सृष्टि होती है। क्षर की पांच कलाएं होती हैं जिन्हें क्रमश: प्राण, अप्, वाक्, अन्न और अन्नाद कहते हैं। इन्हीं पांच कलाओं से पांच लोक और सात व्याहृर्तियों की संसृष्टि होती है। इस प्रकार एक नित्य और विभ् काल अनन्त रूपों में अभिव्यक्त हो जाता है।

संगठन पद्धति

इसी तरह इतिहास संकलन योजना का विस्तार तथा संगठनात्मक स्वरूप, विभाग, नगर, जिला आदि में प्रान्त को बांटकर प्रत्येक जिले के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, संगठनमंत्री, संयोजक तथा सामान्य सदस्यों को साथ जोड़कर ठाकुर

जी पूरे राज्य का एक विशाल संगठन तैयार करते थे। उसमें लेखक प्रमुख आदि पद के द्वारा विद्वज्जनों का संग्रह करते थे। मैं स्वयं पश्चिम मण्डल का अध्यक्ष, पुन: प्रदेश के नेहरू विश्वविद्यालय का अध्यक्ष रहा था। फिर बाबा साहब आपटे स्मारक समिति दिल्ली प्रदेश के विद्वत प्रमुख का उत्तरदायित्व दिया और 'इतिहास दर्पण' के सम्पादक मण्डल में भी रखा। वर्षभर का विषय का निर्धारण किया जाता था, तथा उस विषय पर 'इतिहास दिवस' के नाम से विशेष परिचर्चा की जाती थी, उन परिचर्चाओं में स्वयं विषय का उपस्थापन कर उसके सिद्धान्त पक्ष पर प्रकाश डाला करते थे। ऐसा केवल दिल्ली में नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में घूम-घूम कर प्रत्येक प्रान्त में संगठन को खड़ा किया था। एक बार की बात है कि ठाकुर जी ने उस वर्ष का विषय रखा, 'इतिहास का विकृतिकरण'। मुझे यह विषय समझ नहीं आया। मैंने उनसे इस सम्बन्ध में जिज्ञासा प्रकट की ''कल मुझसे मिलने झण्डेवालान आओ'', मैं जब उनसे मिलने पहुंचा तो वे इन्तजार कर रहे थे और मेरे साथ बैठकर एक घण्टे तक चर्चा की।

उस चर्चा में उन्होंने कहा कि हमारा इतिहास १९७ करोड़ वर्षों का है और अंग्रेजों ने जो इतिहास लिखा है वह मात्र दो हजार वर्षों का है। अंग्रेज ईसा से पूर्व के इतिहास में झांक भी नहीं पाये और बाद का इतिहास उन्होंने अपने राज्य को सुस्थिर करने की दृष्टि से लिखा है। कहीं भी तथ्यपरक इतिहास अंग्रेजों ने नहीं लिखा है, उदाहरण के लिए उन्होंने इतिहास का प्रारम्भ मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की संस्कृति से प्रारम्भ किया है। जबकि हमारा इतिहास इस विश्व की सृष्टि से प्रारम्भ होता है। हमारा आदि पुरुष ब्रह्मा है बन्दर, नहीं। भारत का स्वरूप अंग्रेजों के मत में मात्र आज के स्वरूप तक सीमित था परन्तु हमारे अखण्ड भारत में स्याम, वर्मा, मंगोलिया, इण्डोनेशिया, मलेशिया, वालीद्वीप, श्रीलंका, ईरान, अफगानिस्तान तिब्बत आदि सभी देश आ जाते हैं। इन देशों की संस्कृति सम्भवत: धर्म, दर्शन, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था आदि सभी हमारे इतिहास के विषय हैं। मूल के परित्याग से समस्त इतिहास आधारहीन हो जाता है। भारतीय जनता को समझने के लिए वेद, पुराण, गीता, उपनिषद्, रामायण और महाभारत को समझना परमावश्यक है। इसके बिना भारत के इतिहास को समझना संभव नहीं है।

सिकन्दर को लेकर एक परिसंवाद का आयोजन नेरी, हमीरपुर में किया गया। इस सम्वाद से पूर्व प्राय: सभी इतिहासकारों ने सिकन्दर को भारत का विजेता माना है। परन्तु उस परिसंवाद में यह तथ्य प्रकट हुआ कि सिकन्दर विजेता नहीं अपितु यहां त्रिगर्त क्षेत्र में न केवल हारा अपितु मारा भी गया। यह तथ्य उसके सेनापति की डायरी से ज्ञात होता है। जिसमें उसने लिखा है यह युद्ध और यात्रा हमारे लिये मनहूस सिद्ध हुए। हम

दोबारा लौट कर आयेंगे। तब इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त करेंगे। सिकन्दर के मृतशरीर को लेकर उसका सेनापति उस रास्ते से लौटा, जिस से वह आया नहीं था, ताकि उसे कोई पहचाने नहीं और यूनान पहुंच कर सिकन्दर को मृत घोषित कर दिया।

इन सारे रहस्यों को ठाकुर जी ने अपने परिसंवाद में उद्घाटित किया। अभी तक इतिहासकारों ने लिखा है कि आर्य भारत में बाहर से आये थे। इस तथ्य को सभी आंख मूंदकर मानते चले आ रहे थे। ठाकुर जी के नेतृत्व में एक बड़ा आन्दोलन इतिहास संकलन योजना के द्वारा चलाया गया, जिसके परिणामस्वरूप आज सभी चुप हैं, जो भारत में बाहर से आर्य आये, यह माना करते थे। इतिहासकारों के अनुसार वेद आर्यों की सबसे प्रारम्भिक रचना थी, जो भारत आने पर रची गई थी, परन्तु उसमें कहीं भी चर्चा ऐसी नहीं थी। भारत आने से पूर्व स्थान या वस्तु विशेष की चर्चा वेदों में नहीं है, अपितु भारतीय, नदी, पर्वत, तीर्थस्थान, पशु तथा उत्पादों की चर्चा यत्र तत्र मिल जाती है। जिनसे प्रमाणित होता है कि आर्य भारत से बाहर विभिन्न देशों में गये। फलत: भारत की गंगा, गो, गीता, ज्ञान (वेद), गुरु (ऋषि) आज भी भारत से बाहर उसी प्रकार आदरणीय बने, जैसे पूर्व में भारत में आदरणीय थे। गंगा, यमुना, विपाशा, (व्यास), शतद्रु (सतलुज), ईरावती (चनाव), झेलम आदि नदियों का वर्णन वेदों में बड़े आदर के साथ किया गया है। वेदों में वर्णित आश्रम व्यवस्था जातिव्यवस्था, धर्म, यज्ञ, संस्कृति, श्राद्ध, आत्मा आदि आज भी भारत में उसी प्रकार जीवित हैं परन्तु विदेशों में नामों निशान नहीं है। यहां तक कि आर्यों की भाषा (संस्कृत) भारत में आज भी वैदिक काल से जीवित है। ठीक इसके विपरीत भारत आर्य संस्कृति का प्रभाव सुदूर देशों में देखने को मिलता है। प्राचीनतम काल में भारत से ही ब्राह्मण विद्वान विदेशों में जाकर भारतीय धर्म दर्शन का प्रचार-प्रसार कर उसे सुसंस्कृत बनाया करते थे जैसा कि स्वयं मनु ने मनुस्मृति में कहा है—

एतद्देशप्रसूतस्य साकाशादग्रजन्मन:
स्वं सवं चरित्रं शिक्षेरम् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

फलत: आज आर्य भारत में बाहर से आये, ऐसा मानने वाले मौन हो गये हैं।

सब बातों में महान

प्रो. बलराज मधोक
इतिहासकार
394–जे, राजेन्द्र नगर
दिल्ली–60

ठाकुर जी मेरे बड़े भाई थे। बेशक मैंने उन्हें संघ की शाखा में जोड़ा था, परन्तु वे सब बातों में महान थे। कॉलेज में पढ़े। मुझे हाकी में रुचि थी, ठाकुर साहब को भी हाकी में रुचि थी। ठाकुर साहब इतिहास में रुचि रखते थे, मैं इतिहास में रुचि रखता था। मैं स्वयंसेवक बना, ठाकुर साहब भी स्वयंसेवक बने। यह मित्रता इतनी प्रगाढ़ होती गई कि यह अन्त तक पक्की रही। एक बार राम सिंह जी हमारे घर पर आए। हमने उन्हें मूली खाने को दी। उस मूली को वह कई बार याद दिलाते थे। बलराज तूने मूली खिलाकर मुझे स्वयंसेवक बना दिया। वे शाखा का काम बड़ी तन्मयता से करते थे। उस समय कॉलेज के अन्दर विद्यार्थियों में यह चर्चा चलती थी कि जब देश आजाद हो जाएगा, तो देश में किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। ठाकुर साहब इस प्रकार की व्यावहारिक बहसों में हिस्सा लिया करते थे। देश की आजादी के लिए जिस प्रकार का कार्य ठाकुर जी जैसे महान् व्यक्तित्व ने किया, सब प्रकार की इच्छाओं से दूर रहकर राष्ट्र कार्यों के लिए अपने जीवन का सर्वस्व समर्पित कर दिया था।

देखते ही पूछा क्या हुआ ?

जितेन्द्र कुमार
प्रान्त विद्यार्थी प्रमुख
गुप्त गंगा, कांगड़ा, हि.प्र.

सन् २००५ में नंगल में हिमाचल प्रांत का संघ शिक्षा वर्ग लगा था। हर वर्ष की भांति संघ शिक्षा वर्ग के बाद प्रांत बैठक हुई। मुझे कांगड़ा योजना कांगड़ा विभाग प्रचारक का दायित्व दिया गया। २५ जून, २००५ को मैं कांगड़ा आ गया। ठाकुर जी से पुराना परिचय था। हमीरपुर कार्यालय में उद्घाटन का अवसर था। ठाकुर जी से राम-राम हुई तो उन्होंने वहीं पास एक कुर्सी पर बैठकर त्रिगर्त अभ्युदय पर चर्चा की तथा मुझे कांगड़ा विभाग से २-३ संस्कृत के विद्वान स्वयंसेवकों को तलाशने का काम सौंपा।

उसके बाद जब भी कहीं आमना-सामना होता तो ठाकुर जी तुरन्त मुझे सौंपे गए काम के बारे में पूछते थे। मैंने इस काम के लिए मनु त्रिवेदी जी को धर्मशाला के दो-तीन कार्यकर्त्ताओं को जोड़ने की बात की। ठाकुर जी को जब मैंने यह बताया तो ठाकुर जी इस काम से प्रसन्न हो गए। इसके साथ ही ठाकुर जी ने एक और नया काम बता दिया। वह काम त्रिगर्त अभ्युदय परिषद् के लिए कांगड़ा विभाग में कार्यकत्ताओं को जोड़ना तथा उनकी छोटी-छोटी गोष्ठियां करना। पहले तो मुझे यह काम थोड़ा कठिन लगा परन्तु प्रान्त के विद्यार्थी प्रमुख का दायित्व आने के बाद मैंने इस विषय को कॉलेज विद्यार्थियों, आईटीआई तथा एनआईटी के विद्यार्थियों के बीच रखा। इस नाम से कुछ गोष्ठियां भी प्रारम्भ कर दीं। ठाकुर जी ने मुझे अभ्युदय परिषद् का संविधान भी दिया।

अभ्युदय परिषद् का प्रथम कार्यक्रम १८ अप्रैल, २०१० को हमीरपुर में सम्पन्न हुआ। उस कार्यक्रम में कांगड़ा से भी मैं कार्यकर्त्ता लाया था। कार्यक्रम की भव्यता और सफलता से साथ आए हुए कार्यकर्त्ताओं में उत्साह आया। इससे कार्य करने में और आसानी हो गई।

हिमाचल प्रदेश के इतिहास लेखन के लिए कहा

डॉ. हिमेन्द्र बाली "हिम"
शिमला, हि.प्र.

इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह जी से मेरा प्रथम परिचय ठाकुर (डॉ.) विद्याचन्द जी ने शिमला में करवाया था। शिमला के बचत भवन में उस दिन यानि ई. सन् २००० में हिमाचल इतिहास संकलन समिति की बैठक होनी थी। उन दिनों मैं मण्डी जिले के पांगणा में सेवारत था। वहां मैं सुकेत संस्कृति साहित्य एवम् जन कल्याण मंच का अध्यक्ष था। इसी मंच के तत्वावधान में स्थानीय संस्कृतिवेता डॉ. जगदीश शर्मा जी के सहयोग से सुकेत संग्राहिका, पुस्तक का सम्पादन सम्पन्न हुआ था। पुस्तक की एक प्रति मैंने डॉ. विद्याचन्द ठाकुर जी को भेंट की थी। उसी पुस्तक की एक प्रति उस दिन बचत भवन में बैठक के उपरान्त ठाकुर राम सिंह जी को भेंट की थी। डॉ. विद्याचन्द जी ने ठाकुर जी को मेरे विषय में विस्तृत जानकारी दी थी।

उसके उपरान्त ५ जून, २००० ई. को माननीय ठाकुर जी का प्रशस्तिपूर्ण पत्र मुझे मिला। जिसमें सुकेत संग्राहिका के सम्पादन पर मुझे साधुवाद प्रदान किया था। साथ ही इस उद्यम को विस्तार देकर हिमाचल के इतिहास लेखक की दिशा में सार्थक और हार्दिक प्रयासों का आह्वान पत्र में सन्निहित था। इतने स्नेहिल शब्दों से सुसज्जित पत्र पढ़ कर मुझमें नई प्रेरणा का प्रबल स्फुरण हुआ था।

महाभारत पर पी.एच.डी. करने को कहा

डॉ. हेमेन्द्र राजपूत
प्रवक्ता
4 सी/37, वार्तालोक
वसुन्धरा, गाजियाबाद, उ.प्र. 201012

श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी के निधन के विषय में मुझे १० सितम्बर को जानकारी मिली मा. प्रेम कुमार जी द्वारा। मैंने उनको भी कहा कि आपने मुझे बहुत देर से सूचना दी और जब आप गए थे तो मैं भी उनके अन्तिम दर्शन करने अवश्य जाता। आपने भी मुझे दूरभाष से सूचना नहीं दी और न इतिहास संकलन समिति दिल्ली की ओर से किसी ने सूचना दी। जबकि आप सब जानते थे कि उनके साथ मेरे कैसे सम्बन्ध थे, आप सब ने मुझे इस अवसर पर भुला दिया। मुझे कितना दु:ख हुआ आप कल्पना भी नहीं कर सकते। मुझे लुधियाना अस्पताल की भी सूचना नहीं मिली, आपसे ही फोन पर बातचीत हुई तब तक वे कुल्लू जा चुके थे। यह दर्द मुझे जिन्दगी भर बना रहेगा, मैं उनसे मिल नहीं सका। जब वह झण्डेवालान, कार्यालय में होते तब उन्हें मेरी बीमारी के विषय में पता लगा तो तुरन्त गाड़ी करके वसुन्धरा मेरे निवास पर ही मिलने आये। एक बार ''महाभारत कालीन भारत'' पुस्तक लिखने के विषय में बातचीत करने आये थे। घर पर जब आये तब भोजन करने के बाद उन्होंने विश्राम नहीं किया, मैंने उनसे आग्रह भी किया, आप विश्राम कर लें। फिर 'महाभारत' पर चर्चा करेंगे। किन्तु उन्होंने विश्राम नहीं किया और लगभग तीन घण्टों तक लगातार इस पुस्तक के विषय में ही चर्चा करते गये। उन्होंने कहा –

''मै चाहता हूँ कि 'महाभारतकालीन भारत' पुस्तक आप ही लिखो, क्योंकि आपने इस विषय पर पी.एच.डी. किया है। यह पुस्तक भित्तिमूलक पुस्तक होगी। वैदिक काल से महाभरत काल तक के इतिहास और महभारत काल से आधुनिक काल तक के इतिहास को जोड़ने वाले काल की यह पुस्तक हमारे इतिहास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।''

मैं उनकी बात सुनता गया और लिखता गया क्योंकि इतनी बातें याद रखना सम्भव नहीं था। मेरी पत्नी भी साथ में बैठी थी। बीच-बीच में उनसे भी कहते कि आप भी हेमेन्द्र की लिखने में सहायता करना, बड़ा काम है।''

उनके मन और चिन्तन को मैंने बहुत नजदीक से देखा और समझा। सत्य इतिहास को उजागर करना और उसे लेखबद्ध करने की दृढ़ता और उसके लिए प्रेरित करना। मैंने इतनी लग्न, संकल्प और दृढ़ता किसी में नहीं देखी जितनी उनमें थी। मुझे फोन करके झण्डेवालान केशव कुंज संघ कार्यालय में बुला लेते थे। मैं भी पूरा समय लेकर जाता था। मुझे ज्ञात था कि उनसे थोड़े समय में बातचीत पूरी नहीं हो सकेगी। वह ऊँचा सनते थे, मुझे जोर की आवाज में बोलना पड़ता था। एक बार तो मा. ज्योति जी ने मुझे

आकर टोक दिया वह उनके बराबर वाले कक्ष में थे, ''आप कम आवाज में बोला करो।'' फिर ठाकुर जी ने मुझसे पूछा कि ज्योति जी क्या कहकर चले गए। मैंने ठाकुर से वे शब्द नहीं कहे और बात बदलकर पूर्व चर्चा को आगे बढ़ाया। कम से कम तीन घण्टे का समय निकालकर मैं उनके पास जाता था। इतिहास विषय पर लम्बी चर्चा होती थी।

महाभारत के सात खण्डों का अध्ययन करने में मुझे लगभग चार वर्ष लगे। सन् १९९३ में अध्ययन के समय जो कुछ लिखा वह सब लेकर मैं उनसे फिर मिला। उन दिनों मैं विभाग सायं कार्यवाह था और दिल्ली में एक स्कूल में शिक्षक था। ठाकुर जी ने वह सब लिखित रूप अस्त-व्यस्त सामग्री देखी। तब उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय के प्रो. डॉ. के.पी. धुरन्धर जी के पास भेजा और उनके नाम से एक पत्र लिखकर दिया। धुरन्धर जी ने सब कुछ देखकर उस लिखित सामग्री को क्रमबद्ध कराया और शोध कार्य की रूपरेखा बनवाई तथा मेरठ विश्वविद्यालय में अपने एक शिष्य के पास भेजा। वह साम्यवादी विचारधारा के थे। उन्होंने उसमें आमूल चूल परिवर्तन करने को कहा किन्तु जो ठाकुर जी ने मार्गदर्शन में सुझाया था, मैंने उसमें परिवर्तन करने से मना कर दिया। फिर कई विश्व विद्यालयों में चक्कर लगाने के बाद गाजियाबाद के एमएमएच कॉलेज में भूगोल विभागाध्यक्ष डॉ. एन.के. अग्निहोत्री जी ने निदेशक बनना स्वीकार किया और ठाकुर जी ने जो निर्देश दिये थे उन पर ही शोध कार्य सम्पन्न कराया। चौ. चरणसिंह विश्व विद्यालय मेरठ से जब मुझे पी.एच.डी. की डिग्री ''महाभारत: प्रादेशिक भूगोल का एक अध्ययन'' विषय पर मिली तब मैं सीधे ठाकुर जी के पास झण्डेवालान गया। उन्हें शोध ग्रन्थ और डिग्री देखकर बहुत प्रसन्नता हुई और सबका मुंह मीठा कराया और उस दिन दिसम्बर १९९८ में उन्होंने सबको बताया कि हमारे एक स्वयंसेवक ने इतिहास संकलन योजना के अनुसार दिये निर्देश पर 'महाभारत' में पी.एच.डी. किया है। फिर ठाकुर जी ने प्रान्त प्रचारक प्रेम कुमार जी से कहकर विभाग सायं कार्यवाह रहते हुए इतिहास संकलन समिति दिल्ली प्रदेश से जोड़ लिया तथा दिल्ली प्रदेश का संगठन मन्त्री बनाया।

संगठन मन्त्री रहते हुए उन्होंने मुझे 'इतिहास' में एम.ए. करने को कहा और उनके आदेश को शिरोधार्य करते हुए सन् २००१ में चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ से ही एंश्यिंट हिस्ट्री (प्राचीन इतिहास) में एम.ए. किया। ठाकुर राम सिंह जी दिल्ली में मेरे लिए पिता तुल्य थे। जो वे कहते मैं करता जाता था और निराश भी होता था, किन्तु साहस बंधाकर रखते थे। मेरी कमर पर, कंधे पर दो चार हाथ मारते थे, कहते, ''अरे राजपूत होकर चिंता करता है चिन्ता न कर, सफलता मिलेगी।''

ठाकुर जी ने मुझसे अनेक शोध पत्र लिखवाये। शोध का विषय वह स्वयं देते थे। उनके द्वारा भेजे गये पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं जिनमें वह इतिहास विषय पर मुझे सुझाव और मार्गदर्शन तथा निर्देशन भेजते थे। उनके द्वारा दिये गये विषय जिन पर मैंने शोध पत्र लिखे और वे इतिहास दर्पण, घोषक, भरतीय धरोहर में प्रकाशित हुए।

चाक्षुष मन्वन्तर की जल-प्रलय आदि विषय। इन सब विषयों पर शोध पत्र

प्रकाशित हुए हैं। नेरी के शोध संस्थान में आने की भी वह सूचना भेजते थे। किन्तु मैं दो बार ही वहां उपस्थित हो सका। मुझसे और मेरी पत्नी से कहा करते थे कि रिटायरमैंट (अवकाश प्राप्ति) के बाद तुझे नेरी में ही रखूँगा। मैं हंसकर ही कह देता – ठाकुर जी आप तो लम्बी योजना बनाते हो मेरे अवकाश प्राप्ति के अभी ग्यारह साल हैं। तो क्या हुआ मैं अपने साथ रखूँगा वहां तुम्हें।

मैं मन ही मन सोचता और अपनी पत्नी से कहता, ठाकुर जी ऐसा कह रहे हैं, परन्तु सोचिए, ठाकुर जी अपने आपको ९५ वर्ष का युवा समझ रहे हैं, ग्यारह साल के बाद मैं नेरी में अपने साथ शोध संस्थान में रखूंगा।

मैं भगवान से शुभ कामना करता कि भगवान उन्हें मेरे अवकाश प्राप्ति तक तो युवा बनाकर रखें तब वह १०६ या १०७ वर्ष के युवा होंगे और हमें प्रेरणा देते रहेंगे, हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। किन्तु मैंने स्वप्न में भी ऐसा नहीं देखा कि एक वर्ष बाद ही वह हमें छोड़कर चले जायेंगे। अभी लगभग एक वर्ष पहले ही वह हमारे घर पर आये। उन्होंने मुझे नेरी शोध संस्थान में ही कह दिया था, कि आपने महाभारत शोध ग्रन्थ को आधार मानकर ''महाभारत कालीन भारत'' पुस्तक लिखो उसका अंग्रेजी अनुवाद डॉ. नारायण सिंह राव करेंगे। पहले हिन्दी में तुम स्वयं उसको तैयार करो। मैंने पुस्तक तैयार करके उन्हें दिखाई। उन्होंने झण्डेवालान कार्यालय में रखी और अध्यापन किया। उन्होंने विस्तृत रूप में उसे पढ़ा और अलग पृष्ठ पर संशोधन के लिए लिखा कि अमुक पृष्ठ पर यह संशोधन करना है। फिर मैंने उनके संशोधन किये निर्देशानुसार उन्हें लिखकर वह सब सामग्री लगभग ४५० पृष्ठों की, दी। वह बड़े प्रसन्न हुए कि पुस्तक का यह कार्य भी हो गया अब केवल इसका प्रकाशन करना है। प्रकाशन के लिए उन्होंने वह सब पृष्ठ ''महाभारत कालीन भारत'' नाम से श्री कृष्णानंद सागर (नोएडा) जी को दे दिये। प्रकाशन में विलम्ब हो देखते हुए कई बार ठाकुर जी ने मुझसे कहा था कि जब यह पुस्तक प्रकाशित हो जायेगी तब पूज्य सर संघ चालक मा. मोहनराव जी भागवत से नेरी में इसका विमोचन करायेंगे। ठाकुर जी अपने मन में बड़ी लम्बी योजना बनाकर रखते थे। ऐसा नहीं कि वह केवल इतिहास विषय पर ही चर्चा करते थे। एक बार झण्डेवालान कार्यालय में अपने कक्ष के बाहर खड़े थे। मैं किसी काम से प्रेम कुमार जी से मिलने जा रहा था, ऊपर से ही मुझे देखा और बोले – ''हेमेन्द्र राजपूत ऊपर आकर मुझसे मिलकर जाना।'' मैं कुछ देर बाद उनके पास गया तब उन्होंने सेब काटकर रखे थे, पहले सेब खिलाया। फिर चर्चा शुरू हुई। मैं उस दिन इस विचार से नहीं गया था कि ठाकुर जी से मिलना है, कुछ जल्दी में भी था, किन्तु ठाकुर जी के सामने से उठना भी मश्किल काम था। आगे जिनसे मिलना था उन्हें फोन से मना कर दिया। चर्चा चलती रही ऐतिहासिक चर्चा के बाद किसी बात को लेकर राजनीतिक चर्चा करने लगे, वह चर्चा थी ऐतिहासिक संदर्भ में ही। पूज्य सरसंघचालक मा. बाला साहेब देवरस जी के समय की वार्ता थी। उन दिनों राजनीतिक समन्वय का कार्य मा. भाऊराव देवरस देख रहे थे। संघ द्वारा प्रस्तावित विषय

''गौरक्षा'' पर कानून बनना चाहिये। यह विषय भाजपा को उठाने के लिए कहा गया। किन्तु भाजपा विलम्ब करती रही। संघ की ओर से ठाकुर रामसिंह जी एवं भाऊराव जी इस विषय पर एक टूक वार्ता करने अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी से मिलने गये। साथ में एक कार्यकर्ता और भी थे। आडवाणी जी और अटल जी भाजपा का नफा-नुकसान गिनाने लगे। इस बात को लेकर ठाकुर जी को क्रोध हुआ। उन्होंने भाऊराव जी के साथ होते हुए सीधे उनसे कहा –''संघ के स्वयंसेवक के नाते राजनीति में आप लोग हैं। संसद में गौरक्षा पर कानून बने और इसके लिए संसद में यह विषय उठाने के लिए भाजपा है। आप हमें क्या लाभ होगा और क्या हानि होगी, यह गिनाते हुए इस राष्ट्रीय विषय पर टालमटोल मत कीजिए। इस विषय को आप लोग संसद में नहीं रखेगे, तो क्या कांग्रेस अथवा मुस्लिम लीग रखेगी।'' ठाकुर रामसिंह जी की दृढ़ता को देखते हुए उन्होंने (भाजपा ने) कुछ थोड़ा समय और मांगा। उस समय वार्ता में से कोई निष्कर्ष नही निकल पाया। वार्ता का सार पूज्य सरसंघचालक मा. बाला साहेब देवरस को बताना था। तब ठाकुर राम सिंह जी ही पूज्य सरसंघचालक जी से मिलने गये और उनमें जो वार्ता हुई, वह सब उसी प्रकार उन शब्दों में ही रख दी। ठाकुर जी की विषय के प्रति गम्भीरता और दृढ़ता का भाव देखते हुए पूज्य सरसंघचालक जी ने अगले दिन ही अटल जी और आडवाणी जी को बुलाकर उनकी जिम्मेदारी का और गौरक्षा कानून बनना राष्ट्र के लिए कितना आवश्यक है, इसका अहसास कराया।

ठाकुर रामसिंह जी की राष्ट्रीय विषयों के प्रति व्यावहारिक दृढ़ता थी। जब उन्होंने यह ठान लिया कि अमुक राष्ट्रीय विषय पूर्ण करना है, तब उसे पूर्ण करके ही मानते थे। उन्होंने भारतीय इतिहास का गूढ़ार्थक अध्ययन किया और कहा कि भारत का १९७ करोड़ वर्षों का इतिहास है। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने कितना तप किया, हम सभी जानते हैं। कितने इतिहासज्ञ इस बात से सहमत नहीं हुए, उन्होंने ठाकुर जी के साथ काम करना बन्द कर दिया। किन्तु वह रूके नहीं, सत्यपथ पर ''ऐकला चलो रे'' के आधार पर वह चलते गये और विद्वान उनके साथ जुड़ते गये। नेरी शोध संस्थान का निर्माण उनकी दृढ़ता, अपने ऐतिहासिक विचार के प्रति पूर्ण विश्वास का ही परिचायक है। नेरी शोध संस्थान का निर्माण हो चुका था, तब मैं एक गोष्ठी में नेरी गया। सत्र समाप्त होने पर वह दोनों भवनों के बीच खड़े होकर मुझसे कहने लगे, ''राजपूत! यह स्थान कैसा लगा? १९७ करोड़ वर्षों का अपना इतिहास अनुसंधान करके यहां लिखा जाएगा, यहां इतना बड़ा पुस्तकालय होगा कि शोधकर्ता को यहां से बाहर न जाना पड़े, उसके अनुरूप सारी सामग्री यहां उन्हें मिल सकेगी।'' जब मैं दिल्ली प्रदेश इतिहास संकलन योजना की समिति का संगठन मंत्री था तब उन्होंने जो बैठकें ली, उनमें एक प्रमुख बात होती थी संगठन की। प्रत्येक जिला स्तर पर इतिहास संकलन योजना इकाई खड़ी होनी चाहिये। वह कहते थे बिना कार्यकर्ताओं के लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता। जिला स्तर तक कार्यकर्ताओं की टीम बननी चाहिये और उसमें कुछ इतिहास लिखने वाले विद्वानों को जोड़ना होगा जो उस जिले का इतिहास

लिखेगे। भारत के प्रत्येक जिले का इतिहास लिखा जाना चाहिये। सत्य इतिहास लिखने वाले विद्वानों को अपने साथ जोड़कर उनकी गोष्ठियां करते रहना होगा।'' मैंने ठाकुर जी से प्रश्न किया था, ''आज के दूरसंचार प्रचार मामलों में क्या हम पीछे नहीं रह जायेंगे?'' जबकि दूसरे लोग और वामपंथी लोग इन साधनों का प्रयोग करके अपने थोड़े से कार्य को पूरे देश में प्रदर्शित कर लेते हैं। हम उनकी अपेक्षा बहुत पीछे नही रह जायेंगे। उन्होंने कहा, ''ऐसा नहीं सोचो, मजबूत आधार पर भवन निर्माण स्थायी होता है, ऐसी मान्यता तो हमारी नहीं है कि हम इन साधनों को नहीं अपनायेंगे किन्तु पहले-पहले इनके पीछे नहीं पड़ेंगे। अपने आधार को मजबूत करते हुए कार्यकर्ता निर्माण करना और उनके द्वारा विद्वानों को जोड़ना प्राथमिकता है। उन विद्वानों में से ही ऐसे मिलेंगे जो हमारा ऐतिहासिक संस्कार लेकर स्वयं प्रेरणा से और संगठन की योजना से दूरदर्शन जैसे संचार-प्रसारण के माध्यम से अपने इतिहास का प्रचार करेंगे। अभी भी मना तो नहीं किया, केवल इतना कहा है कि मूल काम छोड़कर ऐसा नहीं करेंगे। बीच में रुककर बोले आपने भी तो महाभारत कालीन स्थलों की जानकारी और प्रदर्शन दूरदर्शन पर किया था। हमसे या संगठन से पूछकर तो नहीं किया था, स्वयं प्रेरणा से किया था। पहले अपने पास उस प्रकार की अकाट्य सामग्री और प्रदर्शन करने वाले योग्य खोजी कार्यकर्ता तो हों, वे दृढ़ नहीं हुए तो दूरदर्शन जैसे स्थानों पर बहक सकते हैं, फिसल सकते हैं। सत्य सिद्ध बात न रहकर कुछ और बोलेंगे। इसलिए आधार मजबूत करने का मेरा विशेष आग्रह रहता है।'' उस दिन ठाकुर जी ने बड़े प्यार से मुझे मेरी जिज्ञासा को देखते हुए समझाया।

मैं बाद में चिन्तन करता रहा व्यक्ति निर्माण की जो पद्धति प.पू.डॉ. हेडगेबार जी ने दी, ठाकुर जी उसी रीति-नीति से इतिहास संकलन का काम करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, उनका विश्वास डगमगा नहीं सकता।

आत्मीयता एवं कार्यनिष्ठा

कुलभूषण गुप्ता
ई.35, अमर कालोनी,
लाजपत नगर, नई दिल्ली–24

मेरा ठाकुर जी से अधिक निकटता का सम्बन्ध तब आया जब मैं आज्ञानुसार सेवानिवृत्त होकर उनके सान्निध्य मे श्री बाबा साहेब आप्टे स्मारक समिति में ९/९/१९९० को कार्य करने हेतु गया। तीन मास बीत जाने के बाद १२ दिसम्बर, १९९० की रात को मान्य ठाकुर जी ने कहा कि आज झण्डेवाला में ही ठहरना है, जाओ श्री भोला नाथ जी से रजाई लेकर अतिथि गृह में विश्राम करें। मैं भी भोला नाथ जी के पास गया तो देखा वह अपने कमरे में सो रहे थे। मैंने सोचा उन्हें जगाना उचित नहीं है। मैं अतिथि गृह में सोने के लिए चला गया। रात के १२ बजे का समय था जब मेरे ऊपर स्वगीय ठाकुर जी रजाई डाल कर चले गये। सर्दी काफी थी, नींद नहीं आ रही थी। उसके बाद मुझे नींद आ गई। इस आत्मीयता पूर्ण कृति को मैं आज तक नहीं भूला।

कार्य की चिंता

मुझे याद है कि एक बार महिला प्रमुख श्रीमती कल्पना गर्ग ने घिटोरनी में अपने निवास पर कुछ महिलाओं की बैठक रखी हुई थी। एक महिला अपनी कार में ठाकुर जी को बैठक में ले जाने के लिए झण्डेवाला कार्यालय में आई। दुर्भाग्यवश उस दिन बहुत वर्षों से कार्य में तल्लीन प्रचारक माननीय भैया जी कस्तूरे दत्तात्रे का देहान्त हो गया था। मान्य ठाकुर जी ने मुझे कहा कि चलो बैठक में चलें। मैंने सोचा कि जाना उचित नहीं है।

उस समय प्रान्त के प्रान्त कार्यवाह डा. सुरेश चन्द्र वाजपेयी जी थे और हमारी समिति के अध्यक्ष भी थे। उन से पूछा तो मना कर दिया। उन्होंने कहा कि हमारी यह परम्परा है कि झण्डेवाला कार्यालय में जब किसी प्रचारक की मृत्यु हो जाती है, तब सब कार्यक्रम स्थगित कर दिये जाते हैं। अत: आज नहीं जाना चाहिए। मैंने मान्य ठाकुर जी को यही बात बता दी। जो महिला उन्हें लेने के लिए आई थी उसे यह घटना बता दी पर यह भी कहा कि यहीं पर थोड़ी देर प्रतीक्षा करें। वह महिला झण्डेवाला कार्यालय में रूकी रहीं। आधे घण्टे बाद यह तय हुआ कि मान्य कस्तूरे जी का संस्कार तो अगले दिन होगा, अत: मुझे मान्य ठाकुर जी ने कहा कि चलो बैठक में चलें। मैंने फिर मान्य सुरेश चन्द्र वाजपेयी जी से परामर्श लेना उचित समझा। उन्होंने फिर यही कहा कि संस्कार होने तक नहीं जाना चाहिए। मैंने उन्हें कह दिया कि मान्य ठाकुर जी का कहना है कि संस्कार तो कल होगा, अत: जाना ही ठीक है। मान्य ठाकुर जी को मैं बैठक में ले गया। अपने एक बार तय कर लिया तो वह होना ही चाहिए। इस प्रकार की कार्यनिष्ठा पिछले २० वर्षों से मैं देखता आया हूँ।

ठाकुर जी से २८/०८/२०१० तथा ३०/०८/२०१० को दूरभाष पर बातचीत हुई। मुझे उन्होंने कहा कि १०/०९/२०१० को वह लुधियाना मैडिकल कॉलेज में चैकअप के लिए जा रहे हैं। वहां से वह नेरी जाकर फिर दिल्ली आयेंगे। नियति का कोई पता नहीं होता, वह दिल्ली आने से पहले ही उनकी आत्मा भगवान के चरणों में वास करेगी।